इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन संरक्षिणी सभा जवाहरगंज जबलपुर के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को मध्यप्रदेश डाक परिमण्डल भारतीय डाक विभाग के परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रूपये में जारी किया गया।

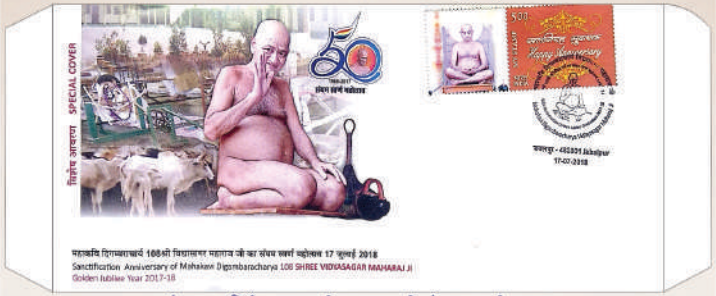

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		जुलाई 2021	
16	शुक्रवार	सप्तमी	हस्त
17	शनिवार	अष्टमी	चित्रा
18	रविवार	नवमी	स्वाती
19	सोमवार	दशमी	विशाखा
20	मंगलवार	एकादशी	अनुराधा
21	बुधवार	द्वादशी	ज्येष्ठा
22	गुरुवार	त्रयोदशी	मूल
23	शुक्रवार	चतुर्दशी	पूर्वाषाढ़
24	शनिवार	पूर्णिमा/प्रतिपदा	उत्तराषाढ़
25	रविवार	द्वितीया	श्रवण
26	सोमवार	तृतीया	धनिष्ठा
27	मंगलवार	चतुर्थी	शतभिषा
28	बुधवार	पंचमी	पूर्वाभाद्रपद
29	गुरुवार	षष्ठी	उत्तराभाद्रपद
30	शुक्रवार	सप्तमी	रेवती
31	शनिवार	अष्टमी	अश्विनी
		अगस्त 2021	
1	रविवार	अष्टमी	भरणी
2	सोमवार	नवमी	कृत्तिका
3	मंगलवार	दशमी	रोहिणी
4	बुधवार	एकादशी	मृगशिरा
5	गुरुवार	द्वादशी	आर्द्रा दि./रा.
6	शुक्रवार	त्रयोदशी	आर्द्रा
7	शनिवार	चतुर्दशी	पुनर्वसु
8	रविवार	अमावस	पुष्य
9	सोमवार	प्रतिपदा	आश्लेषा
10	मंगलवार	द्वितीया	मघा
11	बुधवार	तृतीया	पूर्वाफाल्गुनी
12	गुरुवार	चतुर्थी	उत्तराफाल्गुनी
13	शुक्रवार	पंचमी	हस्त
14	शनिवार	षष्ठी	चित्रा-स्वाती
15	रविवार	सप्तमी/अष्टमी	विशाखा

तीर्थंकर कल्याणक

16 जुलाई : भगवान नेमिनाथ मोक्ष कल्याणक
25 जुलाई : भगवान मुनिसुव्रतनाथ गर्भ कल्याणक
03 अगस्त : भगवान कुन्थुनाथ गर्भ कल्याणक
10 अगस्त : भगवान सुमतिनाथ गर्भ कल्याणक
14 अगस्त : भगवान नेमिनाथ जन्म-तप कल्याणक
15 अगस्त : भगवान पार्श्वनाथ मोक्ष कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

16 जुलाई : णमोकार पैंतीसी व्रत प्रारंभ
17 जुलाई : अष्टान्हिका व्रत प्रारंभ
18 जुलाई : रवि प्रत प्रारंभ
23 जुलाई : चातुर्मास कलश स्थापना, कर्मनिर्जरा व्रत
24 जुलाई : अष्टान्हिका व्रत पूर्ण, वीरशासन जयंती
25 जुलाई : रत्नावली, एकावली, द्विकावली, रवि व्रत
01 अगस्तः रविव्रत
03 अगस्तः रोहिणी व्रत
08 अगस्तः रवि व्रत
09 अगस्तः सप्त परम स्थान व्रत प्रारंभ
15 अगस्तः रविव्रत , मोक्ष सप्तमी

सर्वार्थ सिद्धि

17 जुलाई : 25/33 बजे से 29/56 बजे तक ।
19 जुलाई : 22/27 बजे से 29/57 बजे तक ।
24 जुलाई : 12/40 बजे से 29/59 बजे तक ।
29 जुलाई : 12/02 बजे से 30/01 बजे तक ।
30 जुलाई : 06/01 बजे से 30/01 बजे तक ।
02 अगस्त : 22/44 बजे से 30/03 बजे तक ।
04 अगस्त : 06/03 बजे से 28/25 बजे तक ।
06 अगस्त : 06/38 बजे से 30/04 बजे तक ।
08 अगस्त : 06/05 बजे से 09/19 बजे तक ।
14 अगस्त : 06/56 बजे से 29/44 बजे तक ।

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभः **जु.** 15,16,17,24,29,30,31 **अ.** 4.13
मशीनरी प्रारंभ : जुलाई-16,21,26,30 अगस्त-13
वाहन खरीदनेः जुलाई-16,26,30,31 अगस्त-4,13,14

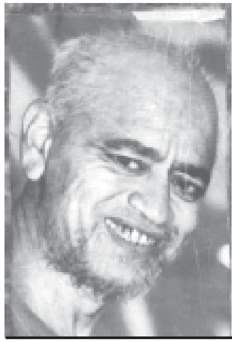

पंचकल्याणक एवं दीक्षा महोत्सव विशेषांक

संस्कार सागर

• वर्ष : 23 • अंक : 268 • मई, जून, जुलाई 2021
• वीर नि.संवत 2547 • विक्रम सं. 2078 • शक सं. 1942

लेख

• राजगृह सोनभद्र गुफा में पुरातात्विक महत्व की जैन भित्ति प्रतिमायें 08
• तर्क का मूल स्वरूप 12
• आयुर्वेद चिकित्सक और एलॉपैथी डाक्टर क्या सहकारी बैंक और स्टेट बैंक जैसे होते हैं 16
• मुनिवर समयसागर जी और योगसार जी बने निर्यापक मुनि 18
• आचार्य श्री विद्यासागर कृत निजामृत पानः समीक्षात्मक अध्ययन 24
• चंदेल राजा और उनके जनहित कार्य 30
• भविष्य के लिये संरक्षण जरूरी 36
• जैन तीर्थ नैनागिरि के चतुर्मुखी विकास में श्री सुरेश जैन का अवदान 40
• श्रावकाचारों के परिप्रेक्ष्य में उत्कृष्ट श्रावक-क्षुल्लक की चर्या 48
• प्रवचनः फार्मूला गर्मी भगाने का 55
• श्रुतपंचमी महापर्व 63
• वरिष्ठ नागरिकः अच्छा जी 69
• जैन साहित्य में भक्ति काव्य का वैशिष्ट्य 76
• कमर दर्द बुढ़ापे की निशा नहीं बनने देवे 82

बाल कहानी

• आत्मग्लानी के बाद क्षमायाचना 85

कविता

• पारस प्रभु की छाँव 11
• राह अहिंसा चलो रे 17
• धरलें समता अब तो ज्ञानी 22
• मानव को मानव पर अगर विश्वास हो जाये 54
• स्वप्न पूर्ण हो जाये 70
• वाणी का जादू 83

कहानी

• अमन की चैन 71

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 14
चलो देखें यात्रा : 23 • आगम दर्शन :47 • पुराण प्रेरणा : 53 • माथा पच्ची : 53 • कैरियर गाइड : 54
दुनिया भर की बातें : 56 •दिशा बोध : 61 • इसे भी जानिये: 62 • आओ सीखें : जैन न्याय : 67
वरिष्ठ नागरिक : 69 • हमारे गौरव : 75 • हास्य तरंग-शरीर विकास के कुछ खेल : 82
• बाल संस्कार डेस्क : 85 • संस्कार गीत व बाल कविता : 86 • समाचार : 87

प्रतियोगिताएं

: अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा :89 : वर्ग पहेली : 98

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–9542505311
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल–9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढ़ूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ,इन्दौर (म.प्र.)

❊ आंतरिक सज्जा ❊
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें । बकाया राशि में त्रुटि हो तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: 2100/-	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: 5001/-	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: 11000/-	(सदैव)
-परम संरक्षक	: 15001/-	(सदैव)

अपने शहर के
• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया –**संस्कार सागर**
खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
• भारतीय स्टेट बैंक –**ब्र. जिनेश मलैया**
खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
•आईसीआईसीआय बैंक
श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
खाता क्र. 00410501357 5 (IFSC : ICIC0000041)
में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय –संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर – 10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, विगत माह हरियाणा सरकार के विरोध में अविश्वास प्रस्ताव आया अविश्वास प्रस्ताव के खिलाफ मनोहर लाल खट्टर की सरकार जीत गई यह निश्चित तौर पर उन सबके लिये बुरी खबर थी जो यह कह रहे थे कि पंजाब के किसानों के आन्दोलन को देशभर में व्यापक समर्थन प्राप्त है उसका पहला शिकार हरियाणा की भाजपा सरकार बनेगी किन्तु हरियाणा विधान सभा में हुये फ्लोर टेस्ट के अंतर्गत हरियाणा सरकार का जीतना यह संदेश दे रहा है कि अच्छा रहा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपने निर्णय पर अडिग रहे जिससे भारत के तथा कथित किसानों को अपनी राजनैतिक रोटी सैकने का अवसर नहीं मिला जिससे भारत में अस्थिरता का वातावरण नहीं बन सका।

अंशुल पारासर, लटेरी

• सम्पादक महोदय, म्यांमार में तख्ता पलट के बाद विरोध प्रदर्शन जारी है इस विरोध प्रदर्शन में सैकड़ों इंसानों की जान चली गई किन्तु अभी तक सैनिक सरकार ने हिंसा का रास्ता छोड़ा नहीं है सेना इतनी क्रूर हो जायेगी इसका अनुमान लगाना ही मुश्किल था। अहिंसा का रास्ता अपनाना हर देश के बस की बात नहीं है भारत में चाहे किसान आन्दोलन हुआ हो चाहे सी.ए.ए. के विरोध में आन्दोलन हुआ हो परन्तु मोदी सरकार ने किसी भी प्रकार से हिंसा का रास्ता नहीं अपनाया इससे ऐसा लगता है कि भारत जैसा शांतिप्रिय देश बनना विश्व के लिये मुश्किल तो है ही साथ में भारत जैसे ऋषि मुनियों के संस्कार पाना भी बहुत ही पुण्य का फल है।

अतः जो भारत में रहकर पाकिस्तान की तारीफ करते हैं उन्हें फिर से सोचना होगा कि पाकिस्तान कितना हिंसक और कितना अहिंसक है इससे शांति की आशा करना क्या कभी सार्थक होगा।

राजकुमार जैन, इंदौर

• सम्पादक महोदय, विगत माह संस्कार सागर में प्रियका जैन का एक प्रभावी लेख दृष्टिगोचर हुआ जिसका शीर्षक था **''एक प्रभावी कदम शाकाहार की ओर''** विद्वान लेखिका ने मोटीवेशन करने का सशक्त प्रयास किया है उन्होंने एक जानकारी दी कि अंतराष्ट्रीय अवार्ड शो (गोल्डन ग्लोब) में पर्यावरण जागरूकता के लिये व्यवस्थापकों ने पार्टी में शुद्ध शाकाहार की योजना को सफल बनाया तथा शाकाहार पर्यावरण सुरक्षा के लिये कितना जरूरी है यह संदेश अंतराष्ट्रीय स्तर पर ठोस संदेश दिया ओर यह बताने का प्रयास किया कि क्रूरता के बिना मांस उत्पादन संभव नहीं है। हकीकत यह है कि मांसाहार प्रदूषण का पर्याय ही है इस मांसाहार से विश्व में अनेक प्रकार की महामारी आये दिन फैलती ही रहती हैं इन महामारियों से बचने के लिये शाकाहार ही श्रेष्ठ रास्ता है।

सुभि जैन, इंदौर

• सम्पादक महोदय, दफीना बाजों ने और गढ़े धने के लालचीयों ने भारत में सबसे ज्यादा अंधविश्वास फैलाया है लोभी लालची लोग बाबाओं के चक्कर में बहुत जल्दी आ जाते हैं परिणाम ये सामने आता है कि या तो हत्या होती है या फिर कुछ लोग आत्म हत्या कर लेते हैं लुटते-पिटते अंधविश्वासी लालची लोग समाज में विसंगति ही पैदा करते हैं। गढ़े धन के लालची लोग खुद तो मर जाते हैं परन्तु पूरे परिवार को हमेशा के लिये मुसीबत में डाल जाते हैं। संस्कार सागर में प्रकाशित हुई है वह कहानी बेहद शिक्षाप्रद है इस कहानी की कथा वस्तु रोचक और सीधी सपाट है ऐसी कहानी पढ़ने के बाद यह तय हो जाता है कि समाज की विसंगतियों को यदि उजागर नहीं किया गया तो साहित्य की विधा ही असफल मानी जायेगी संस्कार सागर की कहानियाँ अंधविश्वास पर कुठाराघात करने के लिये अपनी अलग ही पहचान बनाये हुये हैं।

श्रीमति करूणा जैन, वाकल इंदौर

भक्ति तरंग
खरी बात

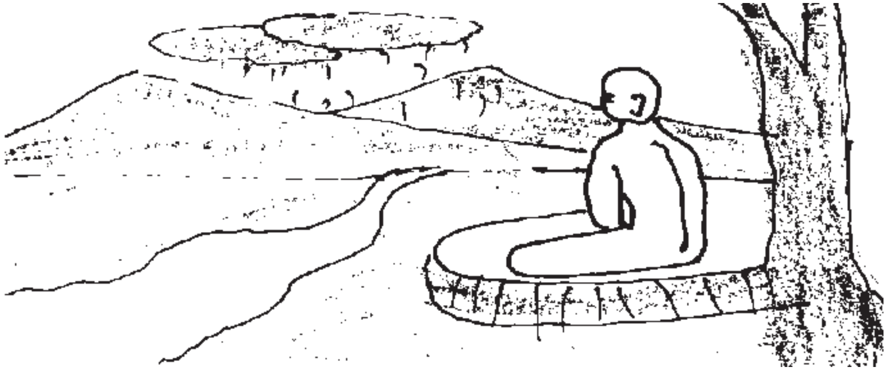

धन धन साधर्मीजन मिलन की घरी, बरसन भ्रमताप हरन ज्ञानधनझरी ।।
जाके बिन पाये भवविपति अति भरी, निज परहित अहित की कहू न सुधि परी ।।1।। धन.।।
जाके परभाव चित्मति सुधिरता करी, संशय भ्रम मोहकी सु वासना तरी ।।2।। धन ।।
मिथ्या गुरुदेवसेव तेव परिहरी, वीतरागदेव सुगुरूसेव उरधरी ।।3।। धन.।।
चारों अनुयोग सुहितदेश दिठपरी, शिवमगके लाह की सुचाह विस्तरी ।।4।। धन.।।
सम्यक् तरू धरनि येह करन करिहरी, भवजलको तरनि समर-भुजग विषजरी ।।5।। धन.।।
पूखभव या प्रसाद रमनि शिव वरी, सेवो अब दौल याहित बात यह खरी ।।6।। धन. ।।

साधर्मी बंधुओं के परस्पर मिलने की यह घड़ी, यह अवसर धन्य है जिससे धर्मरूपी ताप का नाश होकर ज्ञानरूपी वर्षा होती है। ऐसे अवसर की प्राप्ति के बिना इस भव में , इस संसार में अनेक दुःख पाते हैं, स्व और पर के हित और अहित का ज्ञान नहीं होता।

परभाव, अर्थात् अन्य के प्रति लगाव की भावना समाप्त होकर चित्त में स्थिरता आती है और संशय, भ्रम, मोह की वासनायें रूकजाती है। साधर्मी बन्धुओं के सत्संग से कुगुरू व कुदेव ही सेवा करने की आदत छूट जाती हैं और हृदय में वीतरागदेव व गुरू की भक्ति जाग्रत होती हैं।

इस संगति से अपने कल्याण के लिये चारों, अनुयोगों पर दृष्टि जाती है, उनकी ओर रूचि बड़ जाती है, और मोक्ष का लाभ व उस मार्ग पर बढ़ने की चाह बढ़ जाती है।

यह संगति सम्यक्तरूपी वृक्ष को धारण करने वाली है, देह व मन को वश में करने वाली हैं, संसार-समुद्र से तारने वाली नौका हैं वह कामदेवरूपी भयंकर सर्प के विष को निरस्त करने वाली हैं अर्थात् साधर्मी बन्धुओं की संगति कामदेवरूपी सर्प के विष को दूर करने वाली जड़ी बूटी हैं। पूर्व कर्मों के फलस्वरूप यह मोक्षमार्गरूपी लक्ष्मी मिली हैं, इसकी साधना करो। दौलतराम कहते हैं कि यह बात खरी है, सत्य है।

संस्कार प्रवाह

विवाद से परे क्षुल्लक चर्या

विवाद से परे सदौव क्षुल्लक चर्या रही है क्षुल्लक की अवस्था और व्यवस्था उत्कृष्ट श्रावक के रूप में आगम में मान्य है। तथा क्षुल्लक को मयूर पिच्छी का देने, न देने का विषय नेमावर से प्रारंभ हुआ परन्तु जैनेन्द्र सिद्धांत कोश के रचयिता जिनेन्द्र वर्णी जी ने अपने संकलन ग्रंथ के भाग-2 पृष्ठ 188 पर स्पष्ट शीर्षक बनाया है वह इस प्रकार है कि क्षुल्लक के मयूर पिच्छी का निषेध इस विषय को स्पष्ट करते हुये उन्होंने लाटी संहिता सर्ग-6, श्लोक-67 तथा सागार धर्मामृत अध्याय-7 के श्लोक 36-37 के सन्दर्भ प्रस्तुत करके अपने शीर्षक की सिद्धि की है और उन्हों ने यह भी लिखा है कि क्षुल्लक एक गृह भोजी और बहु गृह भोजी होता हैं उपलब्ध श्रावकाचार में कहीं भी क्षुल्लक को मयूर पिच्छी प्रदान करने का उल्लेख प्राप्त नहीं है। फिर भी परम पूज्य आचार्य शांतिसागर जी महाराज जी ने क्षुल्लकों को मयूर पिच्छी क्यों दी। तथा नेमावर में विगत माह परम पूज्य आचार्य विद्यासागर जी ने नौ क्षुल्लक दीक्षायें दी। उन नवदीक्षित क्षुल्लकों को कमण्डल तो प्रदान किया किन्तु मयूर पिच्छी प्रदान नहीं की, इस दीक्षा को विषय बनाते हुये देश के कुतर्कवादी विद्वान मुखर हुये उन्होंने अपने कुतर्क एवं व्यंग वाणों से युक्त अपनी लेखनी सोशल मीडिया पर चलाई और समाज में विवाद खड़े करने के लिये प्रसिद्ध कुतर्क शील (बखेड़ा वादी) विद्वान समाधान लेने के नहीं अपितु अवसर भुनाने के लिये मैदान में कूंद पड़े उन्होंने क्षुल्लक के स्वरूप को प्रस्तुत न करते हुये मात्र विवाद की भाषा प्रस्तुत की।

मयूर पिच्छी का प्रदान करने अथवा न करने का सही कारण परम पूज्य आचार्य श्री शांतिसागर जी एवं परम पूज्य विद्यासागर जी ही दे सकते हैं क्योंकि आचार्य को देशकाल परिस्थिति अनुसार परम्परा का निर्माण करने तथा परम्परा में परिवर्तन करने का पूर्ण अधिकार एवं विवेक होता है। जिन बातों का उल्लेख आगम में नहीं होता है। उनसे संबंधित क्रिया और परम्परा का सृजन और परिवर्तन आचार्य परमेष्ठी कर सकते हैं परन्तु शर्त यहै कि किसी भी क्रिया का परम्परा के परिवर्तन में या सृजन में सम्यग्दर्शन की विराधना नहीं होना चाहिये।

क्षुल्लक को मयूर पिच्छीका प्रदान करने अथवा न करने का सम्यग्दर्शन की विराधना से कोई सम्बन्ध नहीं है। कुतर्कशील सोशल मीडिया वीर तथाकथित विद्वानों ने क्षुल्लक को मयूर पिच्छी का देने अथवा न देने का संबंध सम्यक्तव और मिथ्यात्व से जोड़कर अपनी कुत्सित वृत्ति का परिचय दिया है और समाज में बखेड़ा करने का असफल प्रयास किया है। यह इनकी घिनोनी वृत्ति कई वर्षों से समाज में गंदगी फैलाने का कार्य कर रही है अच्छा यह हुआ कि अब समाज इनसे परिचित हो चुकी है और इनकी बातों को डस्टबिन में डालने का कार्य करने लगी है। बस इनकी बातें अगर समाज डस्टबिन में डालती रही तो क्षुल्लक की चर्या सदैव विवाद से परे रहेगी।

राजगृह सोनभद्र गुफा में पुरातात्विक महत्व की जैन भित्तिप्रतिमायें

✻ महेन्द्र कुमार जैन, इंदौर ✻

राजगृह प्राचीन मगध की राजधानी थी। पुराने परकोटों को देखें तो यह पांच पहाड़ियों से घिरा हुआ सुरक्षित था। आज प्राचीन और नवीन दोनों राजधानियों के अवशेष यहाँ मौजूद हैं। राजगृह पर्यटन की दृष्टि से सभी धर्मावलम्बियों के पर्यटकों को आकर्षित करता है। गर्म पानी के झरने यहां के प्रसिद्ध हैं , जिनमें स्नान कर स्वास्थ्य लाभ लेने लोग अनवरत यहाँ पहुंचते हैं।

यहाँ जैन परम्परा के बीसवें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ के जन्म सहित चार कल्याणक और चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर की तो प्रथम दिव्यध्वनि (विशेष उपदेश) यहां के विपुलाचल पर्वत पर खिरी थी। तथा भगवान के चौदह चातुर्मास राजगृह में हुये थे। यहाँ पांच पहाड़ों पर भव्य जैन मंदिर हैं। पुरातत्व की दृश्टि से वैभारगिरि पर्वत महत्त्वपूर्ण है।

इसी वैभारगिरि पर्वत की तलहटी में स्वर्णभद्र गुफा है जो सोनभंडार गुफा के नाम से प्रसिद्ध है। इस गुफा के निर्माण और शैली के अनुसार पुराविदों ने इसका निर्माण (शैशुनाग-नन्द युग 600 से 326 ई. पूर्व) 5वीं शती ईस्वी पूर्व माना हे। कुछ विद्वानों ने इस गुफा को मौर्यवंश से सम्बद्ध (325-184 ईस्वी पूर्व) बताया हे। इसमें जो दो पंक्ति का लेख उसकी लिपी का परीक्षण करके इस लेख को चौथी शती का माना गया है, लेकिन इसमें छोटे-छोटे अन्य लेख हैं उनकी लिपि निःसंदेह अत्यन्त प्राचीन है। कई लेखोंको तो अब तक पढ़ा नहीं जा सका है। आर्दिरस बनर्जी ने लिखा है कि सोनभद्र गुहा में यद्यपि गुप्तकालीन लेख हैं, पर इस गुफा का निर्माण गुप्तकाल के पहले ही हुआ होगा।

सर्वतोभद्र प्रतिमा-इस गुफा में सन् 1975 तक एक सर्वतोभद्र प्रतिमा अर्थात् चारों और जिनांकित प्रतिमा स्थित थी। इसकी ऊंचाई लगभग चार फुट है। इस सर्वतोभद्रिका में चारों ओर आदि के चार तीर्थंकर निर्मापित हैं। इनमें कायोत्सर्गस्थ कमलासन के नीचे बीच में धर्मचक्र, चक्र के दोनों और तीर्थंकर तथा चिन्ह युग्म रूप में अंकित हैं। क्रमशः अनुकुलाभिमुख दो वृषभ, अनुकुलाभिमुख दो हाथी, दो घोड़े ओर दो बन्दर अलग-अलग प्रतिमाओं के नीचे उत्कीर्णित हैं । चरणों के पास दोनों पाश्वों में दो चंवरधारी, दोनों पार्श्वों और कर्णों के समतल में दो गगनचर, ऊपर छत्रत्रय, छत्रत्रय के ऊपर दोनों और पुष्पवृष्टि करते दो हाथ शिल्पित हैं। भामण्डल लुप्त होकर वहाँ अशोक वृक्ष के पत्र गुच्छ दोनों और लटक रहे शिल्पांकित हैं। चारों मूर्तियों में चिन्हों की भिन्नता के अतिरिक्त पूर्ण शिल्पांकन में समानता है। केवल ऋषभनाथ की जटायें स्कंधों तक लम्बित दर्शाई गई हैं, यह भिन्नता है।

वर्तमान स्थिति- यह चतुर्मुख प्रतिमा 1975 तक इस सोनभद्र गुफा में थी बाद में इसे नालन्दा पुरातत्व संग्रहालय ले जाया गया और वहाँ संग्रहालय परिसर के लॉन में इसे 13-14

वर्ष तक रखे रहा गया। वर्तमान में यह मूर्ति नालन्दा संग्रहालय में विधिवत् प्रदर्शित हैं। इसके अंकन व पाषाण परीक्षणादि से इसका समय विक्रम की आठवीं शताब्दी का माना गया है।

दूसरी गुफा- ऊपर वर्णित गुफा से लगभग 50 फीट उत्तर में इसके सामानान्तर कुछ नीचाई में एक और भग्न गुफा है। यह भी पूर्वाभिमुख है, इसकी लम्बाई 22.5 फीट एवं चौड़ाई 17 फीट है। ऊपर का हिस्सा तथा आगे की भित्ति, चट्टानों का ऊपरी भाग पूर्णतया भग्न हैं। इस कारण इस गुफा में ऊपर खुला आसमान है। इसका मुख्य द्वार आग्नेय कोण में उत्तराभिमुख है।

जैन मूर्ति एवं स्थापतय की दृश्टि से यह गुफा अति महत्व की है। इसकी पूर्वी और उत्तरी अन्तरभित्तियों में जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ उत्कीर्णित हैं। इन सपरिकर जिनभित्ति मूर्तियों में जैन प्रतिमाविज्ञान की अनेक स्थापनायें छुपी हुई हैं जो अब तक विश्लेषित नहीं हुई हैं। इस गुफा की पूर्वी दीवार में दो कायोत्सर्ग मुद्रा में तथा चार ध्यान मुद्रा में जिन बिम्ब उकरित हैं।

दो कायोत्सवर्ग भित्ति प्रतिमायें- गुफा के द्वार की बायी और अन्तः पूर्वी शिलाभित्ति में सपरिकर पांच तीर्थंकर प्रतिमायें निर्मापित हैं। उनमें भी (दर्शक के) बायें की दो प्रतिमायें कायोत्सवर्ग मुद्रा में हैं। दोनों में पादपीठ के रूप में कमल उकेरे गये हैं। प्रत्येक के दोनों पाश्वों में छोटे आकार में एक-एक चंवरधारी, चंवरधारियों के ऊपर एक-एक गगनचारी देव, साधारण प्रभावल, प्रभावल के ऊपर छत्रत्रय और छत्रत्रय के ऊपर अशोक वृक्ष के मनोरम ऊपरी पत्रगुच्छ शिल्पांकित हैं । तीर्थंकर चिन्ह का अंकन नहीं है। दोनों प्रतिमाओं के तथा उनके परिकर अंकन में समानतायें हैं। दोनों चंवरधारी दाहिने दाहिने हाथ में चंवर लिये हुये हैं। बाद के चंवरधारी अंकन में इस स्थिति को बदल दिया गया है और भगवान को चंवर जिस हाथ में सुगमता से ढुराया जा सके उस हाथ में चंवर दर्शाया जाने लगा है। सूक्ष्मता से देखने पर दो भिन्नतायें दृश्टिगत होती हैं -1. बायें से प्रथम प्रतिमा के केश विन्यास हैं, जिनकी लटें स्कन्धों पर लटक रहीं उकरित हैं। 2. दायीं प्रतिमा पर दर्शाये गये गगनचारी देव हाथ जोड़े हैं जबकि बाई और के गगनचारी देव हाथों में माला लिये हुये हैं।

ध्यान मुद्रा में सर्पकुण्डल्यासनस्थ प्रतिमा- दोनों कायोत्सर्ग प्रतिमाओं के बाद तीसरी (पांचों में मध्य की) ध्यानस्थ जिन प्रतिमा जैन प्रतिमा विज्ञान में चिन्ह एवं पादपीठ अंकर की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसके वक्षस्थल के ऊपरी भाग का शिलाखण्ड भग्न हो जाने के कारण प्रतिमा का ऊर्ध्व भाग और उसका ऊपरी परिकर नष्ट हो गया है। ऊपर केवल प्रतिमा के दाहिनी और का गगनचर मालयधारी दिखाई देता है। पादपीठ में मध्य में अण्डाकार धर्मचक्र है , इसके 22 आरों । चक्र के दोनों ओर दो विरूद्धाभिमुख गज (हाथी) अंकित हैं, हाथियों के बाद समान्तर (पादपीठ में ही) एक-एक ध्यानस्थ जिन अंकित हैं। तीर्थंकर प्रतिमा सर्पकुण्डली पर ध्यानमुद्रा में बैठी दर्शाई गई है, तथा इसी सर्पकुण्डली का पृष्ठासन उकरित हो गया है, फिर भी फण का कुछ भाग अभी परिलक्षित होता है। इस तीर्थंकर प्रतिमा के अन्य परिकर में बाई और का चंवरधारी तथा दाहिनी ओर का गगनचारी माल्यधारी देव भग्न शिला में खण्डित दृष्टिगोचर होता है।

दो विशेषतायें-ऊपर उल्लेखित प्रतिमा में दो विशेषतायें हैं। एक तो इसके पादपीठ में (सिंहासन के) सिंह द्रव्य के स्थान पर गज द्रव्य अंकित हैं । सिंहासन के सिंह और तीर्थंकर के चिन्ह रूप में सिंह या अन्य चिन्ह के अंकन में यह भिन्नता रही है कि सिंहासन के सिंह प्रायः दो ही होंगे और विरूद्धाभिमुख शिल्पित किये जायेंगे तथा चिन्ह रूप में सिंह एक या दो भी हो सकते हैं। यदि चिन्ह के लिये दो का अंकन किया जाता है तो वे अनुकूलाभिमुख अर्थात् एक दूसरे के सामने उनके मुख रहेंगे। यहाँ गज विरूद्धाभिमुख शिल्पांकित हैं। दूसरी विशेषता यह है कि यह प्रतिमा सर्वकुण्डली पर आसीन दिखाई गई है। सर्प पृष्ठासन और फणाच्छदन भी है। इससे ज्ञात होता है कि यह तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ की प्रतिमा है। किन्तु गज द्रव्य का अंकन यदि चिन्ह के रूप में हुआ है तो सर्व फणाच्छादन युक्त द्वितीय तीर्थंकर अजितनाथ की यह प्रतिमा है जैन प्रतिमा विज्ञान में अनूठी है। और यदि गजद्रव्य का अंकन आसन के रूप में हुआ है तो सिंहासन के स्थान पर गजासन के अंकन का भी यह प्रतिमा विज्ञान में अद्वितीय उदाहरण।

ध्यान मुद्रा में दो प्रतिमायें - ध्यानमुद्रा में दो प्रतिमायें शिल्पित हैं। दोनों के परिकर में लगभग समानता है। पादपीठ के बीच में चक्र-चक्र के दोनों और समान्तर में बहिर्मुख एक-एक सिंह, पादपीठ में ही सिंहों के बाद और समानान्तर दोनों ओर एक-एक जिन दोनों प्रतिमाओं में अंकित हैं। प्रतिमाओं के दोनों पार्श्वों में पादपीइ के जिनों के ऊपर की ओर एक-एक चंवरधारी अंकित है जो दाहिने हाथों में ही चंवर लिये दर्शाये गये हैं। इन दोनों प्रतिमाओं में से सबसे अन्त की प्रतिमा के मस्तक सहित ऊपर की शिला तथा दूसरी प्रतिमा के प्रभावल से ऊपरी भाग की शिला (गुफा की दीवार) टूटी हुई है जिससे दुन्दुभि वादक, गगनचर, छत्रत्रय और अशोक वृक्ष का कोई विश्लेषण नहीं किया जा सकता है।

विशेषता- मध्य प्रतिमा से बाई और अन्तिम से दूसरी प्रतिमा के प्रभावल में मस्तक के दोनों ओर तेज की प्रतीक प्रज्जवलित अग्नि का अंकन है। प्रभावल में अग्नि की लपटों का शिल्पाकंन इस क्षेत्र की अन्य किसी प्रतिमा में नहीं किया गया है।

एक और भित्ति प्रतिमा- इस द्वितीय भग्न गुफा के एकमात्र पूर्व दक्षिणी द्वार से प्रवेश करने पर बायें तरफ एक पद्मासन प्रतिमा शिल्पित है। यह प्रायः भग्न है, इसके पादपीठ में चक्र, सिंहासन के सिंह द्रव्य, द्रवि, जिन और चंवरधारियों के कुछ भाग दृष्टिगत होते हैं । ऊपर अशोक वृक्ष की उपरिम सपत्र डालियों का अंकन सुरक्षित हैं। पादपीठ के नीचे दाहिनी ओर एक मानवाकृति कुछ झुकी हुई शिल्पित है।

वर्तमान स्थिति- हमने स्वयं इन गुफाओं का नौ बार सर्वेक्षण किया है। इस दूसरी गुफा में जैन भित्ति मूर्तियां होने से न तो इसकी तरफ पर्यटकों को आकृष्ट किया जाता है और न ही इसकी पुख्ता सुरक्षा व्यवस्था है। लकड़हारे प्रायः यहाँ की मूर्तियों को पत्थरों से क्षति पहुँचाते रहते हैं। हम तो जब भी यहाँ दोबार गये, यहाँ की जैन मूर्तियों में कुछ न कुछ क्षति पहुँ चाई गई देखी। इस गुफा में अनेक पुरातात्विक छोटे-छोटे लेख हैं, लेकिन उन्हें लोग कभी कभार खुरचते रहते हैं।

समय- इस दूसरी गुफा में निर्मित मूर्तियों विक्रम की चौथी शताब्दी की हैं। इसमें निर्मित सभी मूर्तियों के आसन के निकट दोनों तरफ दो मूर्तियाँ और होने से इनहें त्रितीर्थी कहा जा सकता है। चौथी शती की एक त्रितीर्थी नेमिनाथ जिन प्रतिमा मथुरा के कंकाली टीला से प्राप्त हुई थी जो अब लखनऊ संग्रहालय में प्रदशित है। उस मूर्ति से यहाँ कि मूर्तियों के अंकन में काफी साम्य है। इन मूर्तियों और गुफा के विषय में मत दिये गये हैं कि सोनभद्र गुफा की ये मूर्तियाँ तथा शिलालेख गुप्तकालीन हैं, यह गुफा मौर्यकाल में बनी थी।

इस तरह सोनभद्र (सोन भण्डार) गुफाओं के अध्ययन से कहा जा सकता है कि ये गुफायें अत्यन्त महत्व अति प्राचीन है और जैन मुनि वैरदेव या वीरदेव से सम्बन्ध रखती हैं तथा इनमें संक्षेपतः निम्नलिखित हैं।

1. जटाजूट और सर्वफणाच्छादन के अतिरिक्त अन्य चिन्हों के अंकन के प्रारम्भिक काल का द्योतन
2. सभी जिनों के चँवरधारियों दाहिने-दाहिने हाथ में चंवर हैं।
3. एक प्रतिमा के सर्पकुण्डल्यासन, सर्पकुण्डलिपृष्ठासन, सर्वफणाच्छादन और पादपीठ में गज द्वारा
4. एक प्रतिमा के प्रभावल में प्रज्जववित निर्धूम अग्नि है।
5. सभी प्रतिमाओं में पादपीठ में दो-दो लघु- जिन का अंकन है।

कविता

पारस प्रभु की छाँव

मैं भलूँ कैसे गाँव वो पीपल वो शीतल छाँव
नदी का घाट पुराना जहाँ पर गाता सुखद तराना
वो पंछी का कलख वो कलियों का सौरभ

छोटा स्कूल वो प्यारा वो नाले की सुन्दर धारा
वो स्वीर्णिम सांझ सवेरा जहाँ अपने पन डेरा
मैं भले शहर में आया पर अपना पन न पाया

यहाँ पर दिखता कोई न अपना
बस दिखता गांव का सपना

अतिशय मय पारस मूरत तो ज्ञान विरागी सूरत
मैं दिन भर ध्यान लगाऊँ मैं गाँव के पारस ध्याऊँ

मेरा रहली प्यारा गाँव मिले यहाँ
पारस प्रभु की छाँव.........

तर्क का मूल स्वरूप

✻ ऐलक सिद्धांत सागर जी महाराज ✻

तत्वार्थ सूत्र में जिसे चिन्ता कहा गया है उसे दार्शनिक भाषा में तर्क कहते हैं और इसी तर्क का दूसरा नाम ऊहा है।

तर्क की परिभाषा- व्याप्ति के ज्ञान को तर्क कहते हें । साध्य और साधन के भाव को व्याप्ति कहते हैं ।

अभिनाभाव-अभिनाभाव एक नियम है और यह नियम दो प्रकार से व्यवस्थित होता है। एक तथोत्पत्ति और दूसरा अन्यथानुपपत्ति साध्य के होने पर साधन होता है उसे तथोत्पत्ति कहते हैं और साध्य नहीं होने पर साधन का न होना अन्यथानुपपत्ति कहलाता है। जैसे अग्नि के होने पर ही धूआ होता है यह तथोत्पत्ति और अग्नि के न होने पर धूआ का न होना अन्यथानुपपत्ति।

जो सिद्ध करने योग्य होता है उसे साध्य कहते हैं और जिसके द्वारा सिद्ध किया जाता है उसे साधन कहते हें ।

भारतीय दर्शनकारों ने तर्क के सम्बन्ध में कई मत प्रस्तुत किये हैं उनमें कई दर्शन तर्क को मानते हैं परन्तु स्वतंत्र प्रमाण नहीं मानते। जैन दर्शन तर्क को स्वतंत्र और परोक्ष प्रमाण मानता है। जिनमें बौद्ध नैयायिक, योग, चार्वाक, और मीमान्सक दर्शन तर्क को प्रमाण नहीं मानते हैं। साधन, साध्य के द्वारा नियत/निश्चित होता है न कि साधन के द्वारा साध्य, जैसे धूम के अभाव में अग्नि तो पाई जाती है किन्तु अग्नि के अभाव में धूम कभी नहीं पाया जाता है।

तर्क की आवश्यकता इसलिये होती है क्योंकि व्याप्ति का ग्रहण न प्रत्यक्ष से होता है न अनुमान से अतः तर्क को पृथक प्रमाण मानना उचित ही होता है।

नैयायिक दर्शनों का मानना है कि व्याप्ति का ज्ञान प्रत्यक्ष से होता है और वे कहते हैं साध्य और साधन के अभिनाभाव की प्रतीति प्रत्यक्ष से होती है और अग्नि के सम्बन्धि रूप से ही होती है इसलिये धूम और अग्नि के नियम की प्रतीति उसी समय हो जाती है। जिस समय प्रत्यक्ष का ज्ञान होता है और धूम की उत्पत्ति अग्नि के सिवाय दूसरे से नहीं होती है इससे असंदिग्धता सिद्ध होती है और अग्नि के सिवा दूसरे कारणों से धूआ उत्पन्न न होने के कारण इसमें विपर्यय भी नहीं होता है। व्याप्ति का उल्लेख अनुसंधान से होता है। अन्वय और व्यतिरेक का दर्शन होने से संदेह और विपर्यय दोनों नहीं रहते हैं इसलिये पृथक से तर्क प्रमाण की जरूरत नहीं होती है क्योंकि इन्द्रियों से होने वाला व्याप्ति ज्ञान ही प्रत्यक्ष है।

जैन पक्ष अपने तर्कों के मध्यम से व्याप्ति को ग्रहण करने के लिये तर्क प्रमाण की आवश्यकता होती है इसे सिद्ध करने के लिये अपने निम्न तर्क देते हैं

1. व्याप्ति का ग्रहण इन्द्रिय प्रत्यक्ष से होता है या मानस प्रत्यक्ष से इन्द्रिय प्रत्यक्ष से व्याप्ति का ग्रहण हो नहीं सकता, कारण की इन्द्रियाँ प्रतिनीयत देश और प्रतिनीयत काल के साथ सम्बंध

रखती है और उसे ही इन्द्रिय प्रत्यक्ष जानता है किन्तु व्याप्ति ज्ञान समस्त देश और कालवर्ती अर्थ को लेकर अपना कार्य करती है। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है की इन्द्रिय का कार्य क्षेत्र प्रतिनीयत देश-काल में सीमित होता है जबकि व्याप्ति का कार्य क्षेत्र सर्वदेश- सर्वकाल होता है। व्याप्ति तीनों लोक और तीनों काल को अपना विषय बना सकती है। समस्त व्याख्य और व्यापक को अपने क्षेत्र में लेना व्याप्ति का कार्य है। इसलिये समस्त व्याप्य और व्यापक व्यक्तियों को इन्द्रिय ग्रहण नहीं कर सकती है अतः इन्द्रिय प्रत्यक्ष से व्याप्ति का ग्रहण नहीं हो सकता है। व्याप्ति सर्वोपसम्हारवति होती है इसलिये एक प्रत्यक्ष तो ठीक सैकड़ों इन्द्रिय प्रत्यक्षों से भी व्याप्ति का ग्रहण नहीं होगा। क्योंकि प्रत्यक्ष सम्बद्ध और वर्तमान विषय को ही ग्रहण करता है। अतः उपसम्हार करके अभिनाभाव को जानने में इन्द्रिय प्रत्यक्ष असमर्थ होता है।

विपक्ष का तर्क- अनवय और व्यतिरेक की सहायता से प्रत्यक्ष व्याप्ति का ज्ञान कर लेगा। जैन तार्किकों का इस तर्क को खण्डन करने के लिये इस प्रकार कथन किया गया की हजार बार अन्वय-व्यतिरेक की सहायता होने पर भी जिस विषय में प्रत्यक्ष में प्रत्यक्ष की प्रवृत्ति होती है वहीं और वह व्यक्ति को जान सकता है और जिस विषय में प्रत्यक्ष की प्रवृत्ति नहीं होती है उसे नहीं जान सकता है क्योंकि व्याप्ति की आवश्यकता अनुमान के लिये होती है और जब साध्य और साधन को प्रत्यक्ष से ही जान लेगा तो अनुमान की आवश्यकता नहीं होगी। व्याप्ति का उल्लेख अनुसंधान से होता है ऐसा नैयायिकों का तर्क भी व्यर्थ सिद्ध होता है क्योंकि व्याप्ति की प्रतिपत्ति करने में समर्थ ज्ञान प्रत्यक्ष रूप नहीं है। उसकी उत्पादक सामग्री और विषय प्रत्यक्ष से भिन्न है। प्रत्यक्ष तो इन्द्रिय आदि सामग्री से उत्पन्न होता है और इनिद्रय का विषय वर्तमान से सम्बद्ध है। यह बात सर्वत्र प्रसिद्ध है किन्तु तर्क ज्ञान मात्र वर्तमान से सम्बद्ध नहीं होता है। नैयायिक तर्क के विषयों में नई प्रस्तुति देता है।

नैयायिक कहता है यदि तर्क ज्ञान प्रत्यक्ष रूप नहीं है तो उसमें इन्द्रियों की अपेक्षा क्यों होती है इस नैयायिकों की नई प्रस्तुति का उत्तर जैन आचार्य देते हुये कहते हैं कि इन्द्रिय तर्क के कारण का कारण है। प्रत्यख तथा अनुपलम्भ में इन्द्रिय कारण हैं इसलिये तर्क में इन्द्रिय की अपेक्षा होती है। इसलिये इन्द्रियजन्य प्रत्यक्ष व्याप्ति को जानने में समर्थ नहीं होता है।

मानस प्रत्यक्ष में तर्क की भूमिका- मानस प्रत्यक्ष भी व्याप्ति को नहीं जान सकता है क्योंकि बाह्य इन्द्रिय की सहायता के बिना बाह्य पदार्थों में मन की प्रवृत्ति नहीं होती और न्याय दर्शन में मन को अणु रूप माना है अतः अणु रूप मन का एक साथ समस्त पदार्थों के साथ सम्बन्ध नहीं हो सकता है इसलिये वह मानस प्रत्यक्ष व्याप्ति को कैसे जान सकता है।

अतः व्याप्ति का ग्रहण इन्द्रिय प्रत्यक्ष और मानस प्रत्यख दोनों से नहीं हो सकता है, अतः व्याप्ति के ग्राहक तर्क प्रमाण को पृथक रूप से मानना आवश्यक है।

तर्क के बिना व्याप्ति का ग्रहण नहीं हो सकता है और व्याप्ति के बिना अनुमान प्रमाण नहीं हो सकता है। अनुमान की सिद्धि के लिये व्याप्ति की सिद्धि आवश्यक है इसलिये तर्क को अलग से प्रमाण मानना चाहिये

संयम स्वास्थ्य योग

ध्यान योग की आंखें

पद्मासनः दोनों पैर सामने फैलाकर रखें, पैर को मोड़ते हुये दाहिनी जांघ पर बायी एडी रखें व बायी जांघ पर दाहिनी एड़ी रखें। यदि दोनों पैर एक साथ नहीं रख सकते हो तो एक ही एड़ी व पंजा जांघ पर अर्ध पद्मासन लगा सकते हैं। इस आसन को करते समय रीढ़ बिल्कुल सीधी होनी चाहिये।

सावधानी: इस आसन को करने के पूर्व पैरों को शरीर संचालन से लचीला अवश्य बनायें। इसके लिये पैरों वाले शरीर संचालन के अभ्यास अवश्य करें। साईटिका व स्लिप डिस्क के रोगी इस आसन को कदापि न करें।

लाभः इसे करने से मानव शरीर की स्थिरता बढ़ती है। सफल ध्यान करने की यह आसन प्रथम सीढ़ी है। इसके नियमित अभ्यास से शारीरिक, मानसिक समस्याओं से छुटकारा मिलता है। इसके अभ्यास से पाचन प्रणाली में सुधार आता है।

व्रजासनः आसन पर दोनों पैरों को घुटनों से मोड़कर दोनों एडियों पर बैठ जायें। पैर के अगूँठे आपस में मिले रखें। पैर के तलवे के ऊपर निलम्ब रहे। इस अवस्था में कमर व पीठ सीधी रहे। हाथों को घुटने पर रखें। इसे 5 से 30 मिनट तक कर सकते है।

लाभः व्रजासन से शरीर एक दम सीधा रहता है। पाचन शक्ति तेज होती है, शरीर वज्र के समान शक्तिशाली होता है।

शशक आसनः ब्रजासन की स्थिति में बैठ जायें। सामने से श्वास भरते हुये ऊपर ले जायें। दोनों हाथों को कानों से चिपका कर रखें।

दोनों हाथों के मध्य गर्दन रखें। श्वास छोड़ते हुये धीरे-धीरे नीचे झुकते जायें। दोनों हाथों को सामने फैलाकर रखें। पूर्ण स्थिति में श्वास प्रश्वास सामान्य रखें। इसकी 10 आवृत्ति करें। प्रत्येक स्थिति में 2.5 मिनट अपनी क्षमतानुसार रहें।

लाभः इसके अभ्यास से गर्दन, रीढ़ व कंधे लचीले होते हैं महिलाओं के प्रजनन संबधी रोग इसके अभ्यास से दूर होते है। इसके नियमित अभ्यास से मन शान्त होता है।

ऊष्टासनः व्रजासन में बैठकर, घुटने के बल खड़े हो जायें। दोनों हाथों को धीरे-धीरे सिर की ओर उठाते हुये पीछे की ओर ले जायें। हाथों से दोनों पैर की पिण्डलियों को पकड़

ले पूर्ण स्थिति मेंआने पर सिर को लटका दे। अपने सीने को ऊपर की ओर तानें इस स्थिति में अपनी क्षमतानुसार कुछ देर रहें।

लाभ : इन आसन को करने से पाचन व प्रजनन संबधी रोग दूर होते हैं। यह आसन पीठ को शक्ति प्रदान करता है।

अर्द्धमत्स्येन्दासनः दोनों पैरों को सामने की ओर फैलाकर बैठ जायें। दाहिने पैर को सीधा जमीन पर बायें घुटने के बाहर की ओर रखिये। बायें पैर को दाहिने और मोड़े। एड़ी दाये निलम्ब के पास रखें। बाये हाथ को दायें पैर को बाहर की ओर रखें। दाहिने पैर या टखने को पकड़े।

दायां पैर बायी भुजा के अधिक से अधिक पास रखें। दायां हाथ पीछे की ओर रखें। शरीर को दायी ओर मोड़े। गर्दन व पीठ अपनी क्षमतानुसार मोड़ने का प्रयास करें। कुछ देर इस अवस्था में रहे धीरे-धीरे पूर्व स्थिति में आ जायें। इस क्रिया विपरीत स्थिति में करें। कमर को मोड़ते समय श्वास बाहर निकालें पूर्ण स्थिति में श्वास-प्रश्वास सामान्य रखें। पूर्व स्थिति में आते समय बाहर निकालें।

लाभ : इसके अभ्यास से रीढ़ लचीली होती है। पाचन अंग व पेन क्रिया इसके अभ्यास से सक्रिय होती है। वातरोग को दूर करने में यह अभ्यास लाभप्रद है।

पश्चिमोत्तासनः हथेलियों को जांघ पर रखते हुये पैरों को सामने की और फैला यें। शरीर को धीरे-धीरे आगें की ओर झुकाते जायें। इस स्थिति में पंजों को पकड़ने की कोशिश करे। सिर घुटनों को स्पर्श करने लगे।

नये अभ्यासी इसका अभ्यास अपनी क्षमतानुसार झुककर ही करें। पूर्ण स्थिति में अपनी क्षमतानुसार रूकें। सामने की ओर झुकते समय धीरे-धीरे श्वास छोड़े। पूर्ण स्थिति में श्वास प्रश्वास सामान्य रखें।

लाभः इसका अभ्यास पेट की चर्बी कम करता है। इसके अभ्यास से गुर्दें लीवर क्लोम व वृक्व क्रियाशील होते हैं।

योग मुद्रा/ मंडुक आसनः किसी भी सुखकर आसन वज्रासन पद्मासन सुखासन में बैठ जायें। दोनों हाथों की मुठ्ठी बांधे, हाथों की मुठ्ठी को नाभि के आसपास रखें श्वास छोड़ते हुये आगे झुक जायें। पूर्ण सिथति में सामान्य धीमा श्वास चलने दें। अपनी क्षमतानुसार कुछ देर रूकें। धीरे-धीरे श्वास भरते हुये ऊपर उठ जायें।

लाभः यह पाचन संबधी रोगों बहुत लाभकारी है। यह मणिपुर चक्र को जागृत करता है। मस्तिष्क व ज्ञान संबधी तंतु इसके अभ्यास से पुष्ट होते हैं।

आयुर्वेद चिकित्सक और एलॉपैथी डाक्टर क्या सहकारी बैंक और स्टेट बैंक जैसे होते हैं

❋ डॉ. अरविन्द जैन, भोपाल ❋

भारत वर्ष में वैसे आयुर्वेद, यूनानी, होमियोपैथी और मॉडर्न मेडिसिन (एलॉपथी) शासकीय मान्यता प्राप्त चिकित्सक होते हैं और सम्बंधित बोर्ड या कौंसिल से मान्यता प्राप्त ही चिकित्सा करते हैं या कर सकते हैं। एक गांव में दोनों बैंक हैं जैसे स्टेट बैंक और सहकारी बैंक पर दोनों का स्तर में अंतर सरकार रखती हैं जबकि दोनों पैसों का और सुविधाओं का काम करती हैं।

मध्यप्रदेश में वर्तमान में एन.एच.एम. के अंतर्गत 5600 पद रिकत हैं, स्नातकोत्तर चिकित्सक के 392 में से 73 पद भरे हैं, चिकित्सा अधिकारी के 368 पद राइट हैं और अन्य पदों की स्थिति और खराब हैं। मजे की बात यह हैं कि भारतीय जनता पार्टी के एक विधायक कह रहे हैं कि यह समस्या वर्तमान सरकार के समय की नहीं हैं। बात सही हैं कारण आजकल संतान उत्पत्ति गर्भधारण के दिन से मानी जाती हैं ना की पैदा होने के दिन से।

यह समस्या एक दिन की नहीं वर्षो से चली आ रही है। पूरे प्रदेश में प्रभारियों का राज्य हैं विभाग में संचालक से लेकर जिला स्तर के अधिकारी प्रभारी होते हैं, उससे सरकार को दो फायदे होते हैं। पहला कम वेतन में काम करने वाले मिल जाते हैं और दूसरा प्रभारी अपने पद से न हटा दिया सो वह वरिष्ठों का आदेश पालन करते रहते हैं और प्रशासकीय अनुभव न होने से कार्यलयीन कार्यो में अनियमितता होने से ये दूध देने वाली गाय हो जाती हैं। पद रिक्त रहने से कोई भी काम प्रभावित होने पर बहाना मिल जाता हैं कि कोई काम करने वाला नहीं है।

सरकार वर्तमान में स्वास्थ्य सेवायें सुधारने के लिये कटिबद्ध हैं। बिना मानव, मानव संसाधन के, कारण हम जहाँ पेपरलेस ऑफिस चलाना चाह रहे हैं वैसे ही सब विभागों में मानवरहित काम सम्पादित करना चाह रहें हैं क्या संभव है ? आज हर जगह मेडिकल कॉलेज, हॉस्पिटल की घोषणा की जा रही हैं पर वहाँ पर कोई पद नहीं भरे जायेंगे। तब कैसे वहां की संस्था कार्यरत रहेंगी। मात्र घोषणा करने और संस्था खोलने से अपने कर्तव्य की इतिश्री करना हैं तो कोई बात नहीं पर यदि वास्तविक सुविधायें देना हैं तो वहां पर पूरी साज सज्जा और अमला होना चाहिये अन्यथा सब ढकोसला हैं।

एक समाचार के माध्यम से यह जानकारी मिली कि माननीय राज्य पाल महोदय, शिवराज सिंह पूर्व मुख्यमंत्री और मोहन भागवत की स्वास्थ्य सुरक्षा के लिये बी.ए.एम.एस चिकित्सक की ड्यूटी लगाई गयी इसमें बहुत आश्चर्य हो रहा हैं, कोई भी माता पिता की जितनी संतानें होती हैं वे सब प्रिय होती हैं। जब सब माननीय आयुर्वेद की प्रशंसा करते नहीं थकते तब न उपाधिधारियों के प्रति भेदभाव क्यों ? जब तक आयुर्वेद मंत्रालय को मुख्य धारा में नहीं जोड़ेंगे तब तक आप उनकी योग्यता का उपयोग कैसे कर सकेंगे, जैसा कि सेना के जवान शहीद माने जाते हैं और पेरा मिलिटरी फॉर्स को शहीद का दरजा नहीं दिया जाता हैं। आयुर्वेदा विभाग की डिग्री योग्यता को समान माना जाता हैं तब उनके साथ भेदभाव क्यों ? यदि उनकी शिक्षा स्तरीय

नहीं हैं तो इसमें चिकित्सकों की क्या गलती हैं, यह जिम्मेदारी शासन की होती है। उन्हें दोयम दर्जे का क्यों माना जाता है। पेरा मिलिट्री फॉर्स को दोयम दर्जे का माना जाता हैं। क्या उनकें कर्तव्य काम में कोई अन्तर होता है ? पर सरकार इस प्रकार का भेदभाव करके फूट डालकर एक नहीं होने देती।

आज एलॉपथी की कोई भी संस्था पहले निर्मित होती है फिर पदस्थापना होती हैं इसी प्रकार आयुर्वेद विभाग में पहले पदस्थापना की जाती हैं फिर भवन मिलता हैं। वह भी किराये का इसीलिये कहा जाता हैं कि उनके व्यवहार सहकारी बैंक जैसा होता हैं ओर एलॉपथी का स्टेट बैंक जैसा होता हैं, यह अंतर सरकार द्वारा किया जाता है जबकि दोनों के उद्देश्य समान हैं।

आज विश्व जहाँ अंग्रेजी दवाओं के दुष्परिणामों से जूझ रहा हैं विश्व आयुर्वेद को विश्वास के साथ देख रहा हैं और इसमें आशातीत सफलता भी मिल रही है, सरकार ने यह अच्छा कदम उठाया हैं कि मेडिकल कॉलेजों में भी आयुर्वेद का कोर्स कराया जाय, जिस प्रकार आयुर्वेद चिकित्सकों के पास एक विकल्प होता है वैसा एलॉपथी वालों के पास भी हो सकेगा, जबकि सबका मुख्य ध्येय मानवता की सेवा करना और रोग मुक्त समाज का निर्माण करना हैं। आयुर्वेद रोग के बचाव के साथ रोग की चिकित्सा करते हैं जबकि अन्य विज्ञान रोग का इलाज करते हैं बचाव पर ध्यान नहीं देते। आयुर्वेद कारण को दूर करता हैं जबकि अन्य विज्ञान लक्षणों पर ध्यान देकर इलाज देते हैं इसके लिये सब विभागों को एक जैसा व्यवहार करके सद्भावना रखकर सब क्षेत्रों में समानता का अवसर देना योग्य हैं।

कविता

राह अहिंसा चलो रे

❋❋ रचयिताः ऐलक सिद्धांतसागर ❋❋

जीवन है अनमोल इसे तुम खतरे में मत डालो रे।
घर में अपने सुख से रहना झूठा अहम न पालो रे॥
सबके हित की बात सही है अपने घर में रहना रे।
सबसे दूरी बना के रखना कोरोना से बचना रे॥
21 दिन की बात कही है मोदी जी की मानो रे।
कोरोना की चाल निराली इसको समझ न पाओगे॥
झूठी शेखी शान शोकत में आफत गले लगाओगे।
भूल जाओ सब सुख सुविधायें व्यसन वासना टालो रे॥
णमोकार में बहुत शक्ति है गीत प्रभु के गाओ रे।
राम नाम का जाप जपो मन संकट मुक्ति पाओ रे।
करूणा स्त्रोत बहाकर मन में राह अहिंसा चालो रे॥

मुनिवर समयसागर जी और योगसागर जी बने निर्यापक मुनि

✻ सुरेश जैन (आई.ए.एस), भोपाल ✻

मुनि समयसागर जी और योगसागर जी को निर्यापक मुनि बनाने की औपचारिक घोषणा सोशल मीडिया द्वारा की गई है। उन्हें विशेष उत्तरदायित्व एवं कर्तव्य सौंपे गये हैं। आचार्य श्री विद्यासागर जी द्वारा समयसागर जी को ललितपुर में 28 नवम्बर 2018 को और योगसागर जी को 8 मार्च 2019 को जैन तीर्थ बीना (बारहा) में निर्यापक मुनि के पद प्रदान किये गये हैं। उन्हें निर्यापक मुनि की उपाधि प्रदान की गई है और उन्हें संघ संचालन से संबधित महत्वपूर्ण अधिकार सौंपे गये हैं। यह उल्लेखनीय है कि मुनिवर योगसागर जी गत चार दशकों से सहयोग दे रहे है। उनकी प्रशासनिक क्षमता और प्रबंधन पटुता सराहनीय रही है। चार दशकों बाद उनकी असाधारण योग्यता को औपचारिक और सामाजिक मान्यता दिये जाने के अवसर पर चालीस वर्षों से उनके निकट रहे हम सब बड़े प्रसन्न है।

वरदत्तादि पंच ऋषिराजों की निर्वाण भूमि, भगवान पार्श्वनाथ की समवसरण स्थली एवं बुंदेलखंड प्रांत के प्राचीनतम जैन तीर्थ नैनागिरि में दिनांक 06 मार्च 2018 को आचार्य विद्यासागर जी के वरिष्ठतम शिष्य मुनि श्री समयसागर जी महाराज 30 वर्ष बाद अपने संघस्थ तीन मुनियों के साथ नैनागिरि पधारे। श्री सुरेश जैन (आई.ए.एस) के नेतृत्व में जैन तीर्थ के पदाधिकारियों, सदस्यों, क्षेत्रीय जैन समाज और सभी ग्राम वासियों ने सहस्त्रों की संख्या में एकत्रित होकर मुनि श्री की भव्य आगवानी की। मेघों ने हल्की-हल्की बूंदों से मुनिवर का स्वागत किया।

मुनिश्री ने नैनागिरि को प्राचीनतम तथा शांति प्रदायक तीर्थ क्षेत्र बताते हुये आत्म कल्याण का श्रेष्ठ स्थान घोषित किया। वरदत्तादि पंच ऋषिराजों की निर्वाण भूमि के स्मृति में बन रहे सिद्ध मंदिर का अवलोक किया एवं शीघ्र कार्य पूर्ण होने का आशीर्वाद प्रदान किया।

7 मार्च 2018 को प्रातः मुनि संघ ने तीर्थराज पर स्थित 56 जिनालयों की वंदना की एवं चौबीस जिनालय में बड़े ही भक्ति भाव से अभिषेक एवं शांतिधारा को मंगलमय सान्निध्य प्रदान किया। मुनिश्री समयसागर जी का 39वाँ दीक्षा दिवस बड़े ही उत्साह पूर्वक मनाया गया जिसमें समीपस्थ नगरों, ग्रामों एवं कस्बों के लगभग 1500 लोगों ने सहभागिता की। मुनि श्री समयसागर जी को बाबा दौलतराम वर्णी जी द्वारा नैनागिरि में सन् 1902 में विरचित गोम्मटसागर छंदोदय जो कि श्री सुरेश जैन (आई.ए.एस) द्वारा संपादित और भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है, भेंट किया गया। संध्याकालीन वेला में सभी ने मुनि संघ की आरती की।

आचार्य विद्यासागर जी द्वारा विरचित मूकमाटी महाकाव्य वर्ष 1987 में नैनागिरि में पूर्ण हुआ था। उसकी स्मृति को स्थाई स्वरूप देने के लिये पूरे राष्ट्र में निर्मित गीता और मानस भवनों की भांति इस अवसर पर नैनागिरि में मूकमाटी भवन बनाने की घोषणा की गई। सभी उपस्थिति

महानुभावों ने इस निर्णय की सराहना की। मुनिसंघ ने अपना आशीर्वाद दिया। मूकमाटी भवन का निर्माण प्रगति पर है।

वरिष्ठ मुनिवर योगसागर जी और उनके साथी मुनिवर 18 नवम्बर 2018 को नैनागिरि पधारे। उन्होंने नैनागिरि तीर्थ की वंदना की। सिंघई सतीशचन्द्र केशरदेवी जैन विद्यालय में पहुंचकर छात्रों को अपना आशीर्वाद दिया। मुनिवर प्रमाण सागर जी की प्रेरणा से बैनाड़ा ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज आगरा के सहयोग से पर्वत पर संस्थापित संयम कीर्ति स्तंभ का अवलोकन कर भरपूर शब्दों में उसकी लोकेशन , ऊंचाई और गुणवत्ता की सराहना की।

सिद्ध शिला से मोक्ष गये आचार्य वरदत्त की जय बोलकर 19 नवम्बर को प्रातः मुनि योगसागर जी सिद्धशिला पर विराजमान हुये। सिद्धशिला की गुफा में बैठकर उन्होंने और उनके संघस्थ साधुओं ने सामायिक की। विभिन्न शिलाओं पर विद्यमान अकृत्रिम चरण चिन्हों के दर्शन किये। चालीस हजार साल पुरानी इस जैन सांस्कृतिक विरासत की सराहना करते हुए समाज को सिद्धशिला के समीपस्थ अकृत्रिम चरण चिन्हों के दर्शन के लिये प्रेरित किया। अनेकों व्यक्तियों ने विशाल जलकुण्ड में स्नान कर प्रसन्नता प्राप्त की। इस समय गुरुदेव और उनके साथी मुनिवरों की प्रसन्न मुखमुद्रा देखकर जन-जन को बड़ी प्रसन्नता हो रही थी। गहन वन में पर्वत के पीछे सेमरा पठार नदी के उत्तर में स्थित भगवान नेमिनाथ के काल की चालीस हजार साल पुरानी सिद्धशिला का संरक्षण करने और उसके प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से योगसागर जी की सिद्धशिला यात्रा सराहनीय और सभी मुनिवरों के लिये अनुकरणीय है।

मुनि समयसागर जी का पूर्व नाम श्री शांतिनाथ जैन अष्टगे, पिता का नाम श्री मलप्पा जी अष्टगे और माता का नाम श्रीमती श्रीमंती अष्टगे है। जन्म के क्रम से उनके बड़े भाई श्री महावीर प्रसाद जी प्रथम, आचार्य विद्यासागर जी (विद्याधर जी) द्वितीय और अनंतनाथ जी (मुनि श्री योगसागर जी) तृतीय है। उनका जन्म 26 अक्टूबर 1958 को ग्राम सदलगा में हुआ था। उन्होंने मराठी माध्यम से हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की है। उनकी क्षुल्लक दीक्षा सोनागिरि में 18 दिसंबर 1975 को उनकी ऐलक दीक्षा 31 अक्टूबर 1978 को जैन तीर्थ नैनागिरि में और उनकी मुनि दीक्षा 8 मार्च 1980 को सिद्धक्षेत्र द्रोणागिरि में हुई थी। उनके दीक्षा गुरु आचार्य विद्यासागर जी महाराज है।

मुनि योगसागर जी का पूर्व नाम श्री अनंतनाथ जैन अष्टगे, पिता का नाम श्री मलप्पा जी अष्टगे और माता का नाम श्रीमती श्रीमंती अष्टगे है। जन्म के क्रम से उनके बड़े भाई श्री महावीर प्रसाद जी प्रथम और आचार्य विद्यासागर जी (विद्याधर जी) द्वितीय है। उनके छोटे भाई श्री शांतिनाथ जैन अष्टगे (मुनि समयसागर) चतुर्थ है। उनका जन्म 26 सितम्बर 1956 को ग्राम सदलगा में हुआ था। उन्होंने मराठी माध्यम से हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की है। क्षुल्लक दीक्षा 18 दिसंबर

1975 को सोनागिर में, ऐलक दीक्षा 19 नवम्बर 1977 को कुण्डलपुर में और उनकी मुनि दीक्षा 15 अप्रैल 1980 को सागर में हुई थी। उनके दीक्षा गुरु आचार्य विद्यासागर जी महाराज है। इन दोनों मुनिवरों के पिता श्री मल्लिसागर जी महाराज और माता आर्यिका समयमती माता जी थी। उनकी दोनों बहिनें शांता जी और सुवर्णा जी बाल ब्रम्हचारिणी है।

समयसागर जी का समयोचित मौन और मंद-मंद मुस्कुराहट तथा योगसागर जी की मुखरता और स्पष्टवादिता हम सबको आकर्षित और प्रभावित करती है। इन दोनों अनुभवी संतों से मिलना और चर्चा करना बहुत सहज और सरल है। नैनागिरि प्रभृति अनेक स्थलों पर बैठकर उनसे चर्चा करने, उन्हें आहार देने और उनका मंगल आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये हमें और पूरे परिवार को अनेक सौभाग्यशाली अवसर प्राप्त हुये हैं।

पंचकल्याणक आध्यात्मिक जगत् का महापर्व होता है। वरिष्ठ मुनिवर समयसागर और योगसागर जी के स्वतंत्र सान्निध्य में गत वर्षो में बुन्देलखण्ड में अनेक पंचकल्याणक आयोजित किये गये हैं। दक्षिण भारत में जन्म लेकर वे उत्तर भारत में वे वर्ष 1976 से जैन संस्कृति का ध्वज दण्ड सम्हालें हुये आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ रहे हैं। वे बुन्देलखण्ड में प्रखर आध्यात्मिक क्रांति की बहार बहा रहे हैं। उन्होंने हमारे आचार्य प्रवर की विजय वैजयंती अपने हाथों में थामकर जैन संस्कृति के संप्रसारण और परिप्रसारण में महती भूमिका का निर्वाह किया है।

योगसागर जी ने अपने संघ का संचालन अलिखित किन्तु कालजयी आध्यात्मिक संविधान के सूत्रों के अनुरूप किया। उन्होंने आत्मानुशासन और संघ के अनुशासन के बीच आदर्श समन्वय और संतुलन स्थापित किया। संघ की स्वतंत्रता और नियंत्रण के बीच आदर्श सेतु का निर्माण किया। संघ को वैचारिक समृद्धि प्रदान की। नगर, रथ और चक्र की भांति संघ का सतत संचालन अत्यधिक कठिन कार्य है। उन्होंने संघ के सभी आधारभूत अंगो को पूरा सम्मान दिया। एक ओर आचार्य, मुनि, आर्यिका, ब्रम्हचारी और दीदियों को पूरा सम्मान दिया तथा दूसरी ओर सभी श्रावक और श्राविकाओं को आत्मीय स्नेह दिया। वे सदैव संघ में पूरा अनुशासन बनायें रखकर संघ के सभी सदस्यों में रचनात्मक दृष्टिकोण और विनय के गुण विकसित करते रहे। जिनवाणी का स्वाध्याय, सामायिक, ध्यान और योग की सभी प्रक्रियाओं का नियमित रूप से अनुसरण करते रहे। नैनागिरि में विराजे भगवान पार्श्वनाथ से प्रार्थना है कि उनका संघ चिरायु हो।

आचार्य विद्यासागर जी के संघ की आध्यात्मिक आस्था, आचार्य निष्ठा, अनुशासनबद्ध एकसूत्रता तथा समर्पणशीलता सराहनीय है। यह बहुत ही शक्तिशाली, चारित्र और अनुशासन प्रिय संगठन है। इस संघ में इन गुणों को विकसित करने में दोनों निर्यापक मुनिवरों की महत्वपूर्ण भूमिका का सराहनीय योगदान रहा है। आचार्य श्री के साथ ही दोनों मुनिवरों ने हमारे तथा हमारी

पत्नि न्यायमूर्ति विमला जी के जीवन को असाधारण सारवत्ता एवं गुणवत्ता से आप्लावित किया है।

मध्यप्रदेश में विहार के प्रांरभिक वर्षों में आचार्य विद्यासागर जी वर्ष 1977 में 22 फरवरी को अपने संघस्थ तीन क्षुल्लकों-समयसागर, नियमसागर और योगसागर जी के साथ नैनागिरि पधारें थे। उन्होंने नैनागिरि में तीन चातुर्मास (1978,1981,1983) और चार शीत और ग्रीष्मकालीन (1977,1979,1986,1987) वाचनायें की। आचार्य श्री ने अपनी आध्यात्मिक शक्तियों से बुन्देलखण्ड के सहस्त्रों युवक/युवतियों को आकर्षित किया और नैनागिरि में शताधिक साधुओं को दीक्षित और प्रशिक्षित किया। पूरे प्रदेश में ही नही अपितु पूरे देश मेंआध्यात्मिक क्रांति के जनक बने गुरुदेव द्वारा नैनागिरि में दीक्षित आचार्य पुष्पदंत सागर, उपाध्याय गुप्तिसागर, मुनिवर समतासागर एवं सुधासगर आदि अनेक मुनिवर एवं गुरुमति जी, दृढ़मति जी, मृदुमति जी आदि अनेक आर्यिकायें पूरे राष्ट्र में अपने कीर्तिमान स्थापित कर रहें है।

नैनागिरि में भगवान पार्श्वनाथ की दिव्य देशना के शब्दों को ग्रहण कर आचार्य श्री ने आध्यात्मिक संदेश और संकेत प्राप्त किये हैं। उनके ऐसे अनुभव और संदेश मूकमाटी में अनेक स्थलों पर प्रत्यक्ष ओर अप्रत्यक्ष रूप से प्रतिध्वनित होते हैं। उनके प्रवचनों में गूंजते हैं। उन्होंने नैनागिरि में अपने आचार्यत्व को सार्थकता प्रदान की है। अपने आचार्यत्व को असाधारण आयाम दिये हैं।

आचार्य श्री के नैनागिरि प्रवास में अवसर पर श्री सुरेश जैन, तत्कालीन अपर कलेक्टर, इन्दौर के विशेष प्रयासों से तीर्थंकर के तत्कालीन संपादक डॉ. नेमीचन्द्र जैन के द्वारा दिसंबर 1978 में श्री नैनागिरि तीर्थ एवं आचार्य विद्यासागर विशेषांक (130 पृष्ठों) प्रकाशित किया गया था। आचार्य श्री पर केन्द्रित यह इतिहास में प्रथम उच्च स्तरीय विशेषांक है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 1978 में इस अंक की 5000 से अधिक प्रतियां पूरे देश में विद्वानों, श्रेष्ठियों और जन प्रतिनिधियों को प्रेषित की गई और उनके द्वारा विशेषांक की अत्यधिक सराहना की गई। इस विशेषांक के अनेक लेखों और चित्रों को देश की सुप्रसिद्ध पत्रिकाओं द्वारा पुनः प्रकाशित किया गया।

यह सुखद एवं सत्य है कि जैसे-जैसे मंदिर का निर्माण अपनी प्रगति पर आगे बढ़ा, वैसे ही वैसे आचार्य श्री अपनी आध्यात्मिक प्रगति पर बढ़ते रहे। जैसे ही मंदिर के शिखर पर ध्वजा स्थापित की गई, वैसे ही आचार्य श्री की कीर्ति पताका पूरे देश में नही अपितु पूरे विश्व में फैल गई। वृद्धिंगत हो गई।

मुनिवर समयसागर जी अधिकांश समय मौन रहकर अपनी गहन साधना करते रहे। मुनिवर योगसागर जी एक और अपनी सतत् साधना करते रहे तथा दूसरी और संघ का सुसंचालन और सुव्यवस्थापन करते रहे। पूरे संघ का जिनवाणी की साधना कराते रहे। आचार्य की सर्वोपरी मान्यता को सुस्थापित करते हुये मुनिवरों और आर्यिकाओं को आवश्यक महत्ता और स्वतंत्रता प्रदान करते रहे। उन्होने पूरे संघ को जीवंत और अनुशासित बनाये रखा है। पूरा संघ आचार्य

कुन्द कुन्द की शाश्वत विचारधारा पर चल रहा है। आध्यात्मिक प्रगति पथ पर आगे बढ़ रहा है। पूरी समाज का चतुर्मुखी विकास कर रहा है। उनकी क्षमता, समता और ममता को शत-शत प्रणाम। प्रभु से प्रार्थना है कि उनके संघस्थ दीपकों और ज्योतियों का प्रकाश हम सबको सदैव आलोकित करता रहे।

सत्तर और अस्सी के दशक में आचार्य विद्यासागर जी ने इन दोनों मुनिवरों तथा अन्य संघस्थ साधुओं के साथ नैनागिरि में तीन चातुर्मास और चार शीत/ग्रीष्मकालीन प्रवास किये। इस अवधि में अनेक नेतृत्व में पूरे संघ ने सतत रूप से सिद्धों की वंदना की। पार्श्वनाथ भगवान के समवसरण का निर्माण कराया। नैनागिरि प्रवास की इस अवधि में गुरुदेव विद्यासागर जी विश्व विश्रुत हो गये। आचार्य विद्यासागर जी के चरण चिन्हों पर चलते हुये मुनिवर समयसागर जी 6-7 मार्च, 2018 को नैनागिरि पधारे। उन्होंने नैनागिरि से मोक्ष पधारे सिद्धों और भगवान पार्श्वनाथ की वंदना की और 9 माह से कम की अवधि में ही वे निर्यापक मुनि बन गये। इसी प्रकार योगसगर जी ने 18-19 नवम्बर 2018 को नैनागिरि की वंदना की और वे भी तीन माह से कम की अवधि में निर्यापक मुनि बन गये।

आचार्य विद्यासागर जी के संघस्थ सभी वरिष्ठ मुनिवरों से हमारी प्रार्थना है कि वे भी निकट भविष्य में नैनागिरि की वंदना करें और नैनागिरि से मोक्ष पधारें सिद्धों और नैनागिरि के समवसरण में विराज रहे भगवान पार्श्वनाथ से आशीर्वाद प्राप्त कर निकट भविष्य में इसी प्रकार की सर्वोच्च आध्यात्मिक सफलतायें प्राप्त करें।

कविता

धरले समता अब तो ज्ञानी

✻✻ संस्कार फीचर्स ✻✻

कब आ जाये काले बादल, बता नहीं कोई सकता है
काले बादल से सूरज का, नव प्रताप भी रूक सकता है
होते होते स्वर्णिम भोर भी, सूरज का मुख ढक सकता है
उम्मीदों पर सुनो कभी भी, पानी भी तो फिर सकता है
खड़ी पकी जब फसल खेत में, देख खुशी से मुस्काये जन
लहराती खेती पर बुल बुल, खाये मीठे मीठे फल कण
हर किसान चेहरा खिलता, हर्षित होता उसका मन
पानी बरसे ओले गिरते, अनायास आये विनाश क्षण
विधि विडम्बना समझले प्राणी, कभी रिमझिम कभी सूख पानी
किस्मत का ये खेल समझते, क्यों हंसता क्यों रोता प्राणी
प्रभु शरण प्रभु वचन सत्य है, उर धर ले रे शाश्वत प्राणी
भाग्य के आगे कुछ न होता, समता धर ले अब तो ज्ञानी

चलो देखें यात्रा

कासनगांव

खुदाई में महावीर स्वामी की सबसे बड़ी प्रतिमा प्राप्त 26.08.1997 को जैन तीर्थंकरों की प्राचीन अष्टधातु की दुर्लभ मूर्तियाँ खुदाई में मिली है। जो कि 600-700 वर्ष प्राचीन हैं। भगवान पार्श्वनाथ की 4 प्रतिमायें, मल्लिनाथ, मुनिसुव्रतनाथ, अभिनंदननाथ, अनंतनाथ, आदिनाथ भगवान की। प्रतिमा 2 चरण यंत्र इत्यादि खुदाई में प्राप्त हुये हैं। मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हो चुकी हैं। प्रतिदिन काफी संख्या में लोग दर्शनार्थ आते हैं।

प्रबंध व्यवस्था: श्री दिगम्बर जैन समाज

समाज कासन: अध्यक्ष श्री दीपक जैन, गुड़गाँव

मंत्री :श्री शैलेष जैन गुड़गांव (09810194356)

श्री नरेशचंद्र जैन दिल्ली (09811140154)

आवागमन के साधन: रेल्वे स्टेशन दिल्ली 50 किमी. गुड़गांव 20 किमी. बस स्टैण्ड- मानेसर 3 किमी., मानेसर से टेम्पो से पहुँचने का सड़क मार्ग दिल्ली- जयपुर हाइवे सरलतम मार्ग

क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधायें: आवास कमरे अटैच बाथरूम 8 कमरे (बिना बाथरूम), हॉल-1

यात्री ठहरने की कुल क्षमता: 100

भोजनशाला: अनुरोध पर निःशुल्क, विद्यालय नहीं

औषधालय: नहीं, पुस्तकालय नहीं

आचार्य श्री विद्यासागर कृत निजामृत पानः समीक्षात्मक अध्ययन

ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर

विश्ववन्द्य आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी रचित अध्यात्म की महान् कृति समय प्राभृत पर व्याख्याकार आचार्य अमृतचन्द जी ने आत्म ख्याति टीका का प्रणयन किया है। प्रस्तुत टीकारूपी भवन के शिखर-समान मध्य-मध्य में कलश काव्यों को समाहित किया है। इन कलश काव्यों से समयसार की आध्यात्मिकता मुखरित हुई सी जान पड़ती है। अध्यात्म अमृत का स्थायी भाव इनमें उद्दीपित होता हुआ विशेष मधुरिम गति से संचरण करता हुआ छलकता हुआ उत्कृष्टता को प्राप्त दृष्टिगोचर होता है। इसी हेतु मनीषियों ने इस कलश काव्य को **''अध्यात्म-अमृत-कलश''** सार्थक संज्ञा प्रदान की है। पण्डित प्रवर बनारसीदास के शब्दों में **नाटक सुनत हिय फाटक खुलत है।** यह सार्थक है, अत्यन्त उपयोगी है।

वर्तमान में सन्त शिरोमणि परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ज्ञान-ध्यान तपोलीन होकर अध्यात्म क्षेत्र में अग्रणी हैं। सन्मति युग के ऋषि तुल्य उनका जीवन स्व के साथ परहित में सदैव व्यतीत हो रहा है। वे जिनवाणी की सेवा में अपने गुरु स्व. परम पूज्य आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज की परम्परा को अग्रेसरित कर रहे हैं। उन्होंने अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग द्वारा जो अनुभव प्राप्त किया है, उसे निरन्तर लेखन, वाचन और प्रवचन के माध्यम से प्रसारित कर रहे हैं। उन्होंने अध्यात्म की विविध विधाओं में अनेकों ग्रंथों की रचना की है। इस प्रकार वे निर्ग्रन्थ होकर भी समग्रन्थ हैं। धर्म प्रभावना ही उनका परम एवं चरम लक्ष्य है। वे इस हेतु उत्कृष्ट मानदण्ड सिद्ध हुये हैं।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने वीर संवत् 2504 में उपरोक्त समयसार कलश का रोचक पद्यानुवाद किया था। निम्न दोहे से यह प्रकट है,

'' देव गगन-गति-गन्ध की वीर जयन्ती आज।
पूर्ण किया इस ग्रन्थ को निजानन्द के काज'' ॥ प्रस्तुत ग्रंथ का अन्तिम छंद ॥

देव (4 भेद), गगन (0), गति (5 भेद) सिद्धगति युक्त), गन्ध (2 भेद) अभीष्ट हैं। अंकानां वामतों गतिः के आधार पर वीर निर्वाण संवत् 2504 में महावीर जयन्ती के दिन (दमोह नगर में) स्वान्तः सुखाय यह ग्रन्थ पूर्ण किया गया।

निजामृत पान नाम की सार्थकता- जिनानन्द के काज उद्देश्य के अतिरिक्त इस ग्रंथ में सभी जीवों को निजात्मामृत (अनुभव) पान करने की प्रेरणा है। तीसरे यह ग्रन्थ निजानन्द रूप अमृत (पानक) से परिपूर्ण है, अतः नामकरण यथोचित ही है। आचार्य श्री ने इस ग्रंथ का प्रयोजन निम्न दोहे में प्रकट किया है।

अमृत कलश का मैं करूँ, पद्यमयी अनुवाद।
मात्र कामना मम रही, मोह मिटे परमाद ॥7॥

ग्रंथ परिमाण- आचार्य अमृतचंद कृत समयसागर कलश के पद्यों की संख्या 278 है। तदनुसार ही हिन्दी पद्यानुवाद के रूप में शब्दों की संख्या भी उतनी है। अर्थात् प्रत्येक कलश का अनुवाद एक ही छन्द में किया गया है। छन्द की ज्ञानोदय संज्ञा प्रकट करती है कि ज्ञान इनमें निरन्तर उदित

रहकर अनुभव के रूप में विद्यमान है। अमृतचन्द जी के कलश काव्यों में गूढ़ रहस्यपूर्ण क्लिष्ट शब्दावली का प्रयोग भी है एवं वे कलश गम्भीर विस्तृत अर्थ को लिये हुये हैं। परवर्ती आचार्यों एवं विद्वानों ने इस कृति को गागर में सागर माना है। ऐसे विशिष्ट एक कलश काव्य का अनुवाद एक ही छन्द में रचकर उसका भाव हृदयग्राही एवं बोधगम्य बना देना ज्ञान एवं काव्य कौशल ही माना जावेगा। 278 पद्यों के साथ ही 42 दोहों एवं 1 बसंततिलका छन्द को भी समाविष्ट कर सौन्दर्य छटा को द्विगुणित कर दिया है।

ग्रन्थ में प्रथम ही आद्य मंगलाचरण रूप 7 दोहा छन्द हैं। तीन दोहों में वर्तमान तीर्थशासक, भगवान महावीर, देव और शास्त्र एवं गुरु का स्तवन है। पुनः एक दोहे में आचार्य कुन्दकुन्द, आचार्य अमृतचन्द्र तथा दीक्षागुरु आचार्य ज्ञानसागर जी को नमस्कार किया गया है एवं एक दोहे में प्रयोजन व्यक्त किया है। तत्पश्चात् प्रत्येक अधिकार के अन्त में अधिकारके प्रतीकार्थ रूप में दो-दो दोहे प्रकट किये हैं। ये दोहे अधिकार के सार ही है। ग्रन्थ के अन्त में समापन संज्ञा से दो दोहे ग्रंथ रचना की फलकामना रूप से सुशोभित हैं। पुनश्च अन्तिम मंगल रूप तीन दोहे, सुफल रूप एक दोहा है एवं मंगल कामना हेतु 7 दोहे रचित हैं। लघुता एवं मूल सभ्यता रूप एक दोहा है। अन्त में स्थान एवं रचना समय परिचय हेतु दो दोहे सुशोभित हैं। ये दोहे तो कलश पर कलश ही प्रतीत होते हैं।

आचार्य विद्यासागर जी ने निजामृत पान में समयसार कलश के स्याद्वाद अधिकार को दो भागों स्याद्वाद अधिकार और साध्य साधक अधिकार पृथक रूप से निरूपित किये हैं। कुल मिलाकर निम्न हैं।

1. जीवाजीवाधिकार 2. कर्तृकर्माधिकार, 3. पुण्यपापाधिकार, 4. आश्रव अधिकार, 5. संवर अधिकार, 6. निर्जरा अधिकार, 7 बन्ध अधिकार, 8. मोक्ष अधिकार, 9. सर्व विशुद्ध ज्ञानाधिकार, 10. स्याद्वाद अधिकार, 11. साध्य साधक अधिकार। आचार्य श्री ने पं. बनारसी दास के समयसार नाटक की भांति ही स्याद्वाद अधिकार के 17 कलशों को स्याद्वाद अधिकार में तथा 15 कलशों को साध्य साधक अधिकार में अनूदित किया है। शेष यथावत् हैं। यथास्थान 42 (अथवा 45 तीन दोहे पुनरावृत्ति सहित) दोहों की समष्टि से ग्रंथ बहुत सुन्दर रूप में गठित है। एतद् अतिरिक्त 1 बसंत तिलका छन्द समापन रूप में है। कुल 324 पद्यों की समष्टि है।

भाषा, शैली एवं काव्यगत विशेषतायें- आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज मूल रूप से कन्नड़ भाषी है। अब से 20 वर्ष पूर्व, निजामृत पान के रचना काल से पूर्व उत्तर भारत में अल्प समय के प्रवास में हिन्दी भाषा के लेखन, प्रवचन में उन्होंने जो निपुणता प्राप्त की, वह श्लाध्य है। निजामृत पान का पाठक यह अनुभव नहीं कर पाता कि वे मूलतः कन्नड़भाषी हैं। मातृभाषा से अन्य भाषा को बोल लेना अन्य बात है किन्तु अनुवाद रूप में काव्य रचना दुःसाध्य ही होता है। आचार्य श्री की इस काव्य कृति में भले ही भाषा-परिमार्जितता पूर्ण रूप में प्रकट न होती हो पर भाव व्यक्त करने में यह समर्थ है। वाक्य विन्यास में भी अपेक्षाकृत सुगठन कहीं-कहीं कम दृष्टिगोचर होता है, एवं किन्हीं-किन्हीं स्थलों पर व्याकरण-सम्मतता की न्यूनता प्रतीत होती है। वर्ण्य विषय के हार्द को खोलने हेतु एवं छन्द की मात्रिकता बनायें रखने हेतु शब्दों में तोड़ मरोड़ भी दृष्टिगोचर होती है, तथापि वह बाधक नहीं है। कहा भी है,

शब्द यदि हो समीचीन मार्ग से सटे मिथ्यात्व से नटे
परायण से कर्म भार अवश्य घटे, अवश्य घटे।

सन्त की भाषा विशुद्ध हृदय का प्रकटीकरण होती है, अतः वह श्रोता पर उज्जवल, अमिट प्रभाव छोड़ती है एवं विध ही निजामृत पान का पाठक भी अध्यात्म एवं शान्तरस से सराबोर हो जाता है। पुनः परायण करने व कंठस्थ करने से उसका आनन्द कई गुना बढ़ जाता है। यथार्थ है,

सन्त की भाषा, विषय कषाय के अन्त की भाषा।
आत्मानुभव बसन्त की भाषा, सविकल्प पर्यन्त की भाषा॥

उपर्युक्त प्रकार से भाषा का एकादि उदाहरण द्रष्टव्य है,

सहज ज्ञान से स्व पर भेद को परमहंस यह मुनि नेता।
दूध दूध को नीर नीर को जैसा हंसा लख लेता॥
केवल अलोल चेतन गुण को अपना विषय बनाता है।
कुछ भी फिर करता मुनि बन मुनि पन यहीं निभाता है॥59॥
कदापि मिलकर परिणमते नहिं दो पदार्थ नहिं, सम्भव हो।
तथा एक परिणाम न भाता दो पदार्थ में उद्भव हो॥
उभय वस्तु में उसी तरह ही कभी न परिणति इक होती।
भिन्न-भिन्न जो अनेक रहती एकमेक ना इक होती॥53॥

लोकहित एवं अध्यातम क्षेत्र में जितना महत्त्व भाव को होता है, उतना भाषा एवं शब्द रचना का नहीं होता। यही कारण है कि कबीर की निरी गँवारूँ, खिचड़ी, फक्कड़ी एवं घुमक्कड़ी रचनायें आज भी आमजनों की कण्ठहार बनी हुयीं है। एवं पं. बनारसीदास के समयसार कलश की ही व्याख्या रूप लिखे समयसार नाटक की भाषा स्खलित होने पर भी हृदय का स्पर्श करती है। आचार्य श्री की भाषा तो पर्याप्त सुधार को लिये हुये है एवं भावों का प्रकाशन पर्याप्त रूप से सहज स्वाभाविक है। यतः समयसार अन्तः करण से विरक्त गृही अथवा सन्तों का अध्येय है, अतः आज भी उनके संघस्थ जनों में एवं प्रौढ़ स्वाध्याशील वर्ग में निजामृतपान निरन्तर पाथये बना हुआ है। उसका उततम प्रभाव स्थापित है।

आचार्य श्री की काव्य शैली समयसार के विषयानुरूप ही कुछ गम्भीर एवं अलौकिक है। ऐसा होना स्वाभाविक ही है। सरसता, सरलता, खुलापन उसमें समाविष्ट है। उसमें रूक्षता न होने से रोचक है। कतिपय स्थलों पर प्रवाह की कुछ न्यूनता काव्य रस के रसिकों को अवश्य खटकेगी किन्तु आत्महितगवेषी जनों को तो मानों इस शान्त रस दर्पण में परमातमा का दर्शन होता है। जैसे सरिता के तीव्र प्रवाह से नुकीले पाषाण खण्ड भी लुढ़कते लुढ़कते गोल मनभावन आकर धारण कर लेते हैं, ठीक उसी तरह आचार्य श्री की काव्यधारा से विषय कषायों का तीव्रतारूप नुकीलापन समाप्त होकर ऋजुता एवं आनन्द प्राप्त होता है। यही है शैली की सफलता। उनकी शान्त और सरल शैली अवश्य ही विरसता (वैराग्य) को जन्म देती है। प्रवाह पूर्ण सरल, सुबोध शैली का दर्शन प्रस्तुत ग्रंथ की निम्न पंक्तियों के माध्यम से करें।

ज्ञान बिना रट निश्चय निश्चय निश्चयवादी भी डूबे।
क्रियाकलापी भी ये डूबे-डूबे संयम से ऊबे॥

प्रमत्त बनके कर्म न करते अकंप निश्चल शैल रहे।
आत्मध्यान में लीन किन्तु मुनि तीन लोक पे तैर रहे॥11॥

अनुवाद की प्रामाणिकता एवं प्रतिरूपता के दर्शन हेतु यहाँ मूल संस्कृत कलश प्रस्तुत है,

मग्ना कर्मनयावलम्बनपरा ज्ञानं न जानन्ति ये।
मग्ना, ज्ञाननयैषिणोऽपि यदतिस्वच्छन्दमन्दोधमाः॥
विश्वस्योपरि ते तरन्ति सततं ज्ञानं भवन्तः स्वयं।
ये कुर्वन्ति न कर्म जातु न वशं यान्ति प्रमादस्य च॥111॥

सम्पूर्ण निजामृत पान ही संस्कृत कलशों को सीधा व मधुर अनुवाद है। अधिकांशतः भाव-अभिव्यक्तीकरण, शब्दानुवाद और वाक्यानुवाद रूप ही ज्ञात होता है। यतः पूर्व की समयसार नाटक हिन्दी पद्यमय टीका उपलब्ध है जो विस्तृत व्याख्यायुक्त है, अतः एक संक्षिप्त एवं सरलता से आम्नाय एवं कण्ठस्थ करने हेतु एक सादा अनुवाद की आवश्यकता आचार्य श्री को अनुभव हुई होगी, इसी का परिणाम है निजामृतपान।

रग-रग में चिति रस भरा खरा निरा यह जीव।
तनधारी दुःख सहत, सुख तन विन सिद्ध सदीव॥ (जीवाजीवाधिकारपुष्पिका -1)
बन्ध किये बिन बन्ध का बन्धन टूटे आप।
महिमा यह सब साम्य की विराग दृग की छाप॥ (निर्जराधिकारपुष्पिका-2)
विश्वसार है सर्वसार है समयसार का सार सुधा।
चेतन रस आपूरित आतम शत शत वन्दन बार सदा॥
असारमय संसार क्षेत्र में निज चेतन से रहे परे।
पदार्थ जो भी जहाँ तहाँ हैं, मुझसे पर हैं निरे निरे॥36॥
आत्मतत्व मय चित्रित दिखता कभी चित्र बिन लसता है।
चित्राचित्री कभी-कभी वह विस्मित सस्मित हँसता है॥
तथापि निर्मल बोध धारि के करे न मन को मोहित है।
चूँकि परस्पर बहुविधि बहुगुण-मिले आत्म में शोभित है॥272॥

आचार्य श्री के पद्य काव्यों में सहजता ओर प्रवाहपूर्ण काव्य रस का रसास्वादन करणीय है, निम्न दोहे पर दृष्टिपात करें,

मेटे वाद-विवाद को निर्विवाद स्याद्वाद।
सब वादों को खुश रखे, पुनि पुनि कर संवाद॥ स्याद्वाद अधिकारपुष्पिका-1

वर्ण्य विषय की अभिव्यक्ति- प. पू. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज उत्कृष्ट रूप से ज्ञान-ध्यान-लीन साधक के त्याग तपस्या के प्रभाव से उनके ज्ञानावरण कर्म का विशेष क्षयोपशम हुआ है। वे आगम और अध्यात्म के प्रवर मनीषी चारों अनुयोगें के अभ्यासी एवं अपार पाण्डित्य के धनी है। वे प्रवचन वात्सल्य और प्रभावना की प्रतिमूर्ति है। विषय प्रतिपादन की कला में निष्णात है। उनका समग्र साहित्य इसका ज्वलन्त प्रमाण है।

समयसार कलश में जीव, अजीव, आस्रव, पुण्य, पाप, बन्ध, संवर, निर्जरा और मोक्ष तत्त्वों का विवेचन है। तदनुरूप ही आचार्य श्री ने इन तत्त्वों का वर्णन बड़ी रोचक शैली में किया है। उनकी

विषयानुकूल एवं सीमित शब्दों में प्रकट अभिव्यक्ति प्रशंसनीय है। हृदय से लेकर शब्द तब आते-आते उनका अनुभव मानो प्रकृत विषय का सांगोपांग चित्र प्रस्तुत करता है। निजामृतपान में भी अमृतकलश के भाव का कोई अंश अनुवाद से छूटा नहीं है। द्रष्टव्य है।

कलश- एकमेव हि तत्स्वाद्यं विपदामपदं पदम्।
अपदान्येव भासन्ते पदान्यन्यानि यत्पुरः ।।139।।

अमृतपान- पद पद पर बहुपद मिलते हैं, परवे दुःख पद पर पद हैं।
सब पद में बस पद ही वह पद सुखद निरापद निजपद है ।।
जिसके सम्मुख सब पद दिखते अपद दलित पद आपद हैं।
अतः स्वाद्य है पेय निजी पद सकल गुणों का आस्पद है ।।139।।

प्रस्तुत निजामृतपान में विषय तो आचार्य श्री का स्वयं का नहीं है, वह तो कुन्दकुन्द एवं अमृतचन्द्र जी का ही है। परन्तु वर्ण्य विषय को रोचक, पाचक एवं रागविरेचक बनाकर आचार्य श्री ने भव्य जीवों के हिताय संयोकर प्रस्तुत किया है। इससे श्रोताओं को सरलता से भाव समझ में आने के कारण अवश्य ही सुखानुभूति होती है।

समयसार कलश का विषय निश्चय नय प्रधान होकर भी अनेकानत मय है। इसमें जीव से कर्ता, अकर्ता, बद्ध, अबद्ध आदि भावों को वर्णन अविरोधी नय दृष्टियों से किया गया, निमामृत पान में उन विषयों का विवेचन बड़ी सुन्दर पंक्तियों में सर्वत्र किया गया है। आनन्द लें,

कलश- एकस्य मूढ़ो न तथा परस्य चितिद्वयोर्द्वाविति पक्षपातौ।
यस्वत्तवेदी च्युतपक्षपातस्तस्यास्ति नित्यं खलु चिच्चिदेव ।।71।।

निजामृतपान- भिन्न भिन्न नय क्रमशः कहते आत्मा मोही निर्मोही।
इस विध दृढ़तम करते रहते अपने-अपने मत को ही।
पक्षपात से रहित बना है मुनिमन निश्चल केतन है।
स्वानुभवी का शुद्ध-ज्ञान-धन केवल चेतन-चेतन है ।।71।।

आचार्य श्री ने एकान्त नयाभासों पर प्रहार कर सर्वत्र स्याद्वादत्मक अनेकान्त की पुष्टि की है। सम्पूर्ण ग्रन्थ पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि आचार्य श्री भी प्रकरणों पर निर्बाध गति से गमन करते हैं, कहीं भी स्खलन नहीं है। निजामृत पान सन्तों को आत्मानुभव रूपी आनन्द में डुबोने में समर्थ है। कर्म निर्जरा का हेतु एवं मोक्षमार्ग में अग्रसर होने हेतु सफल कारण सिद्ध हो सकता है। आचार्य श्री ने स्वयं कहा है,

मुनि बन मन से जो सुधी करे निजामृत पान।
मोक्ष ओर अविरल बढ़े चढ़े मोक्ष सोपान ।। (समापन-5)

निजामृत पान विशुद्ध भावना एवं ध्यान अथवा आत्मानुभूति मूलक ग्रन्थ है। निजात्मा के कल्याण हेतु सार रूप में यह सुधासिंधु ही है। मंगल कामना में दोहों में यह भाव गृहणीय है,

विस्मृत मम हो विगत सर्व विगलित हो मद मान।
ध्यान निजातम का करूँ-करँ निजी गुण-गान ।।1।।
सादर शाश्वत सारमय समयसार को जान।
गट गट झट पट चाव से करूँ निजामृत पान ।।2।।

आचार्य श्री द्वारा रचित दोहे तो इस निजामृत पान रूपी भवन के शिखर पर मानो कलश रूप ही हैं। वैसे तो ग्रंथ ही मौलिक सा लगता है, परन्तु ये 45 दोहे तो उनकी निजी मौलिक काव्य निधि की शोभा हैं। इन दोहों में कबीर, तुलसी, भूधर, बिहारी एवं बुधजन के सम्मिलित रूप के दर्शन होते हैं। यदि इन दोहों को कृति में स्थान न मिला होता तो वस्तुतः यह आत्मानन्द- रसिकजनों का उत्कृष्ट कण्ठहार सम्भवतः न बन पाती, जैसे रसपूर्ण कलश यदि छलकता नहीं तो उसका गौरव प्रसिद्ध नहीं हो पाता, उसी प्रकार निजामृतपान कलश रसपूर्ण होने पर भी वह दोहों की समष्टि से छलकता हुआ न होता तो सम्भवः अध्यात्म रसिकों को पर्याप्त आल्हादिक न कर पाता। यह इस कृति की सफलता का मानक है। एकादि दोहों का रसास्वादन करें,

दृग व्रत चिति की एकता मुनिपन साधक भाव।
साध्य सिद्ध शिव सत्य है, विगलित बाधक भाव ।। साध्यसाधक अधिकार पु.-1।।
साध्य साधक ये सभी सचमुच में व्यवहार।
निश्चय नय मय नयन में समय समय का सार ।।2।।

निजामृत के दोहों में भक्ति रस का पुट देकर आचार्य श्री ने उपयोगी बनाया है, ठीक ही है। भक्ति समयसार प्राप्ति का प्रथम सोपान होती है। हृदय कमल को विकसित करने हेतु एवं उसे परम आध्यात्मिक सुगन्ध युक्त करने हेतु यह अनिवार्य कारण है। यही भाव निम्न पद्य में प्रकट किया गया है,

कुन्दकुन्द को नित नमूँ हृदय कुन्द खिल जाय।
परम सुगन्धित महक में जीवन मम घुल जाय ।। प्रारम्भ 4, समापन-3।।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने प्रारम्भिक मंगलाचरण के रूप में 3 दोहे रचित किये हैं, पुनः अन्तिम मंगल के रूप में भी उनकी पुनरावृत्ति की है। वे तीन दोहे वर्तमन में आबाल वृद्ध को कंठस्थ हैं, जन जन में उनका प्रचार है। उन तीनों में से कुन्दकुन्द को...... आदि ऊपर दोहा लिखा है। अग्रिम दोहे भी उदृधृत किये हैं, ये भक्ति क्षेत्र में अलंकार बने हुये हैं।

अमृतचन्द से अमृत है झरता जग-अपरूप।
पी पी मन मन मृतक भी अमर बना सुख रूप।
तरणि ज्ञानसागर गुरु तारो मुझे ऋषीश।
करूणाकर करूणा करो कर से दो आशीष ।।

समयसार शुद्ध अध्यातम एवं द्रव्यानुयोग का ग्रंथराज है किन्तु प्रस्तुत अध्यातम में नीति का समावेश निजामृत पान की शोभा में चार चांद लगा रहा है द्रष्टव्य है,

मृदुता तन-मन-वचन में धारो बन नवनीत।
जब जब तप सार्थक बने प्रथम बनो भव भीत। समापन-8।।
पापी से मत पाप से घृणा करो अयि आर्य।
नर वह ही सब पतित हो पावन कर शुभ कार्य।।7।।

निजामृत पान विषयक उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि यह सर्वांगीण रूप से श्रेष्ठ एवं अत्यन्त उपयोगी कृति है। हम तो सन्तों के भक्त हें उनकी कृपा के अभिलाषी हैं। उनका जो भी आशीर्वादात्मक शब्द प्रयोग है, हम सभी के लिये मोक्षमार्ग का संकेतक है।

चंदेल राजा और उनके जनहित कार्य

❊ डॉ. काशीप्रसाद त्रिपाठी, टीकमगढ़ ❊

भारतीय इतिहास के वीरगाथा काल में अर्थात् ग्यारहवीं- बारहवीं शदी में चंदेल राज्य का केन्द्र बुन्देलखण्ड राज्य था, जो अतिप्राचीन एवं राज्य विस्तार से अनेक नामों से वेदन, पुराण तथा साहित्य में उल्लिखित है । यथा चित्रकूट, चेदि, दशार्ण, गोल्लेदश, युद्धदेश, जैजाकभुक्ति, यजुर्होति विन्ध्येलखण्ड आदि। जिन राजाओं ने जनहित के कार्य किये थे। जिनकी कीर्ति, कार्य एवं स्थापत्य संपूर्ण भारत में महोबा से देवगढ़ (कीर्तिगढ़) तक फैली बिखरी दर्शनीय रही हैं।[1] वैसे तो बुन्दलेखण्ड पूरा पहाड़ी टौरिया, रॉकड़ ककरीला, पथरीला क्षेत्र रहा है। पानी का अभाव यहा था। जल तो वर्षात् में बरसता था वह धरातलीय जल ऊँचे पहाड़ों, टोरियों के मध्य की पठारों में से निचाई की ओर निकल जाता था। पूरे बुन्देलखण्ड का ढाल दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर है। अति प्राचीन काल से जो निकल जाता है। पूरे बुन्देलखण्ड का ढाल दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर है। अति प्राचीन काल से जो नदियाँ चाहे वह छोटी हों या बड'भ्द्र वे सब पथरीली हैं। बेग से चढ़ती हैं, उतरती हैं। धरातलीय वर्षाती जल को गाँव क्षेत्र में रोकने की जो योजना चंदेलों ने लागू की वह अनन्य थी। देश के अन्य क्षेत्रों में ऐसा नहीं किया जा सका। समूचा बुन्देलखण्ड क्षेत्र पहाड़ी-पठारी है, जहाँ देखो वहाँ पत्थर ही पत्थर। स्थानीय उपलब्ध पत्थरों का जैसा उपयोग तालाबों के निर्माण में अर्थात् क्षेत्र का जल क्षेत्र में रोक देने, धर्म संस्कृति के उत्थान में कलात्मक मूर्तियों के निर्माण, उत्तुंग शिखरों युक्त पत्थर के विशाल चीरों से मंदिरों का निर्माण एवं अपनी एवं राज्य की सुरक्षा के लिये पत्थरों से विशाल किलों का निर्माण किया जिसको देखकर विश्व के पर्यटक, दर्शनार्थी चंदेल राजाओं की कला-कीर्ति देख दांतों तले अंगुली दबाते हैं।

वैसे चंदेल शासकों का इतिहास नन्नुक[2] (800-25 ई.) से प्राप्त होता है जिसके पश्चात् बाकपति (825-50) जयशक्ति-विजयशक्ति [3] (850-75), राहिल देव [4] (875-900) ई. ने महोबा के पास राहिला सागर तालाब पर सूर्य मंदिर बनवाया था। हर्ष (900-25 ई.) ने प्रतिहारों को शक्तिहीन कर दिया था। यशोवर्मन[5] (925-40 ई.) धंग देव [6] (940-999) इसने जैन मंदिर खजुराहों के अभिलेख अनुसार संपूर्ण चंदेल राज्य के अविकसित तथा जलाभाव क्षेत्र में क्षेत्र का पानी क्षेत्र में रोकने का निर्देश दिया था। उसने निर्देशित किया था कि दो पहाड़ों-टौरियों के मध्य से पठारों से व्यर्थ ही प्रवाहित होते जाते धरातलीय जल को पुष्करणी (तालाब) बनाकर स्थान-स्थान पर रोक दिया जाये। ऐसे तालाबों के बाँधों के भराव क्षेत्र में आगे और पीछे पत्थरों की पैरियों एक के ऊपर एक रखते हुये बीच में मिट्टी भर दी जाये तथा 10:7 के अनुपात से बांध के दोनों किनारो के संलग्न पहाड़ी-टौरियाँ काटकर पांखी (जल निकास) बना दिये जावे ताकि तालाब में पानी भरे तो बांध पर न आ पाने से पहले ही पॉखी से वैशी (अधिक) पानी

निकलता रहे। पॉखियों से निकलने वाले जल को बाँधों के दोनों और के आजू-बाजू समतल भूमि की ओर मोड़ दिया जाये कि उक्त क्षेत्र को कृषि क्षेत्र में विकसित कर दिया जाये। तालाबों का निर्माण धरातलीय जल के प्रवाह के अनुरूप एक के नीचे एक सॉकल की तरह कि ऊपर वाले तालाब का वेशी पानी नीचे के तालाओं को भरता रहे। कुछ तालाब मालाकार बनाये जावे जो ग्राम बस्ती के चारों ओर हो तथा एक-दूसरे से जुड़े हो कि वर्षाती धरातलीय वेशी जल व्यर्थ में क्षेत्र से बाहर न जा सके।

गंडदेव (999-1025 ई.) धंगदेव का पुत्र था। वह पराक्रमी राजा था, जिसने मुस्मिल आक्रमणकारी महमूदर गजनबी को रोकने का भरपूर प्रयास किया था। विद्याधर (1025-1040 ई.) विजयपाल (1040-1050 ई.) देववर्मा (1050-1052 ई.) कीर्तिवर्मा (1053-1100 ई.) ने चंदेल राजवंश की कीर्ति दूर-दूर तक सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड परिक्षेत्र में फैला दी थी। कीर्तिवर्मा का बनाया हुआ देवगढ़ में वेतवा के तट की पहाड़ी पर बनवाया कीर्तिदुर्ग था। महेबा में कीर्तिसागर विशाल तालाब कीर्तिवर्मा का ही बनवाया हुआ है। खजुराहो में शातिनाथ प्रतिमा की स्थापना कीर्तिवर्मा ने ही कराई थी।

सलक्षण वर्मा (1100-1110 ई.) कीर्ति वर्मा का पुत्र था। उसने खजुराहो में अनेक मंदिरों का निर्माण कराया था। जिला टीकमगढ़ में संलक्षण (सरकनपुर) ग्राम बसाया था।[7] तालाब भी बनवाया था। तालाब के बांध पर महिसासुर (पडा-भैसा) का मठ बनवाया था। मठ तो नष्ट हो गया था, परंतु भैंसापुर की विशाल प्रतिमा वर्तमान में भी बांध पर पड़ी हुयी हैं आवश्यक है कि इस भैंसापुर विशाल एवं आकर्षक प्रतिमा को कुण्डेश्वर के पापट संग्रहालय में अथवा कलेक्ट्रेट-न्यायालयीन परिक्षेत्र में एक ऊंचे चबूतरे पर प्रतिष्ठापित करा दिया जाये। सरकनपुर ग्राम के समीप ही एक सुन्दर विशाल सरोवर एवं विलासपुर भव्य नगर था जहाँ जैन धर्म के भव्य मंदिर थे, परंतु पृथ्वीराज चौहान ने यहां की वस्ती जैन मंदिरों एवं अन्य धर्मों की मान्य पूज्य प्रतिमाओं को खंडित किया, बिलासपुर नगर को लासपुर कहा जाने लगा था।[8] संलक्षण वर्मा के समय की एक अदभुत सुन्दर त्रिदेवी की प्रतिमा बांध (बल्देवगढ़) की पुरानी बस्ती में प्रतिष्ठित है।

जयवर्मा[9] (1110-20 ई.) - मदन वर्मा (1120-65 ई.) के समय चंदेलों का सितारा बुलन्दी पर था। मदन वर्मा ने बांध उर्फ बल्देवगढ़ जिला टीकमगढ़ में दो पहाड़ों के मध्य की खाद में छोटा सा लेकिन बहुत चौड़ा एवं ऊँचा पत्थर की पैरी से बंधान बनवाकर बहुत बड़ा तालाब बनवा दिया था। जिसका नाम गायों-ग्वालों के नाम पर ग्वाल सागर रखा था[10] तथा बांध के पीछे आज जन मार्ग पर चलने वालों को पीने के पानी की व्यवस्था हेतु पगवाही (सीढीदार) मदनबेर बनवा दी थी । यह बेर विशेष रही है कि सीढ़ी से मनुष्य जल पिया करता रहा जबकि इससे झिर-झिर का पानी बेर से बाहर बहता रहता रहा जिससे लोग स्नान करते रहे है। मदन वर्मा का बनवाया हुआ मदन सागर आहार, मदन सागर जतारा एवं मदनपुर ग्राम मदनसागर तालाब एवं मदनपुर में ही आल्हा-ऊदल की बैठक दर्शनीय रही है। मदन सागर तालाब आहार के बांध के पृष्ठ पार्श्व में

दक्षिणी छोर की पटपरिया पर मदनेश शिव का मठ भी मदन वर्मा ने बनवाया था[11] जिसका चीरा पत्थर पास ही विन्ध्यवासिनी देवी की पहाड़ी के पास से निकले नाले पर टीकमगढ़-बल्देवगढ़ मार्ग पर पुल के निर्माण में जिया रामसिंह तहसीलदार बल्देवगढ़ ने लगवा दिये थे। मदन वर्मा चंदेल राजा ने जल प्रबंधन का भरपूर महत्वपूर्ण काम किया था सड़क मार्गो के किनारे बेरें, बाबड़ियाँ एवं पगवाहियाँ बेरें बहुत बनवाई थी ताकि पैदल चलने वालों को पानी-पीने हेतु2 किसी तरह की परेशानी न हो। चंदेल काल में चूना सीमेंट जैसी कोई बात का आविष्कार तो हुआ ही नहीं था। फिर भी पत्थरों को लकड़ी अथवा मोम की तरह काट-छाट करने वाले ऐसे कुशल कारीगर थे कि पत्थरों पर छोटी-बड़ी मुद्रा में प्रतिमायें गढ़ी और विशाल, लंबी-चौड़ी शिलायें मंदिरों पर किलों, महलों दरवाजों की छतों पर ऊँचे-ऊँचे मंदिरों के शिखरों तक किस विधि से चढ़ाये गये होगे कि यह आश्वर्य की बात है। देश-विदेशी पर्यटक उन्हें देखकर, दांतों के बीच अंगुली दबाये आश्चर्य चकित हो जाते हैं। चंदेलों के किले दुर्ग जो भी बने वह पहाड़ों पर ही निर्मित किये गये थे। जो विशाल पत्थरों के परकोटे सहित अजेय रहते रहे। चंदेलों के प्रसिद्ध किलों महोबा, कालिंजर, मड़फा, अजयगढ़, मनियाँगढ़, बारीगढ़, सिरसागढ़, गढ़कुड़ार एवं कीर्तिगढ़ (देवगढ़) प्रसिद्ध थे।[12] निर्मित किलों की गुफाओं में देवियाँ प्रतिष्ठित थी जैसे मनिया देवी, मनियागढ़ दुर्गा की गुफा में रही है। मैहर पहाड़ी पर शारदा माता का मंदिर रहा है।

चंदेल युग में बुन्देलखण्ड में शैव, वैष्णव एवं देवी मंदिरों का निर्माण हुआ है परंतु जैन मत को भी खूब संरक्षण मिला हुआ था।

चंदेलों के संरक्षण में कृषि उपज और वनोपज क्रय करने जैन सेठ पाड़ाशाह चंदेरा व्यापारी एवं राजस्थान से बंजी करने वाले बजारे बड़ी संख्या में आये कुछ यहीं बस गये उसके मंदिर बने-बानपुर खजुराहों आहार, नारायणपुर, बड़ागाँव धसान, नाबई (नवागढ़), मानपुर-सौरों एवं देवगढ़ प्रसिद्ध रहे है।[13] मंदिर पत्थर के बड़े-बड़े चीरों से बने हुये हैं। जिनमें गर्भगृह के चारों ओर प्रदक्षिणा पथ होता रहा है। मंडप अंतराल एवं गर्भगृह एक ही माप का होता है जिसमें 24 तीर्थंकरों की प्रतिमायें रखने की 24 दीवार बनाने का विधान जैन मंदिरों में रहता है।

परमाल देव (1165-1202 ई.)- यह मदन वर्मा का नाती एवं यशोवर्मन का पुत्र था। परमाल देव ने महोबा से समूचे बुन्देलखण्ड़ चंदेल राज्य का संचालन किया था। वह वीर प्रतापी एवं जनहित कारी राजा था। उसने उरई के प्रतिहारों पर आक्रमण कर अस्तित्व हीन कर दिया था तथा उरई के प्रतिहार माहिल की बहिन मलना देवी से विवाह कर लिया था। इसके साथ ही उसने मलना देवी रानी के भाई, अपने साले माहिल को अपना मंत्री बना लिया था। जबकि माहिल देव उससे ईर्ष्या करता था और परमाल देव को अपने पुराने बैर भाव का बदला लेने के उपाय करता रहता है।[14]

परमाल देव के समय का प्रसिद्ध मूर्तिकला का पारखी निर्माता पापट था, जिसने आहार में भी शांतिनाथ जी की भव्य 21 फीट ऊँची प्रतिमा बनाई थी जो वर्तमान तक में आहार में प्रतिष्ठित है। परमाल देव का बनवाया हुआ नारायणपुर में विशाल सूर्य मंदिर एवं तालाब के बांध पर दो शिव मठ एक स्नान घाट पर दूसरा बांध के पृष्ठ भाग में रहा है।

परमाल देव का साला, उरई का प्रतिहार माहिल जो अतः मन से परमाल देव से ईर्ष्या करता था तथा महेबा के चंदेल राज्य के पतन के लिये चुप-चाप प्रयत्न करता रहता था परंतु जब तक महोबा में आल्हा-ऊदल, ईदल-मलखान जैसे वीर पराक्रमी यौद्धा थे तब तक कोई भी शत्रु महोबा की तरफ आंख उठा कर देखने का साहस भी नहीं कर पाता था, इसलिये माहिल देव ने आला-ऊदल के विरुद्ध षड़यंत्र रचकर उन्हें कन्नोज भगवा दिया था। जैसे ही आल्हा-ऊदल ने महोबा छोड़ा तो माहिल ने दिल्ली के राजा पृथ्वीराज चौहान को महोबा पर आक्रमण करते हुये चंदेल राज्य को लूटने हेतु आमंत्रित कर दिया था।[15] परमाल देव का पुत्र समर जीत एवं पुत्री बेला थी। बेला के नाम पर प्रसिद्ध बेला बड़ा उत्सव होता था। चंदेल शासन काल के बुन्देलखण्ड में कजलियों का एक बड़ा उत्सव होता था। जो श्रावण मास में मनाया जाता था। बासे श्रावण (रक्षाबंधन के दूसरे दिन) कजलियों का विसर्जन किये जाने का विधान रहा है। इस प्रकार बेला पुत्री परमाल देव भी मदन सागर तालाब में कजली विसर्जन हेतु जाया करती थी। पृथ्वीराज चौहाने ने कजली विसर्जन करते समय बेला का अपहरण करने की योजना बनाई थी।[16]

ऐतिहासिक नगर मदनपुर जो मदनवर्मन द्वारा बसाया गया था। चंदेलशासन की विलक्षण धरोहर है। यहां की बारादरी में लगे अभिलेख में परमर्दिदेव के राज्य जैजाक मुक्ति पर पृथ्वीराज चौहान के द्वारा किये गये विध्वंस का उल्लेख मिलता है।

ओं अन्नोराजस्य पौत्रेण श्री सामेश्वर सुनुना।
जैजाकभुक्ति देशेयं पृथ्वीराजेवा लुनितः। सं. 1239[17]

सन् 1182 ई. में पृथ्वीराज चौहान ससैन्य बेतवा के बांये तट पर बैरागढ़ मैदान में कजलियो के विसर्जन के दिन डेरा डालने बेतवा को पार कर महोबा में आया तो आल्हा-ऊदल की माँ देबल देवी ने एक दूत को कन्नोज भेजकर अपने पुत्र आल्हा-ऊदल एवं नाती ईदल को महोबा वापिस बुला लिया था, जिन्होंने मदन सागर सरोवर के पास अपना डेरा जमा लिया था।[18] परमाल देव के अधीनस्थ किलेदार भी अपनी सेना लेकर महोबा में इकट्ठे हो गये थे। सिरसागढ़ में मलखान में तथा चामुण्ड राव ने महाराजपुर में डेरा जमा लिया था। गढ़कुड़ार का किलेदार शिया जू पवांर ससैन्य महोबा जा पहुँचा था।

श्रावणी के दूसरे दिन राजकुमारी बेला जैसे ही अपनी सहेलियों सहित मदन सागर तालाब में कजलियॉ विसर्जन हेतु पहुँची तो पृथ्वीराज चौहान की सेना ने महोबा पर आक्रमण कर दिया था। परमाल देव तो कालिंजर के किले को भाग गया था परंतु उसके बेटे समरजीत, आल्हा-ऊदल एवं ईदल तथा उसकी सेना ने पृथ्वीराज की सेना को पराजित कर दिया था। तब पृथ्वीराज चौहान चन्द्रवरदायी बुन्देलखण्ड को लूटता मठो को तोड़ता धनाड्य लोगों को लूटता राज व्यवस्था को अस्त-व्यस्त करता हुआ बिलासपुर आया और बिलासपुर जैसे संपन्न नगर को लूटता ध्वस्त करता जैन मंदिरों एवं अन्य मंदिरों को तोड़ता-गिराता बिलासपुर को वे चिराग लासपुर बनाकर सलक्षणपुर (सरकनपुर) के महिषासुर (भैंसासुर) मंदिर को तोड़ा।[19] भैंसासुर (पड़ा) की

विशाल प्रतिमा अभी भी सरकनपुर के तालाब के बांध पर पड़ी हुई है। वहाँ से आहार के मदनेश्वर मंदिर (तालाब के बांध की पीछे वाली टौरियों पर था) को तोड़ता हुआ नारायणपुर का सूर्य मंदिर एवं तालाब के पृष्ठ में स्थित शिव मंदिर को खंडित करता नावई (नवागढ़) से मदनपुर पहुँचा। मदनपुर में अनेक जैन मंदिरों को तोड़ता नगर को लूटता हुआ चंदेरी होकर वह दक्षिणी- पश्चिमी बुन्देलखण्ड से संलग्न राजस्थान, नरवर क्षेत्र में जा पहुँचा था।

नावई नवागढ़ की विशालता, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, शैक्षणिक एवं धार्मिक महानगर होने के साक्ष्य अन्वेषित किये गये हैं । जिनमें जैन संतों के साधना शैलाश्रय, गुप्तकालीन उत्कीर्ण साधुमुद्रा एवं चरण, पेलियोलिथिक काल के पाषाण औजार, शलचित्र, पैट्रोलिक कपमार्क, प्रतिहारकालीन मूर्तियाँ , चंदेलबावड़ी, चंदेलकालीन, कूप एवं महापुरुषों के विभिनन मुकुट वाले शीर्ष गौरवशाली इतिहास के साक्ष्य हैं ।[20]

ललितपुर का क्षेत्रपाल जैन तीर्थ जंक्शन है जहाँ से पूरे जिला के जैन तीर्थ मंदिरों को जुड़ावन है जैसे- देवगढ़ सैरोन चंदेरी थूवौन जी आदि ललितपुर के क्षेत्रपाल से जुड़े हैं। एक पर कोटे के अंदर पांच मंदिरों का समूह क्षेत्रपाल है। भगवान अभिनंदन की प्रतिमा दर्शनीय हैं एक मंदिर भौयरे रूप में है। यहाँ 12 तीर्थंकरों की प्रतिमायें है अन्य जैन मंदिर दूधई, चांदपुर, सीरौन देवगढ़ भी दर्शनीय है। देवगढ़ वेतबा के तट पर है। यहाँ कीर्तिगढ़ किला था जो अब खंड़हर है। किले के दो दरबाजे पूर्वी दरबाजा (हाथी दरबाजा) एवं पश्चिमी द्वार (कुंज दरबाजा) कहा जाता है। यहाँ 40 प्राचीन जैन मंदिर 29 मानस्तंभ है। यहाँ के जैन मंदिरों को पॉड़ाशाह सेठ एवं उसके दो भाईयों देवपत एवं खेवपत ने बनवाये थे। देवगढ़ में भगवान विष्णु की शैषशायी प्रतिमा है जो एक छोटे से मंदिर में है। इसे दशावतार मंदिर कहा जाता है। यह प्रतिमा भारत ही नहीं बल्कि विश्व प्रसिद्ध है। यह मंदिर पुरातत्व के संरक्षण में है।

ललितपुर चंदेरी क्षेत्रों में लूटमार करता मंदिरों को तोड़ता पृथ्वीराज नरवर क्षेत्र में जा पहुँचा था तथा इस क्षेत्र में प्रमुख ग्रामों को अपने सेना नायकों, लड़ाकों को जगीरें देकर उपकृत किया था तथा इस क्षेत्र का नाम धंधेल खंड रहा था। जिनमें प्रमुख ठिकाना मनपुरा था। कालान्तर में ग्वालियर के सिंधिया ने नरवर को अपने अधिकार में लेकर इसे 4 परगनों में विभक्त कर दिया जो सीपरी, पिछोर, कोलारस एवं करैरा थे। पृथ्वीराज चौहान दिल्ली लौट गया था। मूल रूप में धंधेरे चौहान ही है। पृथ्वीराज चौहान के साथ धंधेर कर लाये जाने वह धंधेर कहे जाते रहे हैं।

संदर्भ :-

1. बुन्देलखण्ड का पुरातत्त्व, डॉ. एस.डी. त्रिवेदी पृ. 35 एवं 53
2. आल्हासमर सारावली, मंशी ईश्वरी प्रसाद पृ. 34-500 कुआं एवं 100 तालाब बनवाये
3. आल्हासमर सारावली, मुंशी ईश्वरी प्रसाद- 500 कुआं एवं 400 तालाब बनवाये
4. क. बुन्देलखण्ड का बृहद इतिहास, डॉ. के.पी. त्रिपाठी पृ. 37 अजयगढ़ में तालाब एवं

मंदिर बनवाये।

ख. प्यासा बुन्देलखण्ड, कैलाश मड़वैया पृ. 29- रासिन ग्राम बसाकर अनेक सरोवर बनवाये

ग. चंदेलकालीन बुन्देलखण्ड अयोध्याप्रसाद पाण्डेय पृ. 213

घ. हमीरपुर जिला गर्जाटयर, पृ. 273

5. प्यासा बुन्देलखण्ड, कैलाश मड़वैया, पृ. 29 कालिंजन दुर्ग में कोटतीर्थ सरोवर, खजुराहो का शिवसागर

6. क. बुन्देलखण्ड का पुरातत्त्व, प्रो. एस.डी. त्रिवेदी पृ. 35 एवं 53 खजुराहो, सीरोन, देवगढ़, दुधही, महोबा, नवागढ़, कालंजर, चांदपुर में आपके शासनकाल में विशाल मंदिर एवं सरोवर बनाये गये।

ख. चंदेलकालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास, डॉ. अयोध्याप्रसाद पाण्डेय पृ. 4 से 7।

7. प्यासा बुन्देलखण्ड, कैलाश मड़वैया पृ. 30 सलक्षपुर (सरकनपुर) नगर बसाया, तालाब एवं मंदिर बनवाये।

8. क. बुन्देलखण्ड का बृहद् इतिहास, डॉ. के.पी त्रिपाठी पृ. 19

ख. हमारे प्रेरक- डॉ. पं. विश्वनाथ शर्मा पृ3. 4

9. जल प्रबंधन बुन्देलखण्ड की पारम्परिक जल संरचनायें हरिविष्णु अवस्थी, पृ. 34 महोबा में किला एवं कीर्तिसागर का निर्माण

10. बुन्देलखण्ड का बृहद् इतिहास, डॉ. के.पी त्रिपाठी पृ. 41

11. क. बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, पं. गोरलाल तिवारी, पृ. 51

ख. जल प्रबंधन बुन्देलखण्ड की पारम्परिक जल संरचनायें, हरिविष्णु अवस्थी, पृ. 35

ग. कालंजर प्रबोध, डॉ. हरिओम तत्सत ब्रह्मशुक्ल पृ. 48

12. क. बुन्देलखण्ड के दुर्ग- डॉ. काशीप्रसाद त्रिपाठी

ख. बुन्देलखण्ड का पुरातत्व- एस.डी.त्रिवेदी पृ. 38

13. प्राचीन शिलालेख अहारजी, पं. गोविंददास कोठिया

14. बुन्देलखण्ड का बृहद् इतिहास, डॉ. के.पी. त्रिपाठी पृ. 19

15. क. कालंजर प्रबोध- डॉ. हरिओम तत्स ब्रह्मशुक्ल पृ. 48

ख. बुन्देलखण्ड का बृहद् इतिहास- डॉ. के.पी त्रिपाठी पृ 19

16. कजलीसमय, कजरियन की समैया डॉ. वीरेन्द्र निर्भयर पृ. 144

17. बुन्देलखण्ड का पुरातत्त्व डॉ. एस.डी त्रिवेदी चित्र प्लेट 13

18. कजली समय, कजरियम की समैया डॉ. वीरेन्द्र निर्झर

19. बुन्देलखण्ड का बृहद इतिहास, डॉ. के.पी. त्रिपाठी पृ. 19

20. नवागढ़ का इतिहास- हरिविष्णु अवस्थी

भविष्य के लिये संरक्षण जरूरी

✲ ऋतु जैन, राष्ट्रीय संग्रहालय राष्ट्रपति भवन दिल्ली ✲

जैन धर्म में गुरु और ग्रंथ दोनों को समान स्थान प्राप्त है। हमारे साधु जी एवं साध्वी जी हमारे लिये सदैव ही आदरणीय है। पूज्यनीय हैं और हम उन्हें शत् शत् नमन करते हैं। किन्तु हमारे प्राचीन ग्रंथ कहाँ है वे किस हाल में है सुरक्षा की दृष्टि से ग्रंथ मंदिरों ग्रंथालयों स्थानकों की अलमारियों और बक्सों में बंद है पर यह सोना या चांदी जैसी धातु की बनी वस्तु नहीं हैं जिन्हें तालें में बंद रखना ही उनकी सुरक्षा का सबसे उत्तम विकल्प हैं पाण्डुलिपियां तो ज्ञान का अमूल्य भंडार है।

सुभाषित रत्नभाण्डागारम में पुस्तक के विषय में यह बताया गया है :

तैलाद रक्षेज्जलाद रक्षेद शिथिलबन्धनात।
मूख हस्ते न दातव्यं युवतीवच्च पुस्तकम ।।

तेल से रक्षा करनी चाहिये जल से रक्षा करनी चाहिये, शिथिल बन्धनों से रक्षा करनी चाहिये, युवती की भांति पुस्तक को मूर्ख के हाथ में नहीं देना चाहिये।

भारत में विरासत में मिली सांस्कृतिक एवं धार्मिक सम्पदा अपार मूल्यवान है। इसमें ग्रंथों और शास्त्रों का अपना महत्त्व हैं। यह निधि संग्रहालय ग्रन्थागार धार्मिक संस्था और व्यक्ति विशेष के पास संग्रहित होती है। इनकी रखरखाव एवं सुरक्षा का दायित्व देश के हर नागरिक का कर्तव्य है, यदि ऐसा न किया जाये तो यह अनमोल धरोहर नयी पीढी को सौपने की बजायें विनष्टीकरण की ओर चली जायेगी तो क्या देंगे हम उन नये हाथों को ?

आधुनिक डिजिटाई सेशन प्रणाली से ग्रन्थों में लिखा गया साहित्य तो सुरक्षित रहता है पर हमारे पूर्वजों साधु संतों के हाथों लिखे गये शास्त्रों को सुरक्षित रखना भी अत्यंत आवश्यक है।

1. **कर्तव्य-** हमारी धरोहर को सुरखित और संरक्षित रखना हमारा कर्तव्य है। यह हमारा धर्म ही नहीं हमारी पहचान भी है।

2. **आदर-** प्रत्येक प्राणी में अपने धर्म के प्रति आदर और श्रद्धा भाव होने चाहिये ग्रन्थों में लिखा गया साहित्य हमारे लिये आदरणीय है।

3. **ज्ञान-** शास्त्र ज्ञान का भंडार हैं, इन्हें बचाना ही होगा।

4. **ऐतिहासिक प्रमाणिकता-** ग्रंथ और उससे संबधित शोध का संरक्षण ऐतिहासिक मूल्य दृष्टि से भी जरूरी है।

आधुनिक काल में विज्ञान में इतनी उन्नति की है कि शास्त्रों को बचाने के लिये हमारे देश में कई प्रयोगशालायें हैं।

कागज की मूल संरचना

कागज मिश्रित लुगदी रूप में तैयार की जाती है। यह मिश्रित लुगदी कपड़ों के टुकड़े, लकड़ी, बांस सरकंडे की घास, फ्लेक्स आदि के द्वारा मशीन की सहायता से या हाथ की विधि से तैयार की जाती है। जिसका मौलिक तत्व, सेल्यूलोज होता है। इसके रेशे लचीलापन, नमी

सोखने की गुणता से युक्त होते हैं। अधिकांशतः इन रेशों में सेल्यूलोज लिगनिन और गोंद होता है। इसी के साथ कागज बनाते समय विभिन्न क्षारीय और अम्लीय गुण वाले रसायनों का भी प्रयोग किया जाता है। मुख्यतः अम्लीय रसायन और पदार्थ जैसे लिगनिन जो बांस और लकड़ी से प्राप्त रेशे, इत्यादि कागज बनाने में हानिकारक सिद्ध होते हैं। उदाहरण के तौर पर सस्ती कीमत का कागज समाचार पत्र, बांसी कागज, जिल्साजी का कागज जो एक वर्ष उपरान्त ही भूरे और हल्के पीले रंग में परिवर्तित हो जाते हैं। वही दूसरी और हाथ की विधि से बना सेल्यूलोज के रेशों का कागज अधिक मजबूत टिकाउ और लचीलापन लिये होता है। आज यही वजह है कि सौ वर्ष हाथ की बनी पांडुलिपी अच्छी हालत में मिलती है जबकि अभी के बने कागज शीघ्र खराब हो जाते हैं।

1. दीमक, सिल्वर फिश, तिलचट्टे, बुक लाईस आदि कीड़े पाण्डुलिपियों और ग्रंथों को सर्वाधिक हानि पहुंचते हैं।

2. जिल्दसाजी में काम आने वाली चीजे जैसे गत्ता धागा मांड आदि भी शास्त्रों के लिये हानिकारक है।

3. ऊँची आद्रता अंधकार तथा बांसी वातावरण में फफूंद उग जाता है, एयर कण्डीशनर को बार बार चलाने तथा रोकने से तापमान तथा आर्द्रता का उतार चढ़ाव होता है, जिससे पाण्डुलिपियों दुर्बल होकर नष्ट हो जाती हैं।

4. पन्नों पर बने चित्रों में अम्लीय रंग और स्याही कागज को गलाकर कमजोर और नष्ट कर देती हैं।

5. धूप में अनियंत्रित तरीके से सुखाने से ताडपत्र तथा काठ के पठ्ठों के बीच कसकर न रखने के कारण यह टूट जाते हैं।

6. पाठकों तथा अधिकारियों की लापरवाही से पत्र पर निशान व दाग पड़ जाते हैं।

7. अधिक तापमान होने से कागज पीला और भूरा हो जाता है और ताड़पत्र अपनी नमी खो देते हैं।

8. प्राकृतिक विपदायें जैसे आग, बाढ़ आदि से भी कुछ ही क्षणों में भारी मात्रा में शास्त्रों को नुकसान पहुँचा सकता है।

9. **मनुष्य द्वारा क्षति-** जानबूण कर कलाकृति को नष्ट करने वाले लोग, चोर, दायित्वहीन पाठक, असावधान कर्मचारी, उदासीन जनसाधारण एवं अधिकारीगण- यह सब इस सांस्कृतिक धरोहर को विध्वंस की ओर ले जाते हैं।

रक्षा कैसे करे

1. हाल ही में पाण्डुलिपियों को संग्रहित पेथियों के साथ न रखें। फफूंद और कीड़े होने की अवस्था में यह संग्रह में फैल जायेंगे। उन्हें अच्छी जांच कर और ब्रुश य सूती कपड़े से साफ करके ही संग्रह में रखें।

2. खराब सूक्ष्म छेदों में से बुरादा निकलने वाले जिल्द या काठ के पठ्ठों को कीट सहित करे

अथवा बदल दें।

पाण्डुलिपियों को कीड़ों से कैसे बचायें

1. पाण्डुलिपियों को बन्द बक्सों अथवा अलमारी में रखें।

2. पाण्डुलिपियों के साथ कीट विकार्षक तत्व रखें।

3. प्राप्त पाण्डुलिपियों में कीड़े के अण्डे अथवा डिम्भ **(लार्वा)** हो सकते हैं जो संग्रह के अन्य पाण्डुलिपियों में फैलकर उनको भी नष्ट कर सकते हैं। अतः कीटग्रस्त एवं हाल में प्राप्त पाण्डुलिपियों को अपने संग्रह से दूर रखें, और उनकी जांच करें।

4. लकड़ी के पठ्ठे जिनके बीच में ताडपत्रों में रखा जाता है, उनमें भी कीड़े विद्यमान हो सकते हैं सावधान रहें।

5. भण्डारकक्ष तथा प्रदर्शन कक्ष में भोजन न करें क्योंकि खाद्य पदार्थों से कीडे-मकोड़े एवं चूहे आकर्षित होते हैं।

6. कपड़े में पाण्डुलिपि को लपेटने से पहले, कपड़े को अच्छी तरह धोकर उसका मांड निकाल दें अन्यथा कीड़े आकर्षित हो जायेंगे।

7. संग्रह का नियमित निरीक्षण करें, कहीं लकड़ी का बुरादा दिखे, जो कीटाक्रमण का प्रतीक हैं, तो तुरन्त अधिकारीगण को बतायें, कीटग्रस्त पाण्डुलिपि को संग्रह से अलग करें तथा उसका उपचार करायें।

8. संग्रह के साथ कीटनाशक कागज रखें।

9. खिड़की में जाली लगायें।

10. परिवेश स्वछ रखें।

11. पेटिका एवं अलमारी को दीवार से अलग रखे, तथा जमीन पर कीटनाशक पदार्थ रखें।

12. रासायनिक धूम्र करने से कीडे मर जाते हैं, परन्तु अगर सावधानी न बर्तें, तो पाण्डुलिपि में कीटाक्रमण पुनः हो जायेगा।

13. भवन निर्माण के समय ही भवन को दीमक अभेद्य बनाये।

14. अपनी परेशानियों की विशेषज्ञों से चर्चा करें।

पाण्डुलिपियों को आपेक्षिक आर्द्रता एवं तापमान से कैसे बचायें

1. तापमान एवं आपेक्षित आर्द्रता के उतार-चढ़ाव से पाण्डुलिपियों को मांड रहित मोटे सूते कपड़े में लपेटे एवं अन्द्रूनी कक्ष में रखें। मोटे सूती कपड़े आर्द्रता को धीरे-धीरे सोखते एवं छोडते हैं जिसमें अनियंत्रित उतार-चढ़ाव के हानिकारक प्रभाव कम हो जाते हैं।

2. एयर कंडिश्नर अगर प्रयोग करें तो उसे लगातार दिन के 24 घंटे तथा वर्ष के 365 दिन चालू रखें। अगर यह संभव नहीं हो तो इस यंत्र को संग्रह कक्ष या भंडारकक्ष में स्थापित न करें। एयर कडिश्नर को बार-बार ऑन तथा ऑफ करने से तापमान तथा आर्द्रता में तीव्र उतार-चढ़ाव होता है, जिससे संग्रहित पाण्डुलिपियां बहुत शीघ्र ही नष्ट हो जाती है।

3. प्रतिदिन तापमान तथा आपेक्षित आर्द्रता को ड्राई एण्ड वेट थर्मामीटर से नापा तथा

थर्मोहाईड्रोग्राफ से रिकार्ड करा जा सकता है। कम से कम एक वर्ष तक के ऐसे रिकॉर्ड उतार चढ़ाव की गति को समझने तथा सुधारात्मक कदम लेने के लिये सहायक होते है।

4. प्रदर्शन पेटिका में सिलिका जेल रखने से उच्च आपेक्षित आर्द्रता की मात्रा को कम कर सकते हैं।

5. यदि आपेक्षित आर्द्रता का स्तर 45 से कम हो तो पाण्डुलिपियों के शुष्क तथा भंगुर हो जाने का भय है।

6. पाण्डुलिपि संग्रह कक्ष में अच्छा वायुसंचार अनिवार्य है। अधिक आर्द्रता, अंधकार एवं स्थिर हवा में फफूंद का जन्म होता है।

7. चित्रित पाण्डुलिपि के पत्रों के बीच टिशू पेपर रखें।

8. दर्शकों के गमनागमन को नियंत्रित करें।

9. संग्रह के अस्पष्ट पन्नों को जमा न होने दें।

10. यदि पाण्डुलिपि गीली हो जायें, तो धूप में ना सुखायें। कमरें में पंखे की हल्की हवा में सुखायें।

पाण्डुलिपियों का उपयुक्त भंडारण एवं प्रदर्शन

1. संग्रह कक्ष स्वच्छ प्रकाशित तथा हवादार होना चाहिये।

2. पाण्डुलिपियों को बक्सों में सुव्यवस्थित ढंग से रखें।

3. अलमारी का सबसे निचला तख्ता भूमि से 6-8 इंच ऊपर होना चाहिये।

4. दीवाल तथा अलमारी के बीच खाली स्थान छोड़े।

5. पाण्डुलिपियों को नित्य हवा लगायें तथा उनकी जांच करें।

6. भंडार में पाण्डुलिपियों को आसानी से ढूंढने के लिये, कौन सी पाण्डुलिपि किस स्थान पर रखी हैं, इसको लिखकर रखें।

7. अग्निशामक यंत्र एवं लाइट स्विच तथा फयूज बॉक्स को पाण्डुलिपि संग्रह कक्ष के बाहर स्थापित करना चाहिये।

8. दर्शकों के गमनागमन पर नियंत्रण रखें।

9. पाण्डुलिपियों के साथ रंग, रासायनिक पदार्थ एवं कोई ज्वलनशील वस्तु न रखें।

10. संग्रह कक्ष में धूम्रपान वर्जित करें।

11. पाण्डुलिपियों के लिये ऐसी पेटिका निर्माण करें जिसमें भंडारण तथा प्रदर्शन एक साथ हो सके।

12. पाण्डुलिपि को समतल पृष्ठ का सहारा देकर प्रदर्शित करना चाहिये।

13. प्रकाश, धूल, तापमान तथा आपेक्षित आर्द्रता के नियंत्रण के लिये पूर्वोल्लेखित कार्यविधियों का पालन करें।

14. भंडार एवं प्रदर्शन कक्ष में रखी पाण्डुलिपियों को नियपित भवन से परस्पर अदला-बदली करें।

जैन तीर्थ नैनागिरि के चतुर्मुखी विकास में श्री सुरेश जैन का अवदान

❋ विद्वत्रत्न पण्डित अशोक कुमार जैन, बम्हौरी ❋

नैनागिरि जैन तीर्थ के समीप स्थित बम्हौरी ग्राम के हमारे पितृपुरुषों का नैनागिरि तीर्थ के उत्खनन, विकास और सतत संधारण में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। विक्रम संवत् 1621 ई. सन् 1564 में चौसरा वंशीय गोलापूर्व श्री श्यामले ब्या ने नैनागिरि तीर्थ की खोज की और भगवान पार्श्वनाथ मंदिर एवं मूर्तियों का उत्खान कराया। बाबा दौलतराम वर्णी ने नैनागिरि में बाबा दौलतराम वर्णी दिगंबर जैन पाठशाला की वर्ष 1902 में स्थापना की और इस क्षेत्र में शैक्षणिक क्रांति का सूत्र पात किया। उन्होंने वर्ष 1904 में नैनागिरि पूजन की रचना की, जिसका सौ वर्षों के बाद संपादन कर हमें बड़ी प्रसन्नता हुई। हमारे दादा क्षुल्लक क्षेमसागर (मुनिवर आदिसागर) ने नैनागिरि में विशाल पार्श्वनाथ चौबीसी मंदिर का निर्माण कराया। श्री नन्हूराम जी नैनधरा और श्री ब्या दरबारीलाल बम्हौरी के सहयोग से भगवान पार्श्वनाथ की विशाल मूर्ति की प्रतिष्ठा कराई। चौसरा वंश द्वारा नैनागिरि में वर्ष 1955 में चलाये गये गजरथ में हम सबको ब्या से सिंघई की उपाधि प्राप्त हुई।

श्री सुरेश जी के पिता श्री सतीशचन्द्र जैन और हमारे पिता श्री बालचन्द्र जैन ने नैनागिरि पाठशाला में अध्ययन किया। श्री देव पार्श्वनाथ दिगंबर जैन सिद्धक्षेत्र रेशंदीगिरि (नैनागिरि) का लोक न्यास दिनांक 26.10.1979 को विधिवत गठित और पंजीकृत किया गया। हमारे पिता श्री बालचन्द्र जैन और सुरेश जी इस ट्रस्ट के संस्थापक न्यासी बने। हमारे पिताजी ने संस्थापक न्यासी और न्यास के उपाध्यक्ष के रूप में इस तीर्थ की अहर्निश सेवा की। हमारे पिताजी के देहावसान पर श्री सुरेश जैन को दिनांक 3 फरवरी 2002 को उपाध्यक्ष के पद पर चयनित किया गया। हमारे पिताजी को तथा हमें नैनागिरि के सभी गुप्तदान नियमित रूप से खोलने और प्राप्त राशि की गणना कर जमा करने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा है। न्यासी बनने के उपरांत हमें नैनागिरि तीर्थ की वेदियों का निष्ठापन, प्रतिष्ठापन और मूर्तियों का यथास्थान संस्थापन का सतत अवसर मिलता रहा है। नैनागिरि में हमें नियमित रूप से विधान, पूजन, अभिषेक, शांतिधारा जैसी धार्मिक क्रियायें और अनुष्ठान संपन्न करने में बड़ी प्रसन्नता होती है। हमारे पिता जी ने गत सत्तर के दशक में श्री सुरेश जी से अनेक अवसरों पर आग्रह किया कि वे अपनी प्रशासनिक सेवा से समय निकाल कर इस तीर्थ की सेवा करें। हमें प्रसन्नता है कि सुरेश जी ने उसकी सलाह का सम्मान किया।

हमें यह लिखते हुये प्रसन्नता हो रही है कि श्री सुरेश जैन के पिता का जन्म सुनवाहा में हुआ। मूर्ति प्रशस्तियों में विदित होता है कि उनके पूर्वजों का गत 238 वर्षों से सुनवाहा तथा नैनागिरि में मंदिर निर्माण तथा मूर्ति स्थापना में सहयोग रहा है।

सुनवाहा के जैन मंदिर में मूल बेदी पर मूलनायक के रूप में विराजमान भगवान आदिनाथ की अष्ट धातु की सुन्दर प्रतिमा है। इस प्रतिमा पर अंकित प्रशस्ति के अनुसार यह प्रतिमा गोलापूर्व अन्वय और चौंसरावंशी जगाती जी, जो श्री सुरेश जैन के बब्बा जी के बब्बाजी है, के

सुपुत्र ब्या झुनरे जी द्वारा माघ शुक्ल पक्ष सप्तमी गुरुवार तदनुसार 9 जनवरी 1783 को स्थापित कराई गई। इस प्रतिमा में निम्नांकित प्रशस्ति अंकित है।

संवत् 1840 माघमासे शुक्लपक्षे 7 गुरुवासरे प्रतिष्ठितम्। ग्राम सुनवाहा गोलापूर्वान्वय वंश चौसरा ब्या झुनारे नित्य प्रणमति।

इसी प्रकार ब्या झुनारे जी के द्वितीय पुत्र ब्या बहोरे जी द्वारा चैत्र शुक्ला चतुर्थी संवत् 1854 तदनुसार 1 अप्रैल 1797 शनिवार को भगवान चंद्रप्रभ की अष्टधातु की प्रतिमा विराजमान कराई गई।

नैनागिरि में मंदिर और वेदी निर्माण तथा मूर्ति संस्थापन

- यह भी उल्लेखनीय है कि नैनागिरि तीर्थ पर जगाती जी के सुपुत्र ब्या झुनारे जी, जो श्री सुरेश जी के पिताजी के बब्बा जी हैं, के द्वितीय पुत्र ब्या बहोरे जी के पुत्र श्री भागचन्द्र जी के द्वारा मंदिर क्रंमाक -30 एवं वेदी का निर्माण तथा भगवान चन्द्रप्रभ की मूर्ति स्थापित की गई। इस प्रतिमा में निम्नांकित प्रशस्ति अंकित है।

श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्य आम्नाये प्रतिष्ठितं।
मिति वैशाख सुदी 15 संवत् 1943 (तदनुसार 18 मई, 1886 मंगलवार)

- मंदिर क्रमांक 28 श्री सुरेश जैन के नाना जी खितई सिंघई द्वारा निर्माण किया गया था। श्री सुरेश जैन ने पर्वत पर स्थित मंदिर क्रमांक 28 एवं उपरिलिखित मंदिर क्रंमाक 30 का जीर्णोद्धार अपने परिवार की ओर से करा दिया है।
- पर्वत पर मंदिर क्रंमाक- 40 में पद्मप्रभ वेदी का नवीनीकरण का कार्य।
- पर्वत पर मंदिर क्रंमाक- 40 में पंच ऋषिराज की वेदी का नवीनीकरण।
- तलहटी में मंदिर क्रमांक- 41 में बाहुबली, ॐ ह्रीं एवं पंचमेरु की स्थापना। बाहुबली की मूर्ति 175 सेन्टीमीटर ऊँची है। इसकी प्रतिष्ठा विक्रम संवत 2533 में फाल्गुन कृष्ण सप्तमी को पूज्य निर्णयसागर जी और अभयसागर जी के सान्निध्य में आयोजित दलपतपुर पंचकल्याणक में कराई गई।

ॐ ह्रीं और पंचमेरु की प्रतिष्ठा नैनागिरि पंचकल्याणक 2014 में कराई गई।

- तलहटी में मंदिर क्रंमाक- 50 में महावीर भगवान की मूर्ति की स्थापना। भगवान महावीर की अष्ट धातु से निर्मित्त प्रतिमा की प्रतिष्ठा चैत्र शुक्ला 12 विक्रम संवत 2039 को करगुवां झांसी में आयोजित पंचकल्याणक में प्रतिष्ठाचार्य ब्र. मूलचन्द्र जी अहार द्वारा कराई गई।

भोपाल में मूर्ति संस्थापन :-

श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा जो पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर विद्यासागर इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट भोपाल में विराजमान है की प्रशस्ति -

2510 वीराब्दे 2059 वि.सं. माघकृष्णेपक्षे 6 तिथौ शुक्रवासरे तदनुसार 24 जनवरी 2003 श्री कुन्दकुन्दाम्नाये सर्वविश्रुते श्रुत पारंगत युग प्रवर्तकाचार्य श्री विद्यासागर महामुनिराजस्य ससंघ सान्निध्ये बा. ब्र. वाणी भूषण विनय कुमारस्य प्रतिष्ठाचार्यत्वे

पंचकल्याणक पंचगजरथमहोत्सवे भोपालनगरे जिनबिंब प्रतिष्ठापितमिदं लोककल्याणकारकं भवन्तु । प्रतिष्ठाकारक सतीशचन्द्र सुरेश विकास विधान सिंघई नैनागिरि हाल भोपाल की पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर आचार्य विद्यासागर प्रबंध विज्ञान संस्थान परिसर, भोपाल।

रायसेन में मूर्ति संस्थापन :-

न्यायमूर्ति विमला जी रायसेन जिले में अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश के पद पर पदस्थ रहीं। उन्होंने जैन मंदिर रायसेन में भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा स्थापित कराई। यह प्रतिमा मुनि श्री विशुद्ध सागर जी के सान्निध्य में आयोजित पंचकल्याणक में आश्विन कृष्णा त्रयोदशी विक्रम संवत 2061 तदनुसार 12 अक्टूबर 2004 मंगलवार को उनके पति श्री सुरेश जैन के नाम से प्रतिष्ठित की गई। वीर निर्वाण संवत 2531

श्री सुरेश जैन के द्वारा संस्थापक न्यासी (26.10.1979) और उपाध्यक्ष (3 फरवरी 2002 से 27 नवम्बर 2010 तक) के पदों पर रहते हुये तीर्थ को सतत सहयोग प्रदान किया गया। इस अवधि में उन्होंने निम्नांकित प्रमुख कार्य करायें।

नई धर्मशाला :-

• इक्कीसवीं शताब्दि के प्रथम दशक में नैनागिरि की नई धर्मशाला के विस्तृत नक्शे श्री सुरेश जैन के मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश गृह निर्माण मण्डल के मुख्य अभियंता श्री अयन कुमार जैन द्वारा तैयार किये गये। तत्कालीन मंत्री श्री सेठ दामोदार दास जैन और श्री मोतीलाल जी सांधेलीय के प्रयासों से इस नई धर्मशाला का निर्माण मुख्य अभियंता श्री अयन कुमार जैन के मार्गदर्शन में किया गया। श्री दामोदार जी की व्यक्तिगत रूचि के कारण इस धर्मशाला के सामने दो कतारों में अशोक के वृक्षों का रोपण किया गया।

• श्री सुरेश जी द्वारा भारत सरकार से धनराशि प्राप्त कर नई धर्मशाला के सामने पक्के प्रांगण का निर्माण कराया गया।

वात्सल्य भवन (संत भवन)

• श्री सुरेश जैन के सतत निवेदन पर श्री आर के जैन अध्यक्ष, मोहनलाल चन्द्रावती जैन चेरिटेबल ट्रस्ट देहली/मुम्बई द्वारा नैनागिरि में स्थित वात्सल्य भवन का निर्माण वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज के संघपति स्वर्गीय लाला श्रीपाल जैन एवं श्रीमती कैलाशवर्ती जी जैन की पुण्यस्मृति में वर्ष 2002-03 में कराया गया। इस भवन के सभी नक्शे श्री सुरेश जैन द्वारा मध्यप्रदेश गृह निर्माण मण्डल के मुख्य अभियंता श्री अयन कुमार जैन द्वारा तैयार कराये गये। तत्कालीन मंत्री श्री सेठ दामोदार दास जैन और श्री मोतीलाल जी सांधेलीय के प्रयासों से मुख्य अभियंता श्री अयन कुमार जैन के मार्गदर्शन में इस संत भवन का निर्माण पूर्ण किया गया।

• श्री सुरेश जी के द्वारा देश के सुप्रसिद्ध आर्कीटेक्ट श्री आजाद जैन, इन्दौर के निर्देशन में जल मंदिर के सौन्दर्यीकरण की योजना भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली को प्रस्तुत की गई। स्वीकृति के पश्चात श्री दामोदार जी के नेतृत्व में श्री मोतीलाल जी सांधेलीय के सहयोग से इस योजना का कार्यान्वयन किया गया।

• श्री सुरेश जी के द्वारा महावीर सरोवर के पश्चिमी और उत्तरी घाट का निर्माण भारत सरकार से कराया गया।

अध्यक्ष के पद पर रहते हुये वर्ष 2011 से 2021 के दशक में नैनागिरि में किये गये महत्वपूर्ण कार्य

• श्री सुरेश जैन को दिनांक 28 नवम्बर 2010 को अध्यक्ष के पद पर मनोनीत किया गया। अध्यक्ष बनते ही वे शासकीय सेवा से निवृत्त हो गये। अतः उन्होंने न्यायमूर्ति विमला जी के साथ नैनागिरि तीर्थ के चतुर्मुखी विकास में तन,मन और धन से निष्ठापूर्वक अपना पूरा समय और सहयोग देना शुरू किया। न्यास और प्रबंध के सभी पदाधिकारियों , न्यासियों और सदस्यों का आत्मीय सहयोग प्राप्त कर सुरेश जी ने गत दस वर्षों में इस तीर्थ के विकास में अपना अनुपम और असाधारण योगदान प्रदान किया है और पूरे देश में नैनागिरि तीर्थ को प्रचारित-प्रसारित कर दिया है।

• जल मंदिर परिसर में मानस्तंभ का निर्माण मुख्य अभियंता श्री अयन कुमार जैन के निर्देशन में संपन्न हुआ। इस मानस्तंभ का निर्माण कराने के उद्देश्य से श्री संतोष कुमार जी बैटरी वालों के साथ श्री सुरेश जैन और मुख्य अभियंता श्री अयन कुमार जैन के साथ मकराना गये। मानस्तंभ निर्माण कराने में पूरा सहयोग दिया और नैनागिरि में मानस्तंभ की स्थापना कराई। वर्ष 2014 में श्री संतोष कुमार जय कुमार जैन, बैटरी वालों के सहयोग से पंचकल्याणक का सफल आयोजन कराया।

• तलहटी में अपने संबंधियों से श्री श्रीचन्द्र आशीष कुमार जैन, सागर और श्री नरेन्द्र कुमार मनोज कुमार जैन नरसिंहपुर के प्रमुख सहयोग से विशाल सिद्ध मंदिर का निर्माण कराया।

• **वेदी नवीनीकरण-** तलहटी में स्थित मंदिर क्रंमाक 44 जेरठ/ पथरिया वालों के चन्द्रप्रभ मंदिर क्रमां 52 एवं मंदिर क्रमांक 50 में स्थित वर्तमान वेदियों का नवीनीकरण और सौन्दर्यीकरण किया गया। मूलतः यह मंदिर पूर्वमुखी था। वास्तुदोष निवारण की दृश्टि से इसे उत्तरमुखी कर दिया गया है। मंदिर क्रमांक 56 में नवीन वेदी का निर्माण किया गया। पर्वत पर मंदिर क्रमांक 37 एवं 40 में वेदी नवीनीकरण एवं सौन्दर्यीकरण कराया गया।

• ओम ह्रीं सहित बाहुबली मंदिर एवं पंचमेरु मंदिर का निमाण किया गया।

• मुनिवर प्रमाणसागर जी के आशीर्वाद एवं श्री पन्नालाल जी बैनाड़ा, आगरा के सहयोग से पर्वत पर विशाल संयम कीर्ति स्तंभ का निर्माण कराया गया।

• भारत सरकार से आवंटन प्राप्त कर श्री सुरेश जी ने पर्वत पर ध्यान केन्द्र का निर्माण कराया।

• पर्वत पर चौबीसी मंदिर के पीछे इन्द्र भवन का निर्माण, यह भवन बन जाने से चौबीसी मंदिर में पूजन अभिषेक करने वाले व्यक्तियों को पूजन के कपड़े बदलने की बड़ी अच्छी सुविधा हो गई है।

• नई धर्मशाला के सभी कक्षों के आधुनिकीकरण एवं सौन्दर्यीकरण का कार्य मुख्य अभियंता श्री संजय जैन के निर्देशन में संपन्न किया गया।

• वर्णी भवन के प्रथम तल पर 5000 वर्ग फीट के पूज्य गणेश प्रसाद वर्णी सभागार के निर्माण का कार्य श्री अजित जैन अभियंता के निर्देशन में संपन्न कराया।

- मध्यप्रदेश सरकार से आवंटन प्राप्त कर पर्यटन भवन का निर्माण कराया।
- श्री अशोक कुमार जी पाटनी मेसर्स आर.के. मार्बल्स किशनगढ़ से धनराशि प्राप्त कर विशाल भोजनालय का निर्माण कराया।
- श्री आर.के.जैन अध्यक्ष भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के प्रमुख सहयोग से नवीन कार्यालय भवन एवं उसके उसके ऊपर विशिष्ट अतिथि गृह का निर्माण भारत सरकार के प्रसिद्ध वरिष्ठ अभियंता श्री सुरेन्द्र सिंघई एवं उपयंत्री श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, टीकमगढ़ के तकनीकी निर्देशन में कराया गया।
- दलपतपुर में नैनागिरि भवन का निर्माण कराया गया। इस कार्य में श्री अशोक कुमार जैन, ठेकेदार, बण्डा श्री मोतीलाल आलोक कुमार सांधेलीय एवं श्री सत्येन्द्र लोहिया, दलपतपुर का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ।
- श्री संतोष कुमार जय कुमार जैन, बैटरी वालों के प्रमुख सहयोग से और इंजीनियर श्री अजित जैन के मार्गदर्शन में जल मंदिर की नींव का सुदृढीकरण एवं चबूतरे का नवनिर्माण कराया।
- कोषाध्यक्ष श्री अशोक कुमार जैन, मुख्य अभियंता एवं श्री विनोद कुमार जैन, डी.एफ.ओ. के सहयोग से तीर्थ परिसर की शोभवृद्धि के लिये फलदार, छायादार और सुन्दरतावर्धक सहस्राधिक वृक्षों का रोपण, संधारण और संरक्षण किया गया।

सभी मंदिरों के कलशों पर स्वर्ण अलंकरण

श्री सुरेश जैन ने अपने अथक प्रयासों से जैन सिद्धक्षेत्र नैनागिरि (रेशंदीगिरि) जी के पार्श्वनाथ मंदिर की मुख्य वेदी एवं सभी शिखरों पर आरोहित कलशों पर स्वर्ण करने का पुण्यवर्धक कार्य अपने मित्र श्री रविन्द्र कुमार- सुषमा जैन श्री निखिल-रितिका जैन, श्री अतिशय-दिशा जैन कुमारी प्राची, निर्वाण जैन आर.एस. स्टील्स आर-2/67, गाजियाबाद उ.प्र. द्वारा वर्ष 2021 में संपन्न कराया गया।

नैनागिरि में श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा के अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार सेठी, महावीर ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री देवकुमार सिंह कासलीवाल, अखिल भारतवर्षी य दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी, मुम्बई के अध्यक्ष श्री आर.के. जैन को नैनागिरि में आमंत्रित कर उनकी संस्थाओं की सभायें आयोजित कराई गई। श्री सेठी जी ने समवसरण मंदिर की भूमि पूजन की। श्री आर.के. जैन ने नये कार्यालय भवन एवं अतिथि गृह का शिलान्यास किया। अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन परिषद के अध्यक्ष डॉ. जीवनलाल जैन को नैनागिरि में विविध अवसरों पर आमंत्रित किया गया। उनकी माता जी श्रीमती खिलौनाबाई धर्मपत्नी श्री खेमचन्द्र जैन, ढोलक बीड़ी सागर ने समवसरण मंदिर में चार में से एक बड़ी मूर्ति विराजमान की।

नैनागिरि और समीपस्थ ग्रामों के विकास के कार्य :-

नैनागिरि और समीपस्थ ग्रामों के विकास संबंधी निम्नांकित कार्य किये गये :-

- भारत सरकार से रेलवे लाईन का प्राथमिक सर्वेक्षण कराया। इसमें धर्मशाला के पश्चिम में नैनागिरि रेलवे स्टेशन प्रस्तावित है।

- सोनागिरि से नैनागिरि होते हुये कुण्डलपुर तक सीधी बस का संचालन
- दलपतपुर-बक्स्वाहा पक्के मार्ग का निर्माण
- नैनागिरि-मझगुवाँ पक्के मार्ग का निर्माण
- आदिसागर सिंचाई तालाब का निर्माण
- कलेक्टर छतरपुर से आवंटन प्राप्त कर महावीर सरोवर का गहरीकरण।

समीपस्थ तीर्थ द्रोणागिरि, खजुराहो और अन्य तीर्थों / नगरों को सहयोग

सुरेश जी ने श्री आर.के. जैन अध्यक्ष मोहनलाल चन्द्रावती जैन चेरिटेबिल ट्रस्ट, मुम्बई को अपने साथ नैनागिरि से द्रोणागिरि ले गये। साथ में श्री अयन कुमार जैन, मुख्य अभियंता थे। उन्होंने श्री आर.के. जैन द्रोणागिरि में संत भवन के लिये दान देने का आग्रह किया। वे सहमत हो गये। श्री कपूरचंद्र जी घुवारा के विशेष प्रयासों से श्री अयन कुमार जी ने अपने निर्देशन में द्रोणागिरि में संत भवन का निर्माण कराया।

खजुराहो तीर्थ के तत्कालीन अध्यक्ष श्री दशरथ जैन महाप्रबंधक श्री अमरचन्द्र जी के आग्रह से श्री सुरेश जैन खजुराहो में आयोजित पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव में 25 जनवरी 1981 को सम्मलित हुये। उनके मित्र एस.एच.अली, पायलट पुष्पवर्षा के लिये हैलीकाप्टर ले गये। सुरेश जी अपनी कार से हैलीकाप्टर का पेट्रोल ले गये जो बहुत ही खतरनाक कार्य था। खजुराहो में गजरथ पर पुष्पवृष्टि की गई। उनके इस सहयोग की आचार्य श्री विद्यासागर और श्री दशरथ जैन द्वारा बड़ी सराहना की गई।

श्री दशरथ जी के आग्रह से वे भारत सरकार और राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों को खजुराहों ले गये और श्री अशोक साहू के साथ उनकी बैठक कराई। खजुराहो में जैन संग्रहालय निर्माण की अनुमति प्रदान कराई।

श्री सुरेश जी ने इन्दौर में गोम्मटगिरि में तीर्थ के लिये सर्वप्रथम दो एकड़ भूमि तथा इटारसी में जैन विद्यालय के लिये एक लाख वर्गफीट भूमि का आवंटन किया। पंचमढ़ी में मंदिर निर्माण के लिये सर्वोच्च ऊँचाई पर विशाल भूखण्ड उपलब्ध कराया। मुक्तागिरि तीर्थ के विकास में आधारभूत महत्वपूर्ण योगदान दिया।

श्री देवकुमार सिंह कासलीवाल की प्रेरणा से सुरेश जी ने इन्दौर में महावीर ट्रस्ट का गठन किया और इस ट्रस्ट को इन्दौर नगर के केन्द्र में स्थित भूमि का आंवटन कराया। वे इस ट्रस्ट में ट्रस्टी है।

इसी प्रकार नैनागिरि में दीक्षित आचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी की प्रेरणा से पुष्पगिरि ट्रस्ट का गठन कराया और इस ट्रस्ट को राज्य सरकार से भूमि का आवंटन कराया।

श्री सुरेश जी वर्तमान में अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन परिषद के उपाध्यक्ष है। वे अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी, मुम्बई के पांच वर्षो तक मंत्री रहे है। उन्होंने इस पद पर रहते हुये दक्षिण के तीर्थ क्षेत्रों का अपनी लेखनी के माध्यम से प्रचार-प्रसार किया। अपने समधी श्री कोमलचन्द्र जेन ,मुख्य अभियंता के नेतृत्व में उत्तर भारत से अनेक जैन परिवारों को इन तीर्थो की वंदना करने के लिये सफल प्रेरणा दी।

मांगीतुंगी और गिरनार जी तीर्थ को शासकीय भूमि का आवंटन

पूज्य ज्ञानमती माता जी की प्रेरणा से मांगीतुंगी पर्वत पर भगवन ऋषभदेव की मूर्ति शासकीय भूमि बनाई गई भूमि पर विभिन्न निर्माण कार्य किये गये है। इसी प्रकार गिरनार में आचार्य निर्मलसागर जी की प्रेरणा से शासकीय भूमि पर निर्मल ध्यान केन्द्र का निर्माण किया गया है। भारत सरकार से आदेश प्राप्त कर श्री सुरेश जैन ने दोनों तीर्थों पर तीर्थ की भूमि सरकार को सौंप दी और शासकीय भूमि तीर्थ को आवंटित करा दी। अब दोनों तीर्थों पर अपनी-अपनी स्वामित्व की भूमि पर निर्माण कार्य किये जा रहे है।

आचार्य विद्यासागर जी की प्रेरणा से अमरकण्ट में जैन मंदिर के लिये राज्य सरकार तथा अमरकण्टक विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण से भूमि का आवंटन कराया।

आचार्य श्री विद्यासागर जी के आशीर्वाद से जबलपुर में स्थापित भारतवर्षीय दिगंबर जैन प्रशासकीय प्रशिक्षण संस्थान निर्माण, संस्थापन एवं संचालन में सहयोग दिया और अनेक वर्षो तक इस संस्थान के संस्थापक संचालक के रूप में कार्य करते हुये इस संस्थान के विकास में सहभागिता की।

मुनिवर प्रमाणसागर जी की प्रेरणा से भोपाल में विद्यासागर इंस्टीट्यूट का संस्थापन एवं 25 वर्षों तक सफल संचालन किया।

बड़ागॉव (धसान) टीकमगढ़

श्री उदारसागर जन कल्याण तीर्थ धर्मार्थ ट्रस्ट बड़ागांव (धसान) टीकमगढ़ 30 मई 2010 को लोक न्यास के रूप में पंजीयत किया गया। इसके स्वामित्व में 15 एकड़ भूमि स्थित है। श्री सुरेश जैन इस ट्रस्ट के संस्थापक ट्रस्टी है। सुरेश जी ने इस ट्रस्ट का संविधान बनाने और इसका पंजीयन कराने में पूरा सहयोग दिया। मध्यप्रदेश गृह निर्माण के मुख्य अभियंता श्री अयनकुमार जैन के माध्यम से ट्रस्ट की भूमि का अभिन्यास तैयार कराया।

उपाध्याय पूज्य गुप्तिसागर जी के आशीर्वाद से राष्ट्रीय स्तर पर गुप्तिसागर विद्यापीठ चेरिटेबिल सोसायटी का गठन किया गया है। इस सोसायटी के अंतर्गत निर्माण विहार दिल्ली में नवनिर्मित अपने विशाल भवन में कामयाब स्टडी सेन्टर स्थापित किया गया है। इस सेन्टर के द्वारा भारत सरकार और राज्य सरकारों द्वारा आयोजित प्रतियोगिता परीक्षाओं में बैठने वाले छात्रों को प्रशिक्षण देने रहने और भोजन की व्यवस्था की गई है। यह सेनटर गत तीन वर्षों से सेन्टर के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री विजेन्दर कुमार जैन, नई दिल्ली एवं उपाध्यक्ष श्री सुरेश जैन के निर्दे शन में सफलता पूर्वक चल रहा है।

अंत में हमें उल्लेख करते हुये बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि राष्ट्रीय स्तर पर अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित और विविध उपाधियों से विभूषित श्री सुरेश जी को हमारी समाज द्वारा मुनिवर विरंजन सागर जी के सान्निध्य में 8 फरवरी 2020 को समाज रत्न से अलंकृत किया गया और उनके असाधारण अवदान की सराहना की गई।

आगम दर्शन

जैन तर्क विद्या का प्रतिनिधि ग्रंथ सन्मति सूत्र

सन्मति सूत्र 167 आर्या छन्दों में प्राकृत भाषा में निबद्ध अनेकान्तवाद सिद्धांत का प्रतिवादक ग्रंथ है। अनेकान्तावाद का सिद्धांत नयों पर आधारित है। अतएव ग्रंथ रचना में अनेकान्तवाद के साथ नयों का भी विवचेन किया गया है। सम्पूर्ण रचना तीन भागों में विभक्त है, जिन्हें काण्ड कहा जाता है। रचना में मूल तत्त्वों की सुन्दर व्याख्या है, जेसे कि लोक में उपलब्ध तत्वार्थ स्वयं तीन प्रकार के लक्षण वाले है, उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य, और यही यथार्थता का सत्य स्वरूप है।

यथार्थता का स्वरूप नय और निक्षेप इन दो मूल तत्त्वों के द्वारा स्वीकृत किया जाता है। और इनसे ही अनेकान्तवाद सिद्धांत का निर्माण होता है। जैन धर्म आज तक और आगे भी अनेकान्तवाद के रूप में निर्दिष्ट होता रहेगा। क्योंकि अनेकान्तवाद इसका प्राण है। अनेकान्तवाद शब्द का प्रयोग उस सत्य के लिये किया जाता है जो अनन्त गुण युक्त है और प्रत्येक तत्वार्थ में निहित है तथा जिसका परीक्षण विभिन्न दृष्टिकोणों से किया जाता है। इस ग्रंथ में इस अनेकान्त विधि का विस्तृत तथा विशद विवेचन किया गया है। ग्रंथ के प्रथम काण्ड में मुख्य रूप से नय और सप्तभंगी का द्वितीय काण्ड में दर्शन और ज्ञान का तथा तृतीय काण्ड में पर्याय गुण से अभिन्न वस्तु तत्व का प्रतिपादन किया गया है। निःसंदेह यह एक ऐसी रचना है जिसका प्रभाव सम्पूर्ण जैन साहित्य पर लक्षित होता है।अनेक रचनाओं में लगभग एक दर्जन में से चार कृतियों को कुछ विद्वान आचार्य सिद्धसेन रचित मानते हैं। सन्मति सूत्र के संबंध में किसी प्रकार का विवाद नहीं है। किन्तु तीन अन्य रचनायें अब तक विवाद ग्रस्त हैं ये तीनों एक ही सिद्धसेन की रचनायें हैं या यह निश्चित नहीं हैं। श्वेताम्बर इन तीनों रचनाओं को भी सिद्धसेन प्रणीत मानते है - कल्याण मंदिर स्तोत्र, न्यायावतार, और द्वात्रिशिंका इस में कोई संदेह नहीं हो सकता है कि कल्याण मंदिर स्तोत्र के रचियता आचार्य कुमुदचन्द है जैसा कि अन्तिम पद्य में प्राप्त उनके नाम से प्रमाणित होता है। पं. जुगलकिशोर जी मुख्तार की आलोचना ठीक है- ऐसी स्थिति में पार्श्वनाथ द्वात्रिशिंका के रूप में जो कल्याण मंदिर स्तोत्र रचा गया वह 32 पद्यों का कोई दूसरा ही होना चाहिये, न कि वर्तमान, कल्याण मंदिर स्तोत्र जिसकी रचना 44 पद्यों में हुई है और इससे कोई कुमुदचन्द भी भिन्न होना चाहिये। इसके सिवाय, वर्तमान कल्याण मंदिर स्तोत्र में प्राग्भारस, भतनभार्सि, रजांसि, रोषात् इत्यादि तीन पद्य ऐसे है जो पार्श्वनाथ को दैत्यकृत उपसर्ग से मुक्त करते हैं जो दिगम्बर मान्यता के अनुकूल और श्वेताम्बर मान्यता के प्रतिकूल है, क्योंकि श्वोताम्बर आचारांग नियुक्ति में वर्द्धमान को छोड़कर शेष तेईस तीर्थंकरों के तपः कर्म को निरूप वर्णित किया है। अतः कल्याण मंदिर स्तोत्र के रचियता सिद्धसेन न होकर निश्चय ही कुमुदचन्द्र नाम से भिन्न आचार्य है।

श्रावकाचारों के परिप्रेक्ष्य में उत्कृष्ट श्रावक- क्षुल्लक की चर्या

❋ डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत बागपत ❋

जैनाचार्यों ने मोक्षमार्ग पर चलने वाले चतुर्विध संघ में क्षुल्लक को ग्रहण किया है। क्षुल्लक उत्कृष्ट श्रावक है ग्यारहवीं प्रतिमा का धारक होता है इसकी भिक्षु संज्ञा है।[1] स्वामी कार्तिकेय ने ग्यारहवीं प्रतिमा के स्वरूप में भिक्खायरणेय पद दिया है, उससे भिक्षुक इस संज्ञा का समर्थन प्राप्त है।[2] आचार्य समन्तभद्र ने ग्यारहवीं प्रतिमा के स्वरूप निरूपण में भैक्ष्याशनः और उत्कृष्टः और ये दो पद दिये है उनसे भिक्षुक और उत्तम दोनों की पुष्टि होती है।[3] ग्यारहवीं प्रतिमा भिक्षुक के विषय में सर्वप्रथम आचार्य कुन्दकुन्द ने लिखा है -

दुइयं चवुत्तलिंगं उक्किट्ठं अवर सावयाणं च।
भिक्खं भमेइ पत्तो समिदीभासेण मोणेण।। सूत्र पाहुड 2।।

अर्थात् मुनि के पश्चात् दूसरा लिंग गृहत्यागी उत्कृष्ट श्रावक का है। वह पात्र लेकर ईर्या समितिपूर्वक मौन के साथ भिक्षा के लिये परिभ्रमण करता है।

इस गाथा में उत्कृष्ट श्रावक संज्ञा है और **भिक्खं भमेइ पत्तो** से भिक्षुक संज्ञा की ध्वनि निकलती है। आचार्य जिनसेन ने श्रावकों की प्रतिमाओं का विवेचन किया ही नहीं है किन्तु गर्भान्वय क्रियाओं में दीक्षाद्य क्रिया का वर्णन किया है।[4] इस क्रिया को करने वाला गृहत्यागी एक शाटक धारक होता था।[5] उक्त क्रियाकारक का रूप क्षुल्लक ही था। क्षुल्लक के विषय में जो कहा हैं-

क्षुल्लके एवैककं वस्त्रं नान्यत्र स्थितिभोजनम्।
आतापनादियोगोऽपि तेषां शश्वन्निषिध्यते।।
क्षौर कुर्याच्च लोचं वा पाणौ भुंक्तेऽथ भाजने।
कौपीनमात्रतंत्रोऽसौ क्षुल्लकः परिकीर्तितः।।[6]

अर्थात् क्षुल्लकों के लिये एक ही वस्त्र का कथन है वे दूसरा वस्त्र नहीं रख सकते। वे मुनियों के समान खड़े-खड़े भोजन नहीं करते हैं। उनके लिये आतापनयोग, वृक्षमूलयोग और योगों का भी शाश्वत निषेध किया गया है। क्षौर कर्म करा सकते हैं या केशलोंच कर सकते हैं। वे पाणिपात्र में भोजन कर सकते हैं या भोजन में भी आहार ले सकते हैं। जो कौपीन मात्र रखने का अधिकारी है, वह क्षुल्लक है। उत्कृष्ट श्रावक के बाद में एक चादर का भी विधान आ गया।

आदिपुराण में दीक्षा और अदीक्षा है जो दो भेद किये गये हैं, उनमें अदीक्षार्ह को प्रायश्चित चूलिकाधिकारों में क्षुल्लक संज्ञा दी गई है। क्षुल्लक शब्द का पर्याय विवर्ण, पामर नीच, प्राकृत जन, पृथकजन, निहीन, अपसद, जालप, क्षुल्लक और इतर हैं।[7] रसभकोष में भी क्षुल्लकस्त्रिषु नीचेऽल्पे इन सबसे स्पष्ट है कि क्षुल्लक शब्द का अर्थ नीच या हीन है। प्रायश्चित चूलिकाधिकार के आधार पर शूद्रकुलोत्पन्न को ही क्षुल्लक दीक्षा का विधान था। इसी कारण आतपनादि योग का इन्हें निषेध किया गया। आदि पद से जिनप्रतिमा मुद्रा का ग्रहण वीरचर्या, सिद्धान्त ग्रंथों के पढ़ने सुनने तक की जिनप्रतिमा मुद्रा का ग्रहण वीरचर्या, सिद्धांत ग्रंथों के पढ़ने सुनने तक की विद्वानों को रोक बताई है।[8] ग्यारहवीं प्रतिमा के धारक उत्कृष्ट श्रावकों को ही कहा गया है किन्तु

सर्वप्रथम इस प्रतिमा के दो भेदों का निरूपण किया है।[9] प्रथम एक वस्त्र को रखने वाला और दूसरा लंगोटी मात्र परिग्रह का धारक। प्रथम उत्तम श्रावक क्षुल्लक है जो दाढ़ी मूंछ और सिर के बालों को उस्तरे या कैंची से बनवाता है। सावधानी के साथ उपकरण आदि (कोमल वस्त्र) से स्थान का प्रतिलेखन अर्थात् संशोधन करता है। पाणिपात्र या भाजन में एक बार बैठकर भोजन करता है। किन्तु चारों पर्वों में चारों प्रकार के आहार का त्याग कर उपवास नियम से करता है।[10]

वर्तमान क्षुल्लकों ने नवधा भक्ति कराने का राग अलाप रखा है तथा एक ही घर में अर्घ्य आदि चढ़वाकर आहार ले रहें हैं, वह उचित नहीं है, क्योंकि आचार्य श्री वसुनन्दी का कथन दृष्टव्य है-पात्र को प्रक्षालन करके चर्या के लिये श्रावक के घर में प्रवेश करता है और आंगन में ठहरकर धर्मलाभ कहकर स्वयं ही भिक्षा मांगता है। भिक्षा न मिलने पर अदीन-मुख वहाँ से शीघ्र निकलकर दूसरे घर में जाता है और मौनपूर्वक अपने शरीर को दिखलाता है। यदि मार्ग के बीच में ही कोई श्रावक मिले और प्रार्थना करे कि भोजन ग्रहण कीजिये तो पूर्व घर से प्राप्त अपनी भिक्षा को खाकर शेष अर्थात् जितनी भूख हो तत्प्रमाण उस श्रावक के अन्न को ग्रहण करे। यदि कोई भोजन को न कहे तो अपने पेट के पूरण करने के प्रमाण भिक्षा प्राप्त करने तक परिभ्रमण करे अर्थात् अन्य-अन्य श्रावकों के घर जाये। आवश्यक भिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् किसी एक घर में जाकर प्रासुक जल मांगे। जो कुछ भी भिखा प्राप्त हुई हो उसे शोधकर भोजन करे और यत्न के साथ अपने पात्र को धोकर गुरु के पास जावें। यदि किसी को उक्त विधि में गोचरी करना न रुचे तो वह मुनियों के गोचरी कर जाने के पश्चात् चर्या के लिये श्रावक के घर में प्रवेश करे। यदि इस प्रकार भी भिक्षा न मिले तो उसे प्रवृत्ति नियमन करना चाहिये। अर्थात् फिर किसी के घर न जाकर उपवास का नियम कर लेना चाहिये। (वसु. श्रा. गाथा 304-309)

उक्त विधि से प्रथमोत्कृष्ट श्रावक आहार चर्या करता है। इसी प्रथमोत्कृष्ट श्रावक की परवर्ती मनीषियों ने क्षुल्लक संज्ञा दी है, क्योंकि इसकी चर्या क्षुल्लक के समान है। जो प्रायश्चित चूलिकाधिकार में वर्जित है। अब लाटी संहिताकार पण्डित राजमल्ल द्वारा वर्णित क्षुल्लक, एलक की अपेक्षा सरल चारित्र का पालन करता है। ग्यारहवीं प्रतिमाधारक की एलक, क्षुल्लक संज्ञा पं. राजमल्ल जी ने ही दी है। क्षुल्लक चोटी रखता है और यज्ञोपवीत धारण करता है। एक वस्त्र धारण करता है, कौपीन धारण करता है, वस्त्र की पीछी रखता है और कमण्डलु रखता है। यह क्षुल्लक भिक्षा केलिये एक कांसे का अथवा लोहे का पात्र रखता है तथा शास्त्रों में जो भोजन के दोष बतलायें हैं, उन सब दोषों से रहित एक बार भिक्षा भोजन करता है। सभी प्रतिमाओं का विधिवत् पालन करता है और केश बनवाता है।[11]

क्षुल्लक उत्कृष्ट श्रावक होता हुआ पांच घरों से भोजन लाकर मुनिराज के समागम होने पर उन्हें देकर बाद में श्रावक घर से प्रासुक जल ग्रहण कर स्वयं आहार कर सकता है। जैसा कि कहा गया है - भोजन के समय पर अर्थात् दोपहर के पहले वह भोजन के लिये नगर में जाता है तथा भ्रमर के समान बिना किसी को किसी प्रकार का दुःख पहुंचाये अपने पात्र में पांच घरों से आहार लेता है। वह क्षुल्लक श्रावक उन पांच घरों में से ही जिस घर में प्रासुक जल दृष्टिगोचर हो जाता है, उसी घर में भोजन के लिये ठहर जाता है तथा थोड़ी देर तक वही किसी भी मुनिराज को आहार देने के लिये प्रतीक्षा करता है। यदि आहारदान देने के लिये किसी मुनिराज का समागम मिल जाये

अथवा अन्य किसी पात्र का समागम मिल जाये तो वह क्षुल्लक श्रावक गृहस्थ के ही समान अपना लाया हुआ भोजन उन मुनिराज को दान देता है। दान देकर फिर अपने पात्र में जो कुछ बचा रहता है, उसको वह स्वयं ग्रहण कर लेता है। यदि अपने पात्र में कुछ न बचे तो उस दिन का उपवास करता है। (लाटी संहिता 66 से 68, श्रा. भाग-3, पृ. 148)

लाटी संहिता में क्षुल्लक को जिनेन्द्र पूजा करने का भी अधिकार दिया है- क्षुल्लक श्रावक को किसी साधर्मी पुरुष से यदि जल, चन्दन, अक्षत आदि पूजा करने की सामग्री मिल जाये तो प्रसन्नचित्त होकर अरिहन्त भगवान या सिद्ध भगवान की पूजा कर लेनी चाहिये।[12]

क्षुल्लकों के उपभेद भी होते हैं। कोई साधक क्षुल्लक हैं, कोई गूढ क्षुल्लक है और कोई वानप्रस्थ क्षुल्लक होते हैं। ये तीनों प्रकार के क्षुल्लक समान वेष धारण करते हैं और समान क्रियाएं करते हैं। मध्यम स्थिति व्रतों का पालन करते हैं।[13] पञ्चपरमेष्ठी की साक्षी पूर्वक व्रतों का ग्रहण करते हैं। स्पष्ट है कि जब स्वयं पञ्चपरमेष्ठी की साक्षी पूर्वक व्रत ग्रहण करते हैं तो इनकी दीक्षा नहीं होती है। आचार्यों को क्षुल्लक-क्षुल्लिका की दीक्षा नहीं देनी चाहिये। इनकी दीक्षा का विधान श्रावकाचारों में अप्राप्त है। कुछ अभ्यास करते हैं, कुछ ग्रहण करते हैं और कुछ ग्रहणकर छोड़ भी देते हैं।[14]

पण्डित श्री आशाधर जी ने एक भिक्षा नियम और अनेक भिक्षा नियम ऐसे दो प्रकार के क्षुल्लकों का वर्णन किया है। प्रथमतः जो क्षुल्लक एक ही घर में भिक्षा लेने का नियम पालते हों वे मुनिराज के भोजन के पश्चात् श्रावक के घर जाकर भोजन करें तथा यदि भोजन की प्राप्ति न हो तो जरूर ही उपवास करें।[15] अनेक भिक्षा नियम वाले के कर्तव्यों पर विचार किया जा रहा है- वह क्षुल्लक निश्चल बैठकर अपने हाथ रूपी पात्र अथवा बर्तन में अपने आप भोजन करें। क्षुल्लक भोजन का एक पात्र अपने हाथ में लेकर श्रावक के घर जाकर उसके आंगन में अथवा मकान के सामने जहाँ तक हर कोई जा सकता हे, वहाँ खड़े होकर **धर्मलाभ हो** ऐसा वचन बोलकर अथवा मौन पूर्वक अपना शरीर मात्र दिखाकर भिक्षा की प्रार्थना करे। भिक्षा मिले या न मिले दोनों दशाओं में सामान्य रहकर वहाँ से शीघ्र निकल आवे। यदि बीच में किसी श्रावक के द्वारा प्रार्थना की जाय कि भोजन ले लीजिये तो जो पहिले प्राप्त हुआ उसे ग्रहणकर उस श्रावक के द्वारा अपने उदरपूर्ति को जितनी आवश्यकता है उतना ले ले। यदि किसी ने भोजन ग्रहण के लिये आग्रह नहीं किया जो अपने उद्पूरण योग्य भोजन जहाँ तक मिले वहाँ तक भिक्षान्न की याचना करे। जिस श्रावक के यहाँ प्रासुक जल मिल जाय वहीं बैठकर मिली हुई वस्तुओं को शोध कर ग्रहण करें। (सा. धर्मा 7/40-43)

अनन्तर गुरु के पास जाकर चारों प्रकार के आहार का त्याग पूर्वक प्रत्याख्यान करे।[16] मुनियों के साथ वन में रहे और उनकी वैयावृत्ति करे।[17] पं. आशाधर जी ने क्षुल्लके समान दूसरा भेद एलक बताया है। वह लौंच करता है, मयूर पिच्छी रखता है और एक लंगोटी मात्र परिग्रह का धारक है। इसकी आर्य संज्ञा है।

वामदेव विरचित भाव संग्रह में भी पांच घर से भिक्षा लाकर खाने का विधान क्षुल्लकों के लिये है। उद्दिष्ट त्यागी श्रावक अपने उद्देश्य से बनी हुई भिक्षा का सेवन नहीं करता है। इसके दो भेद हैं पहला ग्रन्थ संयुक्त और दूसरा कौपीन धारक। इनमें से पहला क्षौर कर्म कराता है, एक

आवरण वस्त्र-चादर रखता है, पांच घर से भिक्षा लाकर खाता है और गुरु के समीप शास्त्र पढ़ाता है।[18] यह प्रथम ग्रन्थ संयुक्त क्षुल्लक ही है।

सागर धर्मामृत में कहा है कि वह क्षुल्लक संयम की इच्छा करता हुआ अपने भोजन के पात्र को धोने आदि के कार्य में अपने तप और विद्या आदि का गर्व नहीं करता हुआ स्वयं की यत्नाचार पूर्वक प्रवृत्ति करे नहीं तो बड़ा भारी असंयम होता है।[19] उदिदष्ट त्याग प्रतिमा का धारक अपने निमित्त बने हुये भोजन, उपकरण, शय्या और वस्त्र आदि से विरत होकर एक मात्र शाटक को धारण करता है। भिक्षावृत्ति से पाणिपुट द्वारा बैठकर भोजन करता है। रात्रि में प्रतिज्ञा आदि तपों के करने में उद्यत रहता है और दिन में आतापन योग से रहित रहता है।[20]

कार्तिकेय स्वामी ने उद्दिष्ट त्याग प्रतिमा का वर्णन करते हुये कहा है कि जो श्रावक भिक्षावृत्ति से याचना रहित नवकोटि विशुद्ध आहार ग्रहण करता है वह उद्दिष्ट त्याग प्रतिमा का धारक होता है।[21]

क्षुल्लक सफेद वस्त्र ही धारण करते हैं। पद्मपुराण में कहा है कि वह क्षुल्लक धारण किये हुये सफेद चंचल वस्त्र से ऐसा जान पड़ता था मानों मृणालों के समूह से वेष्टित मन्द-मन्द चलने वाला गजराज हो।[22] सागारधर्मामृत में कहा है- सितकौपीनसंत्यानः अर्थात् क्षुल्लक सफेद लंगोटी एवं ओढ़नी (चादर) रखता है।[23] इसी ग्रंथ में यह भी लिखा है कि प्रथम उत्कृष्ट श्रावक (क्षुल्लक) प्राणियों को बाधा नहीं पहुँचाने वाले कोमल वस्त्रादि उपकरण से स्थानादिक में शुद्धि करे।[24] क्षुल्लक को मयूर पिच्छी का निषेध है।

उक्त कथन से स्पष्ट है कि मुनि दीक्षा के अयोग्य कुल में जन्मा व्यक्ति क्षुल्लक के व्रत ग्रहण करता था। प्रतिलेखन के लिये वस्त्रादि रखता था। भोजन हेतु पात्र भी रखता था। श्वेत वस्त्र ही धारण करता था। सिद्धांत ग्रंथों का पठन-पाठन नहीं करता था। सर्वोच्च व्रतों का पालक भी होता था।

संदर्भः **1.** भिक्षुकौ द्वौ तु निर्दिष्टौ। यशस्तिलक 824, **2.** स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा गाथा 90, **3.** भैक्ष्याशनस्तपस्यन्नुत्कृष्टश्चेलखण्डधरः रत्न.श्राव. 147, **4.** आदिपुराण पर्व 38 श्लोक 157-158, **5.** त्यक्तागारस्य तस्यातस्तपोवनमुपेयुषः। एक शाटकधारित्वं प्राग्वद् दीक्षाद्यमिष्यते। श्रा.सं. भाग-1, पृ. 63, **6.** प्रायश्चितचूलिकाधिकार श्लोक सं. 155 एवं 156, **7.** विवर्णः पामरो नीचः प्राकृतश्च पृथक्जनः। निहीनोऽपसन्दो जाल्पः क्षुल्लकश्चेतरश्च सः। अमरकोष द्वि.का. शूद्र वर्ग, **8.** श्रावकाचार संग्रह भाग 4, भूमिका पृ. 91-92, **9.** एयारसम्मि ठाणे डक्किट्ठो साओ हवे दुविहो। वत्थेक्कधरो पढमो कोवीणपरिग्गहो विदिओ। वसुनन्दी श्राव. 301, **10.** वसुनन्दी श्रावकाचार गाथा 303 श्रा.सं.भा.1, पृ. 455, **11.** श्रा.सं.भा. 1, पृ. 143-149, **12.** किञ्च गन्धाादि द्रव्याणमुपलब्धौ सधर्मिभिः। अर्हदबिम्बादिसाधूनां पूजा कार्या मुदात्मना। लाटीसंहिता 69, **13.** लाटीसंहिता 70-71, **14.** वही 72-73, **15.** सागारधर्मामृत 7/46, **16.** वही 7/45, **17.** वही 7/47, **18.** नोद्दिष्टां सेवते भिक्षामुद्दिष्ट विरतो गही। द्वयैको ग्रन्थ संयुक्तस्त्वन्यः कोपीनधारकः। आद्यो विदधाति क्षौरं प्रवृणोत्येकवासनम्। पञ्चभिक्षाशनं भुंक्ते पठते गुरुसन्निधौ॥ भा. सं. 103-104, **19.** सागारधर्मामृत 7/44, **20.** चारित्रसार उदधृत श्रा.सं. भा. 1, पृ. 259, **21.** कार्तिकेयानुप्रेक्षा 90, **22.** पद्मपुराण पर्व 36 श्लोक 100, **23.** सागारधर्मामृत 7/38, **24.** सागारधर्मामृत 7/39

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
अप्रैल 2021
फूलों की कलियों का इतना कहना है।

प्रथम-

जो खिलता वो मुरझाता
मुरझाने पर कोई पास न आता
दुनिया की ये रीत पुरानी
जो समझे वो सच्चा ज्ञानी
आगम शास्त्र वेद सब पढ़कर
जिसने जीवन पहचाना है
नश्वर काया माया
फूलों का कलियों का इतना कहना है

श्रीमति रजनी जैन, राहतगढ़

द्वितीय-

क्षणभंगुर जीवन की कलियाँ
सबको सार बताती है
हर आतम में ज्ञान सुरुभि है
सको ये समझाती है
फूल-फूल में भटकों मत तुम
कलियों का फूलों से इतना कहना है

श्रीमति पल्लवी जैन, सागर

तृतीय-

तुम खिले सौरभ बिखराते
हम भी पीछे साथ तुम्हारे
आज नहीं तो कल का किस्सा
चूमेंगे हमको जन सारे
हमने शक्ति को पहचाना है
कलियों का फूलों से इतना कहना है

श्रीमति अनीता जैन, इंदौर

वर्ग पहेली क्र. 258
फरवरी 2021 के विजेता

प्रथम : श्रीमति इन्द्रा जैन, इंदौर
द्वितीय : श्रीमति आकांक्षा जैन, अहमदाबाद
तृतीय : श्रीमति रजनी जैन, दिल्ली

पथरीधन चूर्ण
पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि–
1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
3) प्रथम खुराक लेनेके बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट– यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया,संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-4003506 मो.:8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

पुराण प्रेरणा

भय की विकरालता

सर्वतोऽपि सुदुःप्रेक्ष्यां नरेन्द्राणामपि स्वयम्।
दृष्टिविषस्येव धिक् धिग् लक्ष्मी भयावहाम्॥

जिस प्रकार दृष्टिविष सर्व की दृष्टी नरेन्द्र-विषवैधों के लिये भी सब ओर से स्वयं अनन्तो दुख से देखने के लिये योग्य तथा भय उत्पन्न करने वाली है। उसी प्रकार यह लक्ष्मी भी नरेन्द्र-राजाओं के लिये भी सब ओर से अत्यन्त दुखप्रेक्ष्य-दुख से देने योग्य तथा भय उत्पन्न करने वाली है इसलिये इसे धिक्कार हो।

इति ध्यायन्मनश्र्चके स तस्याहरणे नृप :।
अपवाक्षे हि सह्येत रक्तेन न मनोव्यथा।

इस प्रकार विचार करते हुये राजा सुमुख ने उसके हरण करने में मत लगाया सो ठीक ही है क्योंकि रागी मनुष्य अपवाद को तो सह सकता है परंतु मन की व्यथा को नहीं सह सकता।

यशः प्रकाशमानोऽपि लोकज्ञः सोऽत्यमुह्यत।
तमः पतनकाले हि प्रभवत्यपि भास्वतः॥

आचार्य कहते हैं कि देखो राजा सुमुख यश से प्रकाशमान या तथा लोकव्यवहारा ज्ञाता था फिर भी अत्यन्त मोहको प्राप्त हो गया सो ठीक ही है क्योंकि सूर्य के पतन का जब सम आता है अंधकार की प्रबलता हो ही जाती है।

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. ओ आ त् क् य् त् ओ र आ तो
2. आ र् व् अ ए आ म् अ त् न् क् अ ए ग् ह् अ चे
3. अ ओ इ् आ ब् म् अ त् ल् अ ग् उ व् अ क् ई इू
4. श् ए ओ व् य् प् अ द् अ दि
5. ई ग् ओ य् आ अ त् क् अ श् आ म् न् अ ह् अ

परिणाम :
अप्रैल 2021: (1) मूलाचार प्रदीप (2) मूलाचार (3)स्वयंमू स्त्रोत (4) भरतेय वैभव (5) धर्म रत्नाकर

केरियर

विधि वेत्ता बनने का अवसर

लॉ-थॉमस जेफरसन के शब्दों में कानून का अध्ययन विभिन्न दृष्टिकोणों में उपयोगी है। यह एक आदमी को खुद के लिये अपने पड़ोसियों और जनता के लिये उपयोगी होने के योग्य बनाता है।

वकीलों को हमारे समाज में उच्च दर्जा मिलता है। यह विश्वास रहता है कि जब बाकी सब कुछ विफल हो जाता है तब भी कोई कानूनी व्यवस्था का रास्ता अपना सकता है। कई स्थितियों में हमें कानूनी पेशेवरों की आवश्यकता होती है जो कानून का ठीक से विश्लेषण और व्याख्या करते हैं।

विशेषता के विभिन्न क्षेत्र : सिविल कानून, फौजदारी कानून, कंपनी कानून, श्रम कानून, कराधान कानून, अंतराष्ट्रीय कानून, पारिवारिक नियम, संविधानिक कानून, प्रशासन कानून, पेटेंट कानून, आदि।

वेतन भत्ता: प्रतिष्ठित लॉ-कॉलेजों में कैंपस भर्ती 35,000/- से 40,000/- प्रति माह के रूप में शुरु होती है।

परीक्षा: CLAT (Commen low admission tent) कुछ इंस्टीट्यूट अलग परीक्षा कराते हैं।

प्रतिष्ठित संस्थान: NLSIU Benglore, NALSAR Hyderabad, NLU Bhopal, NUJS Kolkata, NLU Jodhpur, HNLU Raipur, GNLU Gandhinagar

परीक्षा चिन्ह: इंग्लिश, सामान्य ज्ञान, गणित, एप्टीटयूड, रीजनिंग

शैक्षिक योग्यता: (10+2) 50% अंको के साथ।

जॉब : वरिष्ठ वकील की सहायता करके अनुभव प्राप्त कर सकते हैं। कॉर्पोरेट या संस्था में शामिल हो सकते हैं।

कविता

मानव को मानव पर अगर विश्वास हो जाये

✲✲ संस्कार फीचर्स ✲✲

मानव को मानव पर अगर विश्वास हो जाये
मुश्किल नहीं है स्वर्ग सा वातास हो जाये
फरिश्ते भी चरण आ इंसान के चूमे
मान को गर पराई पीर का अहसास हो जाये
अंधेरों को मिटाना कोई बड़ी बात नहीं है
माटी के दीप में बस नेह सा प्रकाश हो जाये
मनुज पा सकता है जन्नत को करे मेहनत कशी लेकिन
दोजख की छाँव से चेहरा ना उदास हो जाये
सांसों की किश्तियाँ तैरा दी हैं समुन्दर में
मौत को जीते अगर तो इतिहास हो जाये

प्रवचन-आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

फार्मूला गर्मी भगाने का

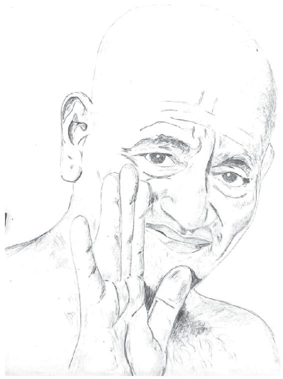

यह बहुत लोगों की विपरीत धारणा हो सकती हैं, होती है। प्रायकर मूल सिद्धांत को दृष्टि में नहीं ले पाने से इस प्रकार की गलत धारणा हो सकती हैं। उस गलती को बाह्य निमित्त के कारण स्वीकार भी नहीं कर पाते हैं। यह निश्चित् है किसी को उष्णता अथवा शीत का अनुभव हुआ, वह अनुभव क्या हैं? उसे शास्त्रीय पद्धति से कहने में हम सफल नहीं हो पाते हैं।

जिस शीत अथवा उष्णता का अनुभव हुआ उसे पूछा जाय तो वह यही कहेगा कि बहुत शीत लहर चल रही है अथवा तापमान इतना ऊपर चला गया है कि कितना ? 50^0 को छूने लगा है। उष्णता का अनुभव तापमान के कारण हो रहा है। ये सामान्य नियम है। विशेष नियम तो यह है कि गर्मी के अन्दर भी सर्दी लग सकती है और ठण्ड में भी गर्मी का अनुभव हो सकता है। 50^0 तापमान में भी शीत का अनुभव कैसे हो सकता है ? हम बताते हैं।

आपके भीतर नाम कर्म का उदय है। यदि शीत नामकर्म का उदय है तो आप को शीत का ही अनुभव होगा भले ही तापमान 50^0 हो जाय। सुनकर बड़ा अटपटा सा लग रहा है ना ? किन्तु ये वास्तविकता है। आप कर्म को मानते हैं कि नहीं ? महाराज हम कर्म को भी मानते हैं और लौकिक धर्म को भी मानते हैं। इस सिद्धांत को स्वीकार करें।

तापमान उष्ण होकर उदीरणा में कारण (निमित्त) हो सकता है पर उदीरणा से ही ये कोई आवश्यक नहीं हैं। आचार्य कहते हैं जो बाहर दिख रहे हैं वह नौ कर्म है और भीतर के कर्म माने जाते हैं। हमारे यहाँ नो कर्म चेतना में परिवर्तन हो तो कर्म चेतना में भी परिवर्तन होये आवश्यक नहीं है। फिर तो महाराज हम आम खा रहे हैं और भीतर वैसे स्वाद का उदय नहीं है तो...। जो पैसा दिया उसका क्या होगा ?

भीतर से जो स्वाद कर्म का उदय रहेगा, वही आयेगा भले ही पैसे दे दिये हो। उदीरणा मिठास के कारण है। इसलिए साधु लोग जो कुछ भी होता है उसमें समता धारण करता हैं। अकाल में भी-बे मौसम में भी भिन्न-भिन्न स्वाद का अनुभव करना चाहते हैं क्योंकि साहुकार है। हम कड़वे में भी मिठास का अनुभव करते हैं वोभी बिना पैसे खर्च किये।

आप थोड़ा सा पैसा खर्च कर स्वाद लेना चाहते हैं ये तो भगवान अथवा होनहार भगवान जानते हैं। यदि हमने मन-वचन-काय को वश कर लिया तो अलग ही क्वालिटी का स्वाद आता है। चाहो तो देख लो। स्वाद जब भी आयेगा यही आयेगा। नो कर्म पर भरोसा न रख के कर्म पर भरोसा रखेंगे तो बहुत कुछ हो सकता है। इतना ही पर्याप्त है। गर्मी में भी आप सब व्यवस्थित बैठे हैं।

दुनिया भर की बातें

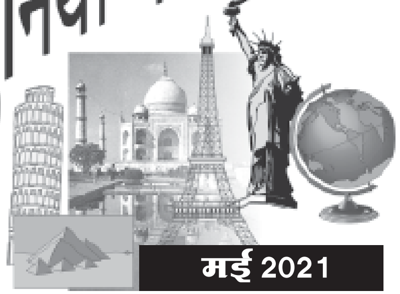

■ 1 मई

- बिहार के सीवान के नेता और पूर्व सांसद मोहम्मद शहाबुद्दीन का कोरोना से निधन हुआ।

- पी.एन.बी. बैंक के 14000 करोड़ का घोटाला करने वाले नीरव मोदी ने प्रत्यर्पण के खिलाफ याचिका दाखिल की।

-यू.पी. पंचायत चुनाव मतगणना को सुप्रीम कोर्ट ने स्वीकृति दी परन्तु जीत के जश्न पर रोक लगाई।

■ 2 मई

- पश्चिम बंगाल सहित 5 राज्यों में विधानसभा चुनाव के परिणाम आये बंगाल में तृणमूल ने 212 सीटें आसाम में भाजपा ने 78 तमिलनाडु ने द्रमुक 154 केरल में 92 और पांडुचेरी में भाजपा ने 15 सीटें जीती।

- म.प्र. के दमोह उपचुनाव में कांग्रेस के प्रत्याशी अजय दंडन 1709 मतों से जीते।

- काबुल : गजनी शहर की नेशनल आर्मी चौकी पर तालीबान ने हमला किया 30 सैनिक लापता।

■ 3 मई

- चामराज नगर कर्नाटक : ऑक्सीजन की कमी के कारण 24 मरीजों की मौत हुई।

-टी रविशंकर रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के डिप्टी गवर्नर पद संभाला।

- पाकिस्तान ने फिर समझौता तोड़ा एल.ओ.सी पर गोलीबारी की।

■ 4 मई

- जम्मू कश्मीर के पूर्व राज्यपाल जगमोहन मल्होत्रा का निधन हुआ।

- कोलंबिया में कर सुधार के खिलाफ देशव्यापी प्रदर्शन के दौरान आगजनी और हिंसा 17 की मौत हुई।

- सुप्रीम कोर्ट ने पश्चिम बंगाल के हाऊसिंग इंडस्ट्री कानून को असंवैधानिक करार दिया।

■ 5 मई

- काठमांडुः नेपाल में के.पी. शर्मा ओली सरकार ने बहुमत खोया 1 प्रचंड की पार्टी ने समर्थन वापस लिया।

- आम चुनाव के 1 महीने बाद भी प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू नई सरकार बहुमत सिद्ध नहीं कर पायी।

- लखनऊः आक्सीजन सिलेंडर भरने के दौरान विस्फोट हुआ जिससे 3 लोगों की मौत हुई 6 अन्य घायल हुये।

■ 6 मई

- राष्ट्रीय लोक दल के नेता चौ. अजीत सिंह का कोरोना से निधन हुआ वे 82 वर्ष के थे।

- कोरोना का इलाज कर रहे म.प्र. के सभी अस्पतालों में आयुष्मान योजना लागू हुई।

- वैक्सीन से जुड़े पेटेंट को सस्पेंड करने भारतीय प्रस्ताव पर अमेरिका तैयार हुआ।

■ 7 मई

- संगीत निर्देशक वनराज भाटिया का निधन हुआ वे 93 वर्ष के थे।

-मालदीप के पूर्व राष्ट्रपति मुहम्मद नशीद आतंकी हमले में घायल हुये।

-अलीगढ़ : ऋग्वेद में पी.एच.डी करने वाले प्रो. खालिद बिन युसूफ का कोरोना से निधन हुआ। वे 54 वर्ष के थे।

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा जब लोग मर रहे हों तो हाईकोर्ट शांत नहीं रह सकती कर्नाटक के हाईकोर्ट के आदेश में दखल देने से इंकार किया।

■ 8 मई

- पाक के विदेशमंत्री शाह महमूद कुरैशी ने कहा कि अनुच्छेद 370 भारत का आंतरिक मामला है।

- मुंबई आई.एन.एस विक्रमादित्य में आग लगी।

- आंध्र प्रदेश की कड़पा जिले की चूना पत्थर खदान में विस्फोट होने से 9 लोगों की मौत हुई।

■ 9 मई

- पाकिस्तानी मूल के सादिक खान लंदन के दूसरी बार बने।

- भुवनेश्वरः प्रसिद्ध मूर्तीकार और राज्यसभा सांसद रघुनाथ महायात्रा कोरोना से निधन हुआ । पद्मश्री, पद्मभूषण पद्मविभूषण से सम्मानित थे।

- असम के विधायक दल के नेता हिमंत विस्व सरमा चुने गये । सर्वानंद सोनोवाल ने इस्तीफा दिया चीन के बेकाबू 5-बी रॉकेट का मलबा हिन्द महासागर में गिरा। 21 टन बजन का था।

■ 10 मई

- नेपाल के प्रधानमंत्री के.पी. शर्मा ओली ने संसद में विश्वास मत खोया 124 विरोध में 94 समर्थन मत पड़े।

राजस्थान जैन समाज ने 50 करोड़ के 10 हजार आक्सीजन कंसटेट्रर भेजने का निर्णय लिया।

-यरूशलमः इजरायल-फिलीस्तीन में संघर्ष भड़का यहूदियों की प्रार्थना शुरु होते ही पत्थराव हुआ।

■ 11 मई

- इंदौर के राजेश अग्रवाल लंदन के दूसरी बार डिप्टी मेयर बने।

- रूस के काजन शहर के एक स्कूल में गोलीबारी होने से 7 बच्चों सहित 11 लोगों की मौत हुई। 28 लोग घायल हुये।

- केरल की पहली राजस्व मंत्री ई.एम.एस गौरी का 102 वर्ष में निधन हुआ।

■ 12 मई

- पूर्व सी.बी.आई. अधिकारी के रागोथमन का कोरोना से निधन हुआ वे 76 साल के थे।

-बॉम्बे हाईकोर्ट की औरंगाबाद बेंच ने राज्य में नेताओं और मंत्रियों द्वारा कोरोना

प्रतिबंधों का पालन नहीं करने पर नाराजगी जताई।

-पी.एम के यर्स फंड से 1.50 लाख ऑक्सी केयर सिस्टम खरीदने की मंजूरी।

■ **13 मई**

- उत्तर प्रदेश के उन्नाव में गंगा तट पर 800 शव रेत में दफन मिले।

- यूपी सरकार ने बिहार के शवों कें अंतिम संस्कार पर रोक लगाई।

■ **14 मई**

- अमेरिका ने वैक्सीन की दोनों डोज लें चुके नागरिकों को मास्क हिस्टेंशन फ्री किया।

- चित्रकूटः जेल में गैंगवार मुख्तार अंसारी को नजदीकियों सहित 3 अपराधी मारे गये।

- गाजाः अब तक की सबसे भारी बमबारी हुई इजरायल ने सैनिक भेजे।

■ **15 मई**

- अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन की वरिष्ठ सलाहकार नीरा टंडन नियुक्त हुई।

- तिब्बत के नये प्रधानमंत्री पेंपासरिंग की निर्वासित सरकार अमेरिका ने बधाई दी।

- जूनियर पहलवान सागर राणा की हत्या के मामले ओलांपिक पदक विजेता सुशील कुमार के खिलाफ गैर जमानती वारंट जारी हुआ।

■ **16 मई**

- कॉंग्रेस के राज्यसभा सांसद राजीव सातव का निधन कोरोना से हुआ। वे 46 साल के थे।

- तूफान ताउते ने अपनी दिशा बदली गोवा से 220 कि.मी. दूर से गुजरा कर्नाटक में 4 और महाराष्ट्र में 2 लोगों की मौत हुई।

- भोपाल : प्रदेश की प्राची यादव पेंश लिंपिक के लिये क्वाली फाई किया।

■ **17 मई**

- ताउते तूफान से महाराष्ट्र में 12 मौतें हुई तथा 410 लोगों के साथ दो बड़ी नावें लापता हुई। इस तूफान ने 5 राज्यों में तबाही मचाई।

- डी आर डी ओ की कोरोना रोधी दवा 2 डी जी का पहला बैच रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने जारी किया।

- इजरायल ने हमास की 15 किमी. लम्बी सुरंग तबाह की।

■ **18 मई**

- ताउते कमजोर पड़ा गुजरात में 13 लोगों की मौत हुई 16 हजार घर तबाह हुये 4 जहाज समुद्र में फंसे 314 लोगों को बचाया 297 की तलाश जारी है।

- आई एम ए के पूर्व अध्यक्ष डॉ. के.के. अग्रवाल पद्मश्री का कोरोना से निधन हुआ वे 62 वर्ष के थे उन्हें वैक्सीन दोनों डोज लग चुके थे।

- 2 लाख आबादी वाले देश समोआ की पहली महिला प्रधानमंत्री फैम ना ओमी माता अफा बनीं।

■ **19 मई**

- दक्षिण अमेरिका के इक्वाडोर में डार्विन द्वीप का डार्विन आर्च प्रकृतिक कटाव के कारण बह गया।

- हाईकोर्ट ने पुलिस को निर्देश दिया कि मास्क पहनने वाले से अभद्रता नहीं करें।

- पश्चिम बंगाल के राज्यपाल जगदीप धनखड राजभवन के सामने भेड़ युक्त प्रदर्शन से नाराज हुये।

■ **20 मई**

- भा. चि. अनुसंधान परिषद ने कोवी सेल्फ जांच किट को मंजूरी दी। यह किट 15 मिनट में रिर्पोट देगी।

- अंटार्कटिका से हिमखंड कटीयहा 70 किमी. लम्बा और 25 कि.मी. चौड़ा है।

-काठमांडू : नेपाल सरकार के 7 मंत्रियों की नियुक्ति सुप्रीम कोर्ट ने रद्द कर दी इससे के.पी. शर्मा ओली को बड़ा झटका लगा।

■ **21 मई**

- इजरायल और फिलस्तान के बीच 11 दिन चले संघर्ष के बाद संघर्ष विराम पर सहमति बनी।

- पर्यावरण के पितामह चिपको आंदोलन के प्रणेता सुन्दर लाल बहुगुण का निधन हुआ वे 94 वर्ष के थे।

- मोगा (पंजाब): मिग 21 क्रैश हुआ पायलेट अभिनव चौधरी शहीद हुये।

■ **22 मई**

- प्रधानमंत्री के.पी. शर्मा ओली की सिफारिश पर राष्ट्रपति विद्या भंडारी ने नेपाल सांसद भंग कर दी।

- जिम्बाम्बे के पारंपरिक कोर्ट ने दिवंगत राष्ट्रपति मुगाबे की पत्नी ग्रेस मुगाबे पर 5 गाय, 2 बकरी का जुर्माना लगाया यह जुर्माना मुगावे के दफनाने के मामले में लगाया गया।

- दादर कोर्ट ने अहम फैसले में कहा पैदल की गलती है तो वाहन ड्रायवर पर केश नहीं बनेगा।

■ **23 मई**

- पूर्व मुख्यमंत्री प्रदेश कॉंग्रेस अध्यक्ष कमल नाथ पर पुलिस ने धारा 188 और आपदा प्रबंधन की धारा 54 के तहत केस दर्ज एफ आई आर हुई।

- भारत में कोरोना से 3 लाख मौते हुई।

- दुनिया की चौथी सबसे ऊँची चोटी माउंट लाओर से पर 18516 मीटर के शिखर पर शस्त्र बल के तीन जवान पहुँचे।

-चीन के ग्रांस प्रांत में खराब मौसम की वजह से मैराथन में भाग ले रहे 21 धावकों की मौत हुई।

■ **24 मई**

- केन्या की माथी कूम सुप्रीम कोर्ट की पहली महिजा जस्टिस बनी।

- बंगाल की हिंसा चीफ जस्टिस एन. वीरमना को 20913 महिला वकीलों ने चुनाव के बाद हुये हिंसा की घटनाओं पर पत्र लिखा।

-अमरावतीः आंध्र ट्रक लूटने वाले गिरोह को 12 व्यक्तियों को अंगेल कोर्ट ने मौत की सजा सुनाई।

■ **25 मई**

- सन् 1971 पाकिस्तान युद्ध के हीरों पंजाब सिंह का निधन हुआ कमांडिंग अफसर रहे।

- सुबोध कुमार जय सवाल नये सीबीआई के महा निर्देशक नियुक्त हुये।

- इटली के सिसली में ज्वालामुखी फ्टा।

■ 26 मई

- लचर जांच और पीड़िता के व्यवहार से तरूण तेजपाल को संदेह का लाभ मिला और वे बरी हुये।

- बंगालः उड़ीसा के तटीय क्षेत्र में कहर बरसाकर यास तूफान कमजोर पड़ा लाखों घरो को नुकसान हुआ।

- अश्वेत जार्ज फ्लायड का परिवार जो बाइडन और उपराष्ट्रपति का मामा है रिस।

■ 27 मई

- प्रो. शिवा उमापति ने 1 मिनट में खून से कोरोना की जांच करने वाली किट यूमार्स को तैयार किया इसका ट्रायल सफल हुआ।

- यास तूफान के कारण झारखंड में बुंडू कांची नदी पर बना पुल उद्धघाटन से पूर्व टूटा।

- अरूण वेंकट रमण को अमेरिका में वाणिज्य विभाग का डी.जी. बनाया।

■ 28 मई

- अमिगढ़ : जहरीली शराब पीने से 22 लोगों मौत हुई 10 लोगों की हालात गम्भीर हुई।

- राष्ट्रपति व शर अल असद चौथी बार सीरिया के राष्ट्रपति चुने गये।

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि अनाथ बच्चों की बुनियादी जरूरतें पूरी की जायें कोई भूखा न रहें।

■ 29 मई

- राष्ट्रीय जांच एजेंसी के प्रमुख कुलदीप सिंह को अतिरिक्त जिम्मेदारी सम्भालने की घोषणा हुई।

- दुर्ग (छ.ग.) जिले के धमधा नगर पंचायत के दानी तालाब में 120 किग्रा. का कछुआ मिला।

- कराचीः पाकिस्मान 2018 नवम्बर से हुये चीनी वाणिज्य दूतावास हमले में भारत का हाथ सिद्ध नहीं कर सका।

- चीन के ग्वांग झोऊँ में बीते 1 हफ्ते में कोरोना के 20 मामले मिले लॉकडाउन लगा।

■ 30 मई

- ब्रिटिश प्रधानमंत्री बेरिस जॉन ने 23 वर्ष छोटी कैरी साइमंडस शादी रचाई। यह उनकी तीसरी शादी है।

- सीमा सड़क संगठन ने कैलाश यात्रा के मार्ग को फिर से बहाल किया।

- कोलकाता : राजा राम मोहन राय संग्रहालय से प्राचीन वस्तुओं की चोरी हुई 1 चोर गिरफ्तार हुआ प्राचीन वस्तुएँ वरामद हुई।

■ 31 मई

- म.प्र. के पूर्व मंत्री भाजपा के नेता लक्ष्मीकांत शर्मा का कोरोना से निधन हुआ वे 60 वर्ष के थे।

- पंश्चिम बंगाल के मुख्य सचिव अलापन वंद्योपाध्याय रिटारय हुये और वे मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के विशेष सलाहकार बने।

- रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने स्वदेशी रक्षा उद्योग का बढावा देने के लिये 108 साजो सामान के आयात पर रोक लगाई।

दिशा बोध

ईष्या-त्याग

1. ईर्ष्या के विचारों को अपने मन में न आने दो, क्योंकि ईर्ष्या से रहित होना धर्माचरण का एक अंग है।
2. सब प्रकार की ईर्ष्या से रहित स्वभाव के समान दूसरा और कोई बड़ा वरदान नहीं है।
3. जो मनुष्य धन या धर्म की परवाह नहीं करता, वह अपने पड़ौसी की समृद्धि पर डाह करता है।
4. समझदार लोग ईर्ष्या बुद्धि से दूसरों को हानि नहीं पहुँचाते, क्योंकि उसका जो खोटा परिणाम होता है, उसे वे जानते हैं।
5. ईर्ष्यालु के लिए ईर्ष्या ही बुरी बला है। उसके बैरी उसे चाहे क्षमा भी कर दें , तोभी वह उसका सर्वनाश ही करेगी।
6. जो मनुष्य दूसरों को दान देते हुए नहीं देख सकता, उसका कुटुम्ब रोटी और कपड़ों तक के लिए मारा-मारा फिरेगा और नष्ट हो जायेगा।
7. ईर्ष्या करने वाले के पास लक्ष्मी नहीं रह सकती, वह उसको अपनी बड़ी बहन दरिद्रता की देख रेख में छोड़कर चली जाएगी।
8. दुष्टा ईर्ष्या दरिद्रतारूपी दानवी को बुलाती है और मनुष्य को नरक के द्वार तक ले जाती है।
9. ईर्ष्या करने वालों की समृद्धि और उदारचित्त पुरुषों की कंगाली, ये दोनों ही एक समान आश्चर्य जनक है।
10. न तो ईर्ष्या से कभी कोई फूला-फला है और न उदार हृदय कभी वैभव से हीन ही रहा है।

इसे भी जानिये

द्वितीय विश्वयुद्ध के तथ्य

द्वितीय विश्व युद्ध 1939 से 1945 तक चलने वाला विश्व स्तरीय युद्ध था लगभग 70 देशों की थल-जल-वायु सेनायें इस युद्ध में सम्मलित थी, इस युद्ध में विश्व दो भागों में बंटा हुआ था-मित्र राष्ट्र और धुरी राष्ट्र इस युद्ध के दौरान पूर्ण युद्ध का मनोभाव प्रचलन में आया क्योंकि इस युद्ध में लिप्त जारी महाशक्तियों ने अपनी आर्थिक, औद्योगिक और वैज्ञानिक क्षमता इस युद्ध में झोंक दी थी। इस युद्ध में विभिन्न राष्ट्रों के लगभग 10 करोड़ सैनिकों ने हिस्सा लिया और यह मानव इतिहास का सबसे ज्यादा घातक युद्ध साबित हुआ।

इस महायुद्ध में 5 से 7 करोड़ लोगों की जानें गई क्योंकि इसके महत्त्वपूर्ण घटनाक्रम में असैनिक नागरिकों का नरसंहार-जिसमें होलोकॉस्ट और परमाणु हथियारों का एकमात्र इस्तेमान शामिल है, द्वितीय विश्व युद्ध से जुड़े महत्वपूर्ण तथ्य इस प्रकार हैं।

(1) द्वितीय विश्व युद्ध 6 सालों तक लड़ा गया, (2) द्वितीय विश्वयुद्ध की शुरुआत 1 सितंबर 1939 में हुई,(3) इस युद्ध का अंत 2 सितंबर 1945 में हुआ, (4) द्वितीय विश्वयुद्ध में 61 देशों ने हिस्सा लिया, (5) युद्ध का तात्कालिक कारण जर्मनी का पोलैंड पर आक्रमण था, (6) द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जर्मन जनरल रोम्मेले का नाम डेजर्ट फॉक्स रखा गया, (7) म्युनिख पैक्ट सितंबर 1938 ई. में संपन्न हुआ, (8) जर्मनी ने वर्साय की संधि का उल्लंघन किया था, (9) जर्मनी ने वर्साय की संधि 1935 ई. में तोड़ी, (10) स्पेन में गृहयुद्ध 1936 ई. में शुरु हुआ, (11) संयुक्त रूप में इटली और जर्मनी का पहला शिकार स्पेन बना, (12) सोवियत संघ पर जर्मनी के आक्रमण करने की योजना को बारबोसा योजना कहा गया, (13) जर्मनी की ओर से द्वितीय विश्वयुद्ध में इटली ने 10 जून 1940 ई. को प्रवेश किया, (14) अमेरिका का द्वितीय विश्वयुद्ध में 8 सितंबर 1941 ई. में शामिल हुआ, (15) द्वितीय विश्वयुद्ध के समय अमेरिका का राष्ट्रपति फैंकलिन डी रुजवेल्टई था, (16) इस समय इंग्लैड का प्रधानमंत्री विंस्टरन चर्चिल था, (17) वर्साय संधि को आरोपित संधि के नाम से जाना जाता है, (18) द्वितीय विश्वयुद्ध में जर्मनी की पराजय का श्रेय रूस को जाता है, (19) अमेरिका ने जापान पर एटम बम का इस्तेमाल 6 अगस्त 1945 ई. में किया, (20) जापान के हिरोशिमा और नागासाकी शहरों पर एटम बम गिराया गया, (21) द्वितीय विश्य युद्ध में मित्रराष्ट्रों के द्वारा पराजित होने वाला अंतिम देश जापान था, (22) अंतराष्ट्रीय क्षेत्र में द्वितीय विश्व युद्ध का सबसे बड़ा योगदान संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना है।

श्रुतपंचमी महापर्व

(जैन परम्परा में श्रुत लेखन, पूजन, संरक्षण की परम्परा)

❊ आशीष कुमार जैन, वाराणसी ❊

श्रुतपंचमी महापर्व जैन परम्परा का महान पर्व है। इस दिन आचार्य भूतबलि ने षट्खण्डागम नामक सिद्धात ग्रंथ को पुस्तकारूढ़ करके चतुर्विध संघ के साथ उसकी पूजा की, जिससे श्रुतपंचमी तिथि दिगम्बर जैनियों में प्रख्यात हो गयी। उस तिथि को वे शास्त्रों की पूजा करते हैं। उसकी देखभाल करते हैं, धूल तथा जीव-जन्तु से उनकी सफाई करते हैं। श्वेताम्बर परम्परा में कार्तिक सुदी पंचमी को ज्ञानपंचमी माना जाता है। उस दिन वे धर्मग्रंथों की पूजा तथा सफाई बगैरह करते हैं।

सम्यग्दर्शन की प्रापित का कोई उपाय है तो जिनवाणी, श्रुतशास्त्र है। श्रुत इसलिये कहा क्योंकि गुरु परम्परा से पढ़ते आये जब मंद बुद्धि होने लगी अतः भूल नहीं जावे इसलिये लिखितरूप से लिखा गया। इसलिये इसे श्रुत नाम दिया।

श्रुत लेखन की परम्परा: जैनाचार्यों द्वारा रचित वाङ्मय बहुत ही विशाल और व्यापक है। इसे आगम की भाषा में श्रुतज्ञान कहा गया है। भगवान महावीर की वाणी को हृदयगंमकर उनके प्रधान शिष्य गणधर ने बारह अंगों में उस वाणी रूप समस्त वाङ्मय को निबद्ध किया। अतः वाङ्मय के अर्थकर्त्ता तो स्वयं महावीर है, पर ग्रंथकर्ता गौतम गणधर है। षट्खण्डागम की धवलाटीका में बताया है कि श्रुतज्ञान के कर्त्ता दो प्रकार हैं -1 अर्थकर्त्ता और 2. ग्रंथकर्त्ता। भावश्रुत और अर्थपदों के कर्त्ता तीर्थंकर हैं। तीर्थंकर के निमित्त से गौतम इन्द्रभूति गणधर श्रुतपर्याय से परिणत हुये। अतएव वे द्रव्यश्रुत के कर्त्ता हैं। आशय यह है कि इस युग में आदि ग्रंथकर्त्ता गौतम गणधर हैं। और इन्हीं से ग्रंथ या वाङ्मय लिखने का कार्य प्रारंभ हुआ हैं।

दिगम्बर पट्टावलियों और प्रशस्तियों से अवगत होता है कि श्रुत को सुनकर कंठस्थ कर लेने की परम्परा तीर्थंकर महावीर के निर्वाणलाभ के पश्चात् कई शतक तक चलती रही। द्रव्य, गुण, पर्याय, तत्त्वज्ञान, कर्मसिद्धांत एवं आचार सम्बन्धी मौलिक मान्यताओं को परम्परा से प्राप्तकर स्मरण बनाये रखने की प्रथा धारावाहिक रूप में चलती रहीं। इस धारावाहिक श्रुती की परम्परा इस प्रकार है।

श्रुत संरक्षण में आचार्यों की परम्परा: नन्दीसंघ-बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छ की पट्टावलि में बताया है कि गौतम, सुधर्म और जम्बूस्वामी ने बासठ वर्षों तक धर्म प्रचार का कार्य किया। महावीर स्वामी के पश्चात् बारह वर्षों तक गौतम स्वामी ने केवली पद प्राप्त कर धर्मप्रचार किया। इनके पश्चात् बारह वर्षों तक सुधर्माचार्य केवली रहे। अनन्तर अड़तीस वर्षों तक जम्बूस्वामी केवली बने रहे। इस प्रकार बासठ वर्षों तक उक्त तीनों केवलियों की ज्ञान-ज्योति प्रकाशित होती रही। तत्पश्चात् पांच श्रुतकेवली हुये। चौदह वर्षों तक विष्णु ने, सोलह वर्षों तक

नन्दिमित्र ने, बाईस वर्षों तक अपराजित ने, उन्नीस वर्षों तक गोवर्द्धन ने और उनतीस वर्षों तक भद्रबाहु ने ज्ञानदीप को प्रज्वलित रखा। तत्पश्चात् दश वर्षों तक दशपूर्वधारी विशाखाचार्य ने, उन्नीस वर्षों तक प्रोष्ठिलाचार्य ने, सत्रह वर्षों तक क्षत्रियाचार्य ने, इक्कीस वर्षों तक जयसेनाचार्य ने अट्ठारह वर्षों तक नागसेनाचार्य ने, सत्रह वर्षों तक सिद्धार्थाचाय्र ने अट्ठारह वर्षों तक धृतिसेनाचार्य ने तेरह वर्षों तक विजयाचार्य ने, बीस वर्षों तक बुद्धिलिंगाचार्य ने, चौदह वर्षों तक देवाचार्य ने एवं चौदह वर्षों तक धर्मसेनाचार्य ने श्रुत का प्रवचन किया। इस प्रकार एक सौ तिरासी वर्षों तक दशपूर्वधारी श्रुत का प्रचार करते रहे। तदनन्तर अट्ठारह वर्षों तक एकादशांगधारी नक्षत्राचार्य ने, बीस वर्षों तक जयपालाचार्य ने, उनतालीस वर्षों तक पाण्डवाचार्य ने, दर्श वर्षो तक ध्रुवसेनाचार्य ने एवं वत्तीस वर्षो तक कंसाचार्य ने श्रुतज्ञान की ज्योति को प्रज्वलित किया। इस प्रकार एकादशांगधारी उक्त पांच आचार्यो ने श्रुतज्ञान का प्रवचन किया। अनन्तर दशांग के ज्ञाता शुभचन्द्रचार्य ने छः वर्षो तक, यशोभद्राचार्य ने अट्ठारह वर्षो तक भद्रबाहु ने तेईस वर्षो तक और लोहाचार्य ने पचास वर्षो तक अंगज्ञान का प्रवचन किया। अनन्तर अट्ठाईस वर्षो तक एकांग के धारी अहिवल्याचार्य ने, इक्कीस वर्षो तक माधनन्द्याचार्य ने, उन्नीस वर्षो तक धरसेनाचार्य ने श्रुतज्ञान को जीवित रखा।

दिगम्बर श्रुतधाराचार्यो की परम्परा में गुणधर और धरसेन को श्रुत-प्रतिष्ठापक के रूप में स्वीकार किया जाता है। गुणधराचार्य (वि.पू. प्रथम शताब्दी) को पंचम पूर्वगत पेज्जदोसपाहुड तथा महाकम्म-पयडिपाहुड का ज्ञान प्राप्त था। उन्होंने कसायपाहुड (पेज्जदोसपाहुड) की रचना करके दिगम्बर-परम्परा में लिखित श्रुतग्रंथ के प्रथम श्रुतकार के रूप में मान्यता प्राप्त की। पहले आगम ग्रंथ अलिखित थे और श्रुत-परम्परा से याद किये जाते थे। इसीलिये आगम ग्रंथों को आज भी श्रुत के नाम से जाना जाता है। आचार्य धरसेन (ई.सन् 73) ने यद्यपि किसी ग्रंथ की रचना नहीं की थी परन्तु उन्हें पूर्वगत कम्मपयडिपाहुड का ज्ञान प्राप्त था। इन्होंने आचार्य पुष्पदन्त और भूतबलि को छक्खण्डागम (षट्खण्डागम) का उपदेश दिया और उन दोनों आचार्यों ने गुरु की आज्ञा से इस ग्रंथ की रचना की। पश्चात् आचार्य वीरसेन (ई. की 8वीं 9वीं शताब्दी) ने षट्खण्डागम पर धवला टीका तथा कसायपाहुड पर जयधवला टीका लिखी। ये दोनों टीकायें बहुत विशालकाय हैं तथा मूलागम के रूप में मान्य हैं।

षट्खण्डागम ग्रंथ लेखन की कथा: धवला में बताया गया है कि छक्खंडागम विषय के ज्ञाता आचार्य धरसेन थे। सौराष्ट्र देश के गिरनार नाम के नगर की चन्द्रगुफा में रहने वाले अष्टांग-महानिमित्त के पारगामी, प्रवचनवत्सल और अंगश्रुत के विच्छेद की आशंका से भीत धरसेनाचार्य ने किसी धर्मोत्सव आदि के निमित्त से महिमानाम की नगरी में सम्मिलित हुये दक्षिणापथ के आचार्यों के पास एक पत्र लिखा। इस पत्र में उन्होंने यह इच्छा व्यक्ति की कि योग्य शिष्य उनके पास आकर षट्खण्डागम का अध्ययन करें। दक्षिण देश के आचार्यों ने शास्त्र के अर्थग्रहण और धारण में समर्थ देश, कुल, शील, और जाति से उत्तम, समस्त कलाओं में पारंगत दो आचार्यों को वेणा नदी के तट से आन्ध्रदेश से भेजा। इन दोनों ने वहाँ पहुँचकर आचार्य धरसेन

की तीन प्रदक्षिणाएँ दी और उनके चरणों में बैठकर सविनय नमस्कार किया। आचार्य धरसेन ने उन दोनों योग्य शिष्यों की परीक्षा ली और परीक्षा में उत्तीर्ण होने के पश्चात् उन्हें सिद्धांत की शिक्षा दी। ये दोनों मुनि पुष्पदन्त और भूतबलि नाम के थे। यह शिक्षा आषाढ़ शुक्ला एकादशी को ज्यों ही पूर्ण हुई, वर्षा काल के समीप आ जाने से उसी दिन अपने पास से धरसेन ने उन्हें विदा कर दिया। दोनों शिष्यों ने गुरु की आज्ञा अनुल्लंघनीय मानकर उसका पालन किया और वहाँ से चलकर अंकलेश्वर में चातुर्मास किया।

डॉ. हीरालाल जैन ने षट्खण्डागम की शास्त्रीय भूमिका नामक ग्रंथ में लिखा है कि षट्खंण्डागम के विषय के ज्ञाता धरसेनाचार्य थे, जो सोरठ देश के गिरनगर की चन्द्रगुफा में ध्यान करते थे। नंदिसंघ की प्राकृतपट्टावली के अनुसार वे आचारांग के पूर्ण ज्ञाता थो किन्तु धवला के शब्दों में वे अंगों और पूर्वो के एक देश ज्ञाता थे। उन्हें इस बात की चिंता हुई कि उनके पश्चात् श्रुतज्ञान का लोप हो जायेगा, अतः उनहोंने महिमा नगरी की मुनि सम्मेलन को पत्र लिखा जिसके फलस्वरूप वहाँ से दो मुनि उनके पास पहुंचे। आचार्य ने उनकी बुद्धि की परीक्षा करके उन्हें सिद्धांत पढ़ाया। ये दोनों मुनि पुष्पदंत ओर भूतबलि थे।

इन्द्रियनन्दिकृत श्रुतावतार ओर विबुध श्रीधरकृत श्रुतावतार में लिखा है कि धरसेनाचार्य को ज्ञात हुआ कि उनकी मृत्यु निकट है। अतएव इन्हें उस कारण क्लेश न हो, इसलिये उन्होंने उन मुनियों को तत्काल अपने पास से विदा कर दिया।

आचार्य धरसेन से महाकम्मपयडिपाहुड का ज्ञान प्राप्त करके पुष्पदन्त और भूतबली ने जो ग्रंथ रचना की, वह षट्खण्डागम नाम से प्रसिद्ध है। यह रचना किसी एक पूर्व या उसके किसी एक पाहुड पर अवलंबित न होकर उसके विभिन्न अनुयोग द्वारों के आधार पर रची गई है, इसलिये वह खंड आगम कहलाता है।

इन्द्रनन्दि के श्रुतावतार से ज्ञात होता है कि भूतबलि ने पुष्पदन्त विरचित सूत्रों को मिलाकर पांच खण्डों के छः हजार सूत्र रचे और तत्पश्चात् महाबन्ध नामक छठे खण्ड की तीस हजार सूत्र ग्रंथरूप रचना की।

श्रुतपंचमी पर्व: इन्द्रनन्दि ने अपने श्रुतावतार में यह लिखा है कि भूतबलि आचार्य ने षट्खण्डागम की रचना कर उसे ग्रंथ रूप में निबद्ध किया और ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी को उसकी पूजा और इसी कारण यह पंचमी श्रुतपंचमी के नाम से विख्यात हुई।

तत्पश्चात् भूतबलि ने पुस्तक रूप में उस षट्खण्डागम सूत्र के साथ जिनपालित को पुष्पदन्त गुरु के पास भेजा। उस समय पुष्पदन्त गुरु ने भी जिनपालित के हाथ में स्थित षटखण्डागम ग्रंथ को देखकर सहर्ष विचार किया कि जिस कार्य को मैंने सोचा था वह पूरा हो गया है। इस प्रकार श्रुतानुराग के वश पुष्पदन्ताचार्य ने भी विधिपूर्वक चतुर्विध संघ के साथ श्रुतपंचमी के दिन गन्धाक्षतादि के द्वारा पूर्ववत् पुसतक की महती पूजा की।

इन्द्रनन्दि-श्रुतावतार के अनुसार प्रस्तुत ग्रंथ की रचना के समाप्त होने पर उसे असद्भाव-

स्थापना से पुस्तकों में आरोपित करके ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी के दिन चतुर्विध संघ के साथ उन पुस्तक रूप उपकरणों के आश्रय से विधिपूर्वक पूजा की गयी। तब से यह तिथि श्रुतपंचमी के रूप में प्रसिद्ध हुई जो आज भी प्रचार में आ रही है। उस दिन प्रबुद्ध जैन श्रावक-श्राविका उक्त षटखण्डागमादि ग्रंथों को स्थापित कर भक्तिभाव से सरस्वती-पूजा आदि करते हैं।

षट्खण्डागम ग्रंथ का प्रकाशनः- डॉ. हीरालाल जैन का अतिमहत्वपूर्ण कार्य शौरसेनी प्राकृत और कन्नड़ी लिपी में लगभग एक हजार वर्ष तक सूर्य के प्रकाश से वंचित षटखण्डागम की ताड़पत्रीय प्रति का उद्धार करना और नागरी लिपि में प्रामाणिक पाठ और टीका सहित षोड्शिक भाषानुवाद प्रकाशित करना है। स्मरणीय है कि यह जैनागम पुष्पदन्त और भूतबलि आचार्यों के द्वारा ईसा की दूसरी शताब्दी में सूत्रबद्ध किया गया। सिद्धांत चक्रवर्ती नेमिचन्द्रचार्य ने ग्यारहवीं सदी में षट्खण्डागम और धवला टीका के आधार पर गोम्मटसार जीवकांड और गोम्मटसार कर्मकांड खण्डों में सार निचोड़कर 1695 गाथाओं में दो खण्डों की रचना की थी। तब से मूल षट्खण्डागम के अध्ययन अध्यापन की प्रणाली प्रायः समाप्त हो गयी। यद्यपि जैनधर्म का यह आद्यलिपि बद्ध ग्रंथ है। इसके संपादन और प्रकाशन की बात तो दूर, दर्शन भी सहज नहीं हो पाते थे। ऐसे दुर्लभ ग्रंथ के संपादन-प्रकाशन की चर्चा जब सर्वत्र फैली तो लोगों ने सिद्धांत ग्रंथ होने के कारण घोर विरोध किया। तत्कालीन मूडबिद्री के भट्टारक द्वारा भी इस कार्य का विरोध किया गया। परन्तु विदिशा निवासी सेठ लक्ष्मीचन्द्र सितावराय द्वारा स्थापित साहित्योद्धार नामक ट्रस्ट की सहायता एवं पं. हीरालाल जैन सिद्धांतशास्त्री साढूमल तथा पं. फूलचन्द्र जी सिद्धांतशास्त्री के सहयोग से डॉ. हीरालाल जी जैन ने षटखण्डागम का संपादन प्रारंभ किया।

सन् 1938 में धवला की प्रथम पुस्तक का प्रकाशन हुआ। प्रथम पुस्तक की एक प्रति मूड़बिद्री के भट्टारक को भेजी। आद्योपानत पढ़कर उनका हृदय पिघल गया। तब उन्होने ताड़पत्रीय प्रतियों से पाठ मिलान की सुविधा प्रदान कर दी। इस प्रकार 1958 तक 20 वर्षीय अध्यवसाय पूर्वक षट्खण्डागम की 16 पुस्तकों का संपादन और प्रकाशन करवाकर श्रवणविद्या में अकल्पित कार्य किया है। प्रथम पुस्तक की प्रस्तावना अनेक दृष्टियों से अत्यंत महत्वपूर्ण है। धवला टीका समन्वित इन षट्खण्डागमों के प्रकाशन से जैन सिद्धांत का मार्ग सुगम हो गया है।

व्रत विधान संग्रह में लिखा है कि श्रुतपंचमी व्रत पांच वर्ष तक प्रतिवर्ष ज्येष्ठ शुक्ला 5 को श्रुतावतार के उपलक्ष्य में उपवास करें। ओं ह्रीं द्वादशांगश्रुतज्ञानाय नमः इस मंत्र का त्रिकाल जाप करें।

साहित्य रचना के क्षेत्र में आचार्य पुष्पदन्त और भूतबलि का अनुदान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। षट्खण्डागम की रचना इन दोनों आचार्यों के सम्मिलित प्रयत्न का परिणाम है। बीसवीं शताब्दी में भी श्रमण परम्परा में आचार्य, मुनि इस ग्रंथ की वाचना करते हैं और श्रुतपंचमी को इस ग्रंथ की पूजन होती है। आचार्य विद्यानन्द जी ने श्रुतपंचमी को प्राकृत दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की थी। आचार्य सुनील सागर जी महाराज के संघ में प्रतिवर्ष श्रुतपंचमी के दिन षट्खण्डागम गंथ की पूजन और वाचन होता है।

आओ सीखे : जैन न्याय

आगमप्रमाण के अंतर्गत वेद-अपौरुषेयवाद का मूल्यांकन

मीमांसक दर्शन का कथन है कि लौकिक शब्द भले ही पौरुषेय हो अर्थात् पुरुष के द्वारा बनाए गये हो। किन्तु वैदिक शब्द पौरूषेय नहीं हैं। क्योंकि वेद अपौरूषेय अर्थात किसी पुरुष के द्वारा नहीं बनाये गये हैं वे अपनी अवधारणा को पुष्ट करने के लिये कुछ तर्क देते हैं वे निम्न प्रकार से विचारणीय हैं -

1. वेद अपौरूषेय हैं क्योंकि स्मरण योग्य होते हुये भी उसके कर्त्ता का स्मरण नहीं होता है जैसे **''आकाश''** यह हेतु असिद्ध नहीं है क्योंकि वेद के कर्त्ता का कभी किसी को स्मरण नहीं होता यदि वेद का कोई कर्त्ता होता तो वेदार्थ का अनुष्ठान करते समय उसके कर्त्ता का स्मरण अवश्य करते क्योंकि जो लोग जिस अर्थ का अनुष्ठान करते हैं वे अवश्य ही उस शास्त्र के कर्त्ता का स्मरण करते हैं। अतः निश्चित है कि वेद का कोई कर्त्ता नहीं है।

2. वेद कोई रचना नहीं हैं क्योंकि कृत्रिम रचनाओं से वेद की रचना विलक्षण है।

3. वेद का अध्ययन गुरु से अध्ययन पूर्वक ही आया है क्योंकि उसे वेदाध्ययन कहते हैं। तथा अतीत और अनागत काल भी वेद के कर्ता से रहित है इन अनुमानों से भी वेद अपौरूषेय सिद्ध होता है।

4. अपौरूषेय होने से वेद ही प्रमाण है क्योंकि पुरुष के दोषों के कारण ही वचन अप्रमाण होता है। आप्त पुरुष के गुणों के कारण शब्दों में प्रमाणपना नहीं आता है क्योंकि वे तो केवल शब्दों का उच्चारण करते हैं अतः शब्द स्वतः अप्रमाण है।

5. जिस शब्द की रचना पुरुषकृत होती है उसका प्रामाण्य और अप्रामाण्य पुरुष की प्रमाणता और अप्रमाणता पर निर्भर होता है। वेद तो नित्य रचना है अतः नित्य वेद स्वतः प्रमाण है।

मीमांसकों द्वारा वेद को अपौरूषेय सिद्ध करने के लिये जो तर्क दिये गये हैं उनका जोरदार खंडन करने के लिये जैन आचार्यों के गंभीर तर्क इस प्रकार है-

1. वेद का कर्त्ता स्मरण नहीं होता है इसलिए वेद अपौरूषेय है यह तर्क समीचीन नहीं है क्योंकि कर्त्ता का स्मरण नहीं होने का आशय यदि कर्त्ता के स्मरण का अभाव है तो हेतु व्याधिकरण सिद्ध होता है। अर्थात् साध्य भिन्न अधिकरण में रहता है और हेतु भिन्न अधिकरण में कारण कि कर्ता के स्मरण के अभाव कारण में रहता है और साध्य अपौरूषेयत्व वेद में रहता है तथा हेतु अज्ञात सिद्ध भी है क्योंकि उसका कोई ग्राहक प्रमाण नहीं हैं। कर्त्ता स्मरण का अभाव प्रत्यक्ष स्मरण का नहीं हो सकता क्योंकि प्रत्यक्ष तो प्रतिनियत रूप आदि को जान सकता है, और अभाव को नहीं जान सकता है यदि प्रत्यक्ष अभाव को जान लेगा तो मीमांसक के अभाव प्रमाण की प्रवृत्ति का निषेध हो जायेगा। अतः यह जानना आवश्यक होगा कि कर्त्ता के स्मरण के अभाव का आधार कौन है ? स्वात्मा या सारे प्रमाता। यदि स्वात्मा है तो क्या इतने से ही कर्त्ता के स्मरण का अभाव सिद्ध हो जायेगा तो जिन पदार्थों का आत्मा में स्मरण नहीं है उस सब का अभाव सिद्ध हो जायेगा और यदि सारे प्रमाता वेद के कर्त्ता का स्मरण नहीं करते हैं तो यह बात असर्वज्ञ व्यक्ति नहीं जान सकता और यदि जानता है तोउसकी सर्वज्ञता का प्रश्न आ जाता है।

2. सारे प्रमाताओं ने कर्त्ता का स्मरण नहीं किया यह बात कैसे जानी ? क्या सभी

प्रमाताओं से पूछकर जाना ? क्योंकि मीमांसक मत में अभाव को जानने के लिये सब देशों में जाना जरूरी है। और सभी लोगों से पूछना होगा कि हमें आपकों वेदों के कर्त्ता का स्मरण तो नहीं है। यह सब संभव नहीं हैं।

3. वेद जब स्वयं कर्त्ता का अस्तित्व बतलाता है तो उसमें अभाव प्रमाण की प्रवृत्ति कैसे हो सकती है ? **'स हि रुद्रं वेदकर्त्तारम्'** (वेद का कर्त्ता रुद्र है) **'योब्रह्माणं विदधाति पूर्व वेदाश्च प्रहिणोति'** जो पहले ब्रह्मा को रचता है फिर वेदों को रचता है) तथा **' प्रजापतिः सोम राजनमन्वसृजत, ततः त्रयोवेदाः अन्वसृज्यन्त'** (प्रजापति ने सोम राजा को रचा, फिर तीन वेद रचे) इत्यादि श्रुति वेद के कर्त्ता को बताती है। पौराणिक ब्रह्मा को वेद का कर्त्ता, योगदर्शन वाले महेश्वर को और जैन कालासुर की कृति बताते हैं। स्मृतिपुराण की तरह वेद की शाखायें भी ऋषियों के नाम से अंकित है। ये ऋषि इन वेदों के कर्त्ता थेअथवा दृष्टा अथवा उन वेदों को प्रकाश किया।

1) ऋषि के कर्त्ता होने पर वेद अपौरूषेय नहीं रहता है।

2) वेद उनके कण्व आदि ऋषियों ने नष्ट अथवा विस्मृत हुये शाखाओं को देखा यदि ऋषियों ने उनको प्रकाशित किया तो वेदों को परम्परा अवछिन्न कहाँ रही ? इस तरह से वेद के कर्त्ता स्मरण करते हैं और मीमांसक नहीं करते हैं अतः कर्त्ता के स्मरण मात्र होने से वेद अपौरूषेय सिद्ध नहीं होता है।

4. महाभारत आदि की तरह वेद भी पौरूषेय हैं क्योंकि वेद वाक्यात्मक रचना रूप है।

5. वेदों की रचना अन्य रचनाओं से विलक्षण है इसका आधार क्या है ?

6. उच्चारण का काठिन्य है अथवा श्रवण काठिन्य है अथवा छन्द की विचित्रता है अथवा अतीन्द्रिय विषयों का कथन है अथवा महाप्रभावशाली कथन ये सभी बातें पुरुषों के लिये कठिन नहीं है। अनुसंधान करके सभी कार्य किये जा सकते हैं।

7. वेद की विशिष्ट रचना देखकर असमर्थ कर्त्ता का ही निराकरण होता है ना कि कर्त्ता मात्र का। कोई विशिष्ट रचना देखकर कोई यह नहीं कहता कि ये अकृत्रिम है अपितु यह कहते हैं कि यह असाधारण शिल्पी का काम है। अतः वेद अपौरूषेय है। ये सभी अनुमान से सिद्ध करने के लिये ठीक नहीं है।

8. वेद का अध्ययन गुरू से अध्ययन पूर्वक होता है क्योंकि उसे वेद का अध्ययन कहते हैं यह हेतु दोष पूर्ण है। क्या वेद का अध्ययन स्वयं नहीं किया जा सकता ? इस हेतु से वेद अपौरूषेय सिद्ध नहीं होता है।

9. व्याख्यात वेद ही अपने अर्थ का ज्ञान करता है यह स्वयं सिद्ध होता है। वेद की व्याख्याता अतीन्द्रिय दर्शी है अथवा नहीं। यदि अतीन्द्रियदर्शी है तो सर्व का निषेध नहीं किया जा सकता है और यदि अतीन्द्रिय दर्शी नहीं है तो उसके अपथार्थ कथन में आशंका बनी रहती है।

10. ब्रह्मा को पदार्थ के ज्ञान वैशिष्ट कैसे सिद्ध होता है यदि धर्म विशेष के कारण होता है तो चक्रक नामक दोष आ जायेगा अतः अतीन्द्रिय दर्शी पुरुष के ना मानने पर वेदार्थ का ज्ञान नहीं होता है।

11. यदि वेदार्थ को जानने के लिये अतीन्द्रिय की आवश्यकता नहीं है तो लौकिक और वैदिक शब्द समान होने से क्या होगी ? लौकिक और वैदिक दोनों में कोई अंतर नहीं रहेगा। अतः लौकिक शब्द पौरूषेय है और वैदिक शब्द अपौरूषेय है यह मत किसी भी तरह से सिद्ध नहीं होता है।

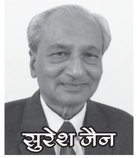

क्रमांक-5 वरिष्ठ नागरिक

अच्छा जी

अच्छा जी- यह शब्द सुनने में सबको बहुत अच्छा लगता है। परन्तु यह क्या ? बीसवी शताब्दी समाप्त होते-होते संभवतः इस शब्द ने भी अपना अस्तित्व समाप्त कर दिया है।

आज किसी बुजुर्ग की बात को सुन कर अथवा,

जब भी कोई बुजुर्ग अपनी कोई राय देता है, उसे सुनने के बाद उस राय को अनसुना करना या उल्ट कर बुजुर्ग को जवाब देना एक फैशन बन गया है। यदि किसी ने बुजुर्ग होने के नाते माता-पिता अथवा दादा-दादी से कोई सलाह पूछ ही ली यदि वह संतान को suit नहीं करती तो वे फौरन कह देगा कि आप तो 19वीं सदी की बाते करते हैं- क्या आज कल ऐसा होता है। फिर बुजुर्ग अपनी संतान से कहता हे कि जैसा आज कल होता है, वैसा कर लो, हमें पूछने की क्या जरूरत थी तो जवाब मिलता है आप को बुजुर्ग होने के नाते पूछना- बताना जरूरी समझा था, हमें क्या पता कि आप ऐसी सलाह देगें। बुजुर्ग के लिये एक ओर कुआं एक ओर खाई। मुंह खोले तो मुश्किल न खोले तो मुश्किल।

आज युवाओं में इतना सब्र नहीं कि वे बात सुनकर अच्छा जी कह दें। हजारों में कोई एक आद्य बुजुर्ग ही होगा, जो यह बाद में कहे कि उस समय तुमन ने अच्छा जी कहा था, फिर भी अपनी मर्जी कर ली। आपको जब कमी कोई बुजुर्ग कोई राय दे या आप कोई सलाह पूछे, उस के बाद अच्छा जी केवल यह दो शब्द इस्तेमाल कर देखें मर्जी भले अपनी करे, आप को कोई नहीं रोकेगा। आप के बुजुर्गों के म मन को यह राहत तो अवश्य मिलेगी कि कम से कम हमारे बच्चे ने शांत भाव से सुन तो लिया है। बुजुर्गों की बात को सुनकर उनकी अवहेलना कर, उनको उसी समय खरी-खोटी सुनाने की आदत को बदल दीजिये, आप के मन को तथा बुजुर्ग के मन को बड़ा सुकून मिलेगा।

जब भी युवा अपने माता-पिता अथवा दादा-दादी से कोई सलाह मांगने जाता है तो बुजुर्ग अपनी जिंदगी के सारे अनुभव का निचोड़ उसे दे डालने में कोई कोताही नहीं बरतते। फिर आप की सलाह के अनुरूप चलते हैं या नहीं यह वे बिल्कुल नहीं देखते। यदि भुला पुनः भूल करते हैं तो भी उन्हें बुजुर्ग उलाहना भी नहीं देते और फिर सलाह मांगने जाते हैं तो फिर वह अपने जीवन के आधार पर अपनी अच्छी से अच्छी सलाह देते हैं।

यदि रखिये आप के बुजुर्ग माता-पिता, दादा-दादी स्वपन में भी आपका अथवा परिवार के किसी भी सदस्य के बारे में या आप के व्यापार के बारे में कभी भी कोई बुरा न सोचेगें न करेगें। आपके के मुंह से कैसे भी अपशब्द निकल जाये बड़े बुजुर्ग कुछ समय के लिये सहम जरूर जायेंगे परन्तु कभी बुरा न सोचेगें न बोलेगें। एक विश्वास रखिये इन्हीं बुजुर्गों ने आपको गोद में खिलाया

था, आपको प्यार किया था, आपसे तोतली जुबान से बाते की थी, आपके हर सुख-दुःख में चट्टान की तरह मजबूत होकर आपके साथ खड़े हुये थे।

परिवार के सभी सदस्य इस बात का ध्यान रखे कि उनकी बाते बुजुर्गों को आहत न करें। बुजुर्गों की कही हुई बाते आपको पसंद भी आये और आप अच्छा जी कहना अपनी शान के विरूद्ध समझे फिर भी मर्यादित शब्दों में अपनी असहमति जाहिर करें न कि कठोर, अभद्र अपमानित भाषा व ऊंचे स्वर में जवाब दें। याद रखिये जैसा बुजुर्गों से बातचीत करने का आज आपका ढंग हैं, वह आपको अपने बच्चों को सिखलाने की जरूरत नहीं, वह वैसी बातचीत करने का ढंग अपने आप सीख रहे हैं और वो आपके साथ ऐसा ही सुलूक करेंगे। तब आपको बड़ी तकलीफ होगी। फिर शायद आप सोचे कि हमने भी अपने बुजुर्गों के साथ ऐसा ही किया था।

जिस प्रकार हम भविष्य के लिये पूंजी जमा करते हैं, उसी प्रकार जीवन में बुजुर्गों द्वारा प्राप्त आशीर्वाद शुभकामनाओं भी जमाकर के जीवन रूपी वाटिका में सुन्दर पुष्प पल्लवित व पुष्पित करे। घर के बुजुर्गों दादा-दादी, एवं माता-पिता की छाया और आश्रय में प्राप्त शालीनता, नम्रता, उदारता आदि अमूल्य गुण रूपी रत्न संजोकर अपने खजाने में रखे। बुजुर्गों का मार्ग दर्शन और आशीर्वाद को युवा वर्ग समझें और पारिवारिक मर्यादाओं और मानवता धर्म का पालन करें।

कविता

स्वप्न पूर्ण हो जाये

✻✻ संस्कार फीचर्स ✻✻

आजादी के साल 75 साल बीत गये हैं भैया
अमृत उत्सव खूब मनाओ नाचो ताथा थैया
अमर शहीदों की कुर्बानी ने दी है आजादी
दांडी यात्रा पर निकले थे पहन के देशी खादी
समर शेष है आजादी का देशी भाषा लाना
राष्ट्र धर्म अरू मातृभाषा जीवन साथ निभाना
वंदे मातरम् की गूंजों से गगन धरा भर जाये
विश्वगुरु भारत का झंडा दुनिया में लहराये
जाति पंथ अरू भाषावाद का जहर नहीं धुल पाये
लोकतंत्र का अमृत प्याला जन जन को मिल जाये
जन गण मन में देश प्रेम का अमृत घुल मिल जाये
फिर अंखड भारत का नक्शा स्वप्न पूर्ण हो जाये

कहानी

अमन की चैन

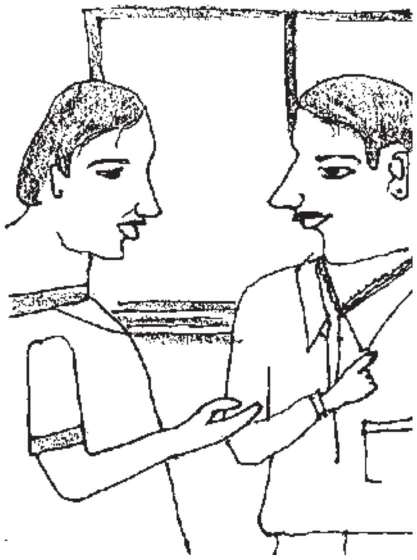

रात के 8 बज रहे थे नगर लाइटों से जग मगा रहा था बाजार की दुकानें धीरे-धीरे बन्द होना प्रारंभ हो गई थी युवक और दुकानदार अपनी दुकान बढ़ाकर आपस में व्यापारिक चर्चा कर रहे थे तो कई युवा दुकान के बाहर बैठकर क्रिकेट खेलने की योजना बना रहे थे गर्मी का मौसम होने से प्रायः युवक रोड़ पर ही स्टेडियम बना लेते थे और उनकी क्रिकेट जम जाती थी दिन भर दुकानदारी में माथापच्ची करने के बाद रात में क्रिकेट ही उनका मनोरंजन का सबसे अच्दा माध्यम था कुछ युवक क्रिकेट खेलते तो कुछ अपने मोबाइल पर ही क्रिकेट खेला करते थे।

अमन एक शहर का मिलनसार लड़का था उसकी सारे लोग दोस्ती करना पंसद करते थे उसके पास बैठने का लोगों को मजा ही अलग आता था अमन अपने मित्रों से मनोविनोद किया करता था अमन की बातों में कुछ ऐसा ही लहजा रहता था कि रोने वाला व्यकित भी हंस पड़ता था लेकिन आज अमन अपने मोबाईल पर ही किक्रेट खेल रहा था। मोबाईल पर मशगूल अमन को छेड़ते हुये रवि ने कहा क्या बात है तुम्हें आज क्या क्रिकेट की टीम के कैप्टन ने टीम से बाहर कर दिया अमन बोला नहीं रे वो हमें हमें क्या बाहर करेगा हम उसको बाहर कर सकते हैं टीम का कैप्टन शानू को बनाया किसने है अगर मैं जरा सा हाथ खींच लू तो शानू को टीम से बाहर होना पड़ेगा रवि ने कहा ये तुम बिल्कुल सच कह रहे हो क्योंकि शानू खडूश व्यवहार वाला आदमी है कोई भी खडूश आदमी किसी भी संगठन को नहीं चला सकता है अमन भाई नेता वहीं बन सकता है जो स्वयं पहले काम करे और दूसरों को आदेश न दे जो सिफ डांटते रहते हैं वे कभी अच्छे नेता नहीं बन सकते हैं शानु में सूझ-बूझ तो है परन्तु उसमें बेलिहाज पना है वह अपने से बड़ों का लिहाज करना नहीं जानता है जो अपने से बड़ो तक का लिहाज करना नहीं जानता है वह लोकप्रिय नहीं हो सकता है छोटो को प्यार और बड़ों को सम्मान देने वाला ही सफल नेता बन सकता है।

तो अमन भाई एक काम करें न अपन मोबाईल पर क्रिकेट खेलना छोड़ दें क्योंकि मोबाईल पर क्रिकेट खेलना और मैदानी क्रिकेट खेलने में बड़ा अन्तर है। मैदानी क्रिकेट खेलने में शारीरिक विकास होता है।

स्वास्थ्य अच्छा रहता है शरीर और दिमाग दोनों मैदानी किक्रेट में सक्रिय होते हैं लेकिन मोबाईल के किक्रेट में मात्र दिमाग सक्रिय रहता है मोबाईल की तेज रोशनी का प्रभाव आंखों पर बहुत गलत पड़ता होता तो यह भी है आंखों में बहुत ज्यादा थकान आ जाती है। अमन बोला रवि ये बात तो तुमने बहुत सच कही है। मैं भी कुछ दिनों से यही अहसास कर रहा हूँ लेकिन क्या करूँ मोबाइल पर क्रिकेट खेलने की ऐसी लत लग गई है कि जब भी मैं फुरसत में बैठता हूँ तो मैं मोबाईल खोल ही लेता हूँ और बस मोबाईल पर अंगुलियों चलाने लगता हूँ।

रवि ओर अमन जब अपनी बात कर ही रहे थे तो अमन ने देखा सामने प्रासु चला आ रहा था तो अमन ने बोला लो वो देखो वो आ गये महानुभाव अब वे अपनी-अपनी धकायेंगे और सबका दिमाग खायेंगे। खैर कोई बात नहीं अपन भी मजा लेंगे। प्रासु ने आते ही साथ सबसे पहले अमन के कंधे पर जोरदार हाथ पटका तो अमन ने कहा प्रासु हमने तुमसे कितनी बार कहा दूर से बात किया करो तुम्हें इतनी सी बात समझ नहीं आई। प्रासु ने कहा देखो भाई ये तो दोस्ती का हाथ हैं इसमें ही तो हमारा तुम्हारा प्रेम छुपा है नहीं तो दोस्ती सिर्फ बोझ रह जायेगी। रवि ने कहा अच्छा ये बताओ प्रासु तुम आज कितनों का दिमाग खाकर आये हो ? प्रासु ने कहा देखो भाई सुनो मैं हूँ शाकाहारी मैं किसी का दिमाग कैसे खा सकता हूँ? रवि ने कहा अमन देखो ये कितना सीधा बन रहा है अमन ने कहा ये दिमाग खाता नहीं ये तो दिमाग चुभता है।

तभी प्रासु की नजर अमन के गले में पड़ी चैन पर पड़ गयी चैन सचमुच में गुथी हुई 100 ग्राम की थी तब प्रासु ने कहा क्या बात है आज कोई देखने वाले आ रहे हैं क्या जो आज तुमने इतनी मोटी और सुंदर सी चैन गले में पहनी है। अमन ने कहा क्या जब कोई शादी के लिये देखने आयेगा तभी चैन पहनूंगा हमारे घर में बेटा रोज पकवान बनते मेहमान आने पर नहीं। तब प्रासु ने कहा हाँ भैया तुम हनौता के लम्बरदार हो चालीस-पचास एकड़ जमीन तुम्हारी है और अपने पिता की एकलौती औलाद हो सौकिया नहीं होगे तो क्या होगे।

ऐसा नहीं रे हम से भी ज्यादा बड़े-बड़े आदमी है हम कमाते भी हैं और खर्च करना भी जानते हैं हमारा दिल भी बड़ा है और दिमाग भी बड़ा है आदमी पहले मेहनत से पैसे कमाता है फिर आदमी अक्ल से पैसा कमाता है फिर मालूम है प्रासु फिर आदमी पैसे से पैसा कमाता है और अब मैं पैसे से पैसे कमाने लगा हूँ तुम जैसा नहीं हूँ कि बस ब्याज खाने में लगे हो।

प्रासु ने कहा- देखो भाई घर बैठे अगर कोई पैसे देने आ जाये तो इससे अच्छी क्या बात हो सकती है जब अल्हा दे खाने को तो कौन जाये कमाने को हमारा भी अपना पुण्य है जो हमारे पिताजी ने हमें ब्याज ही ब्याज से कमा करके दिया है और तुम लोगों को हमेशा मेरा ब्याज का धंधा ही अखरता है। मालूम है तुम्हें कि ब्याज धंधा भी एक जोखिम भरा धंधा है अपना पैसा किसी दूसरे हाथ में देना और फिर उसे वापिस भी लेना कितनी बड़ी जोखिम का काम है धंधा करना सरल है खेती करना सरल है ब्याज का काम करना बहुत कठिन है।

रहने दे रे सब पता है मुझे, कितना कठिन है घर से बाहर निकलना फिर भी नोटों के बंडल आना ब्याज पर ब्याज लगाते रहना और किसी

भी कंजूस बनके रहना जितने भी लोग ब्याज खाते हैं वे कंजूस होते हैं। न तो खुद खाते हैं न दूसरों को खाने देते हैं हम हैं देखो दिलेर आदमी छाती पर हाथ ठोककर अमन ने कहा इतनी मोटी चैन पहते हैं ओर चैन से रहते हैं।

प्रासु ने कहा देख भाई अमन अभी तुम्हें हमारे घर की बात पता नहीं है हमारे घर में रोज मावा की मिठाई बनती है और चार प्रकार के फल हर थाली में होते हैं

अमन- रहने दे रे अगर तुम्हारे पास दम होती तो हम जैसी चैन पहनकर तुम भी घूमते।

प्रासु- अरे तुम चैन पहरकर घुम रहे हो ये चैन हम यही खड़े-खड़े खरीद सकते हैं तुमसे ही और तुम एक दिन मेरे पास ये चैन गिरवी रखने मेरे घर आओगे और मैं इस चैन को अपने गलें में पहनकर घूमूंगा।

अमन- प्रासु तुम ये तो सच कह रहे हो ये कभी भी हो सकता है खेती किसानी ऐसा काम है कब बी खाद के लिये पैसे की जरूरत पड़ जाये कहा नहीं जा सकता है।

प्रासु- अमन अच्छा ये बताओं तुमने ये चैन ली कितने में है।

अमन- सच बताऊँ तुम्हें ये चैन डेढ़ की ली है।

प्रासु- अरे बाप रे डेढ़ की ली है इतनी महंगी लगता है तुम्हारे पास पैसा मुफ्त का बहुत आ गया है।

अमन- देखो प्रासु पैसा मुफ्त का आये या मेहनत का अगर शौक नहीं कर पाये तो पैसा रखा-रखा क्या करेगा या तो नोटों में दीमक लग जायेगी या फिर बैंक की एफ.डी बन जायेगी।

प्रासु- चैन तो मुझे बाकई में पसन्द आ गई इस चैन को तो मैं गले में जरूर पहनूंगा।

अमन- अरे यार ऐसे छोटे दिल की क्या बात करते हे ये लो चैन और पहनो। प्रासु ने अमन के हाथ से चैन लेकर गले में पहन ली और रवि से पूछले लगा बताओ भाई रवि में कैसा लग रहा हूँ। तब रवि ने कहा प्रासु आज तुम सचमुच में ऐसे लग रहे हो तुम सही में सेठ के लड़के हो पर एक बात है प्रासु तुम कुछ मिनटों के सेठ बन पाये हो खैर अमन में एक बात तो है कि वह इतना दिलेर कि तुम्हें कुछ दिन के लिये ये चैन पहनने जरूर दे दें। रवि यार सही में इस चैन से मुझे जो चेन मिलेगी वह जिन्दगी भर की मेरी धरोहर रहेगी। प्रासु की इस बात पर रवि ने कहा, अमन अगर किसी को अपनी चैन से चैन मिले तो इससे बड़ा पुण्य क्या हो सकता है।

रवि तुम यार मुझे वेवकूफ मत बनाओ, चैन पहनने से आदमी को चैन मिल सकती है ये बात मैं तो नहीं मानता हूँ पर शौक है ये तो अपना अपना और मूर्खता भी है परसों की रात मेरी कैसे ये मैं जानता हूँ।

रवि ने बड़ी उत्सुकता साथ पूछा ऐसा क्या हो गया था जो तुम वैराग्रु जैसी बातें करने लगे हो अमन तेरा भाई भरोसा नहीं है कब तू रागी बन जाये कब तू वैरागी बन जाये कभी कभी तो तू इतना दार्शनिक बन जाता है कि मुझे ऐसा लगने लगता है कि तू किसी साधु महाराज के साथ में घर छोड़कर कहीं सन्यासी न बन जाये।

अमन ने कहा खैर में सन्यासी तो नहीं बनने वाला पर मैं सच को समझता जरूर हूँ और सच को कोई बदल नहीं सकता है आदमी अपने मोह में फंसकर जहाँ चैन नहीं है वहाँ चैन मान बैठता है और बैचेन हो जाता है परसों जब बादल गरज रहे थे और मेरी पूरी मशूर खेत में

पड़ी थी और मुझे ऐसा लगा आज मेरी आई हुई फसल भी बर्बाद हो जयेगी तब में बिस्तर में सोऊँ तो करवट बदलता रहूँ और नींद न आये जो छत पर जाकर बादलों को देखता रहूँ आसमान में बिजली चमके और मेरा दिल धड़के कि हे भगवान अब क्या होगा क्योंकि चैन के पैसे चुकाने थे और अगर मशूर बर्बाद हो जाती तो पैसे कहां से आते अब मेरी स्थिति ये बनी रवि चैन गले में और मन बैचेन अब रवि तुम कह रहे हो कि प्रासु को चैन दे दो क्या मेरी इस पुद्गल की चैन से क्या इसे चैन मिल सकती है रवि ध्यान से सुनो मेरी बात किसी आदमी को सुख चैन न तो गहनों मिलती है न ही भोजन से अगर सुख चैन मिलती है तो अपने आतम चिंतन से प्रभु की भक्ति से मोही प्राणी झूठा अहंकार ममकार करके सत्य को झूठलाने का प्रयास करता है। पर और जड़ पदार्थों से कभी किसी को सुख शांति न मिली है न मिल सकती है।

रवि ने कहा यदि चैन तुम्हारी जड़ और पर है तो इसका त्याग कर दो और इस चैन को प्रासु के गले की शोभा बढ़ाने के लिये दे दो, अमन ने कहा- रवि तुम अगर ये बात कहते हो तो आज से चैन प्रासु की अब मैं ये चैन वापस नहीं लूगा पर एक छोटा सा सहयोग प्रासु से जरूर चाहूँगा कि मुझे कल एक किस्त भरना है तो वह मुझे दस हजार रूपये दे दे प्रासु ने कहा रही पक्की बात अब ही हाल तुम्हें दस हजार देता हूँ प्रासु बड़ी फुर्ती के साथ गले में चैन पहने घर की तरफ लपक गया और घर से दस हजार रूपये लाकर अमन के हाथ में रख दिये। अमन ने कहा चलो यार बहुत समय हो अब तो सोयेंगे सब अपने-अपने घर चले गये।

अब तो प्रासु रोज शर्ट से बाहर निकाले चैन बड़ी शान के साथ बाजार में घूमता था कई मिलने वाले लोग प्रासु को सलाह देते थे प्रासु भाई चैन भीतर कर लो नहीं तो कोई दिन कोई घटना घट जायेगी। तो प्रासु कहता अरे कुछ नहीं होने वाला।

एक दिन अमन ने प्रासु को रोककर कहा या प्रासु मुझे पन्द्रह हजार रूपये की शख्त जरूरत है कहीं से भी लाकर दो प्रासु ने कहा बड़े भाई आप चिंता मत करो एक घटे के भीतर भीतर तुम्हें पन्द्रह हजार रूपये देता हूँ प्रासु अपने नगर के प्रसिद्ध ज्वेलर सम्भू सोनी के यहाँ गया और चैन गिरवी रखने की बात करने लगा शम्भू सोनी ने चैन हाथ में ली और बाहर फेंक दी और कहां प्रासु तू ये काम कब से करने लगा है डेढ़ सौ रूपये चैन पर तुम्हें पन्द्रह हजार रूपये दे देंगे हम क्या यार तुम भी नकली चैन मेरे पास गिरवी रखने आये हो।

प्रासु ने चैन उठाई और अपनी मोटर साइकिल में दो किक्कें मारी और सीधा अमन के घर पहुँचा पर अमन घर पर था नहीं अमन तो अभिषेक करने मन्दिर गया था और अमन जोर जोर से पूजा कर रहा था और प्रासु ने मन्दिर जाकर न तो भगवान को नमस्कार किया और न ही किसी से कोई बात की और लकी और अनी से चिल्लाकर कहने लगा आज तो चोर मन्दिर में मचा रहे हैं शोर ये नकली चैन हमें पकड़ा करके अमन भगवान का भक्त बन रहा है तभी अमन भी पूजन करके आ गया और बोला क्या बात है तब प्रासु ने कहा तुमने हमें नकली चैन दी है। अमने ने कहा भाई मैंने तो ये कहां नहीं की ये चैन सोने की है मैंने तो ये कहा था कि ये डेढ़ की है।

अब तुमने क्या समझा ये तुम जानो ?

हमारे गौरव

जैन सम्राट शंकर सामंत

शंकर सामन्त-नण्डु वंश में कुल का तिलक सिंगम उत्पन्न हुआ। उसकी पत्नी माणियक्के थी और पुत्र एक्कगौड और केरेयम थे। केरेयम की पत्नी रेखक्बे थी और पुत्र बोप्प नावुण्ड था। उसकी पत्नी चांकिगौडि थी, और इन दोनों का पुत्र यह संक-शंकम सामन्त था। उसकी पत्नी का नाम जवकणब्बे था, ज्येष्ठ पुत्र रगेम था और छोटा पुत्र मुद्दय्य था। शंकर सामन्त बान्धवपुर के कदम्बनरेश बोप्पदेव का प्रधान सचिव और महारगमन्त था। उस नरेश के राज्याम्युदय में वही प्रधान सहायक एवं साधक था। राज्य में उसका बड़ा सम्मान करता था और रेच चमूपति तथा होयसल नरेश बल्लाल देव भी उसे मान देते थे। उसके गुरु पूर्वोक्त भानुकीर्ति और नयकीर्ति व्रती थे। उक्त गुरुओं के निकट आगम का अध्ययन करके वह जिनसमय चिन्तामणि (जैन धर्म के लिये चिन्तामणि रत्न) कहलाया। वह बड़ा वीर पराक्रमी कुशल प्रकाश, उदारदानी, धर्मात्मा जिनदेव और गुरुओं का किंकर था। याचकों के लिये वह कल्पवृक्ष था और निरभिमानी था। निशदिन धमार्थकाम, त्रिवर्ग के संपादन में रत और सन्मार्ग के हित की कामना के लिये चिन्तित रहता था मागुडि नामक स्थान के साथ उसका संबंध था संभवतया वह उसका मूल निवास था अतएव उक्त स्थान में उसने तीर्थंकर शान्तिनाथ का एक अत्यन्त मनोरम मंदिर बनवाया था। उसमें प्रतिष्ठापित भगवान का प्रतिबिम्ब अत्यन्त सातिशय एवं चमत्कारी था। बलिपुर के शैवाचार्य सूर्याभरण त्रिपुरान्तकसूरि ने यह देखकर कि यह देवालय तीर्थंकर जिन और शिव दोनों ही भक्तों के लिये समन रूप से प्रिय है, उसके लिये सुपारी के 500 वृक्षों का एक वाग, एक पुष्पोद्यान, उत्तर धान्य का एक क्षेत्र और तेल के एक कोल्हू के रूप में प्रभूत स्थल वृत्ति प्रदान की थी उक्त धार्मिक कार्य को जारी रखने तथा अपनी न्यायोपार्जित सम्पत्ति को अपने आश्रितों की आवश्यकता के लिये सुरक्षित करने के उद्देश्य से इस शंकर देव की चक्री ने महाराज बल्लाल और रेच चमूपति का आश्रय लिया। परिणाम स्वरूप जब महाराज ताणगुण्ड में निवास करते थे तो वह रेचरस और अपने स्वामी बोप्पदेव को उक्त मंदिर में दर्शन पूजन करने के लिये अपने साथ लाया। रेचरस से प्रसन्न होकर मंदिर के लिये एकग्राम शंकर के गुरु और मंदिर के अधिष्ठाता भानुकीर्ति सिद्धांन्तिदेव को समर्पित किया। दानशासन की व्यवस्था का भार बल्लाल देव के प्रधान मंत्री मुरारिकेशव को सौपं दिया गया। मंदिर के लिये चार स्थानों के वाणिज्य निगमों मे तथा मुम्मुरिदण्ड ने भी दान दिये। शंकर सामन्त का सारा परिवार परम जिनभक्त था। उसके पुत्र सामन्त मुद्दय्य ने भी नागरखण्ड और विशेषकर बन्दलिके तीर्थ की उन्नति में अपने पिता की ही भांति योग दिया। राजा बल्लालदेव के प्रसिद्ध मंत्री कम्मट-मल्ल- दण्डाधिनाथ ने तथा उसके सचिव सूर्य-चमूपति को ने बन्दलि के शांतिनाथ तीर्थ की बहुत प्रेम के साथ रक्षा की थी। उक्त सामन्त शंकरणावुण्ड ने 1176 ई. में गावणिनवंशीय केरेयम सेट्टि के पुत्र देक्कि-सेट्टि के साथ मिलकर एलम्बलित में भी एक शांतिनाथ जिनालय बनवाया था जिसके लिये उन दोनों ने गुरु भानुकीर्ति को भूमि का दान दिया था।

जैन साहित्य में भक्ति काव्य का वैशिष्ट्य

❊ पं. संजय कुमार जैन शास्त्री, टीकमगढ़ ❊

विविधतापूर्ण संस्कृतिवन्त इस देश में प्राचीनकाल से ही धर्माराधना और आत्मसाधना का प्रमुख आधार भक्ति रही है। सृष्टि में जीवनदायिनी शक्तियों में लोगों के लिये भक्ति भी एक समाहित तत्त्व है। समाज का एक वर्ग विशेष श्रद्धावान होकर आध्यात्मिक धार्मिक जीवन की प्रवृत्ति में अपने आराध्य के प्रति समर्पित होकर अनेक गुणों का कीर्त्तन भक्ति के माध्यम से करता है। उसी में उसको आनंद और सन्तुष्टि का भाव जागृत होता है। जैन साहित्य का भारतीय साहित्य में गुणवत्ता, परिमाण, विविधता आदि उनके दृष्टियों से विशिष्ट स्थान है। भक्तिकाव्य भी इसका अपवाद नहीं है। अन्य काव्यकारों की तरह जैन कवियों ने भी प्रायः सभी भारतीय भाषाओं में सभी प्रकार की काव्य शैलियों में विपुल मात्रा में उच्चकोटि के भक्तिकाव्य को रचकर अपनी भावांजलि व्यक्त की है। यह भक्ति अपने पूज्य गुणज्ञ महात्माओं के प्रति आस्था को दर्शाता है। ये भक्ति केवल श्रावकों के द्वारा ही हो ऐसा नहीं है ये तो प्रत्येक गुणानुरागी व्यक्ति के द्वारा आत्म निर्मलता और श्रद्धात्मक समर्पण भाव के साथ आत्मचिंतन स्वरूप की जाती है।

भक्त जब आत्मविभोर होता है तो आनंदरस का प्रवाह उसके शब्दों के माध्यम से प्रस्फुटित होता है। अंतरंग में उमड़ती भक्ति प्रेरणा समर्पण भाव से प्रेरित होकर यशोगाथा की कीर्ति को शब्दायमान करती है। और यही उमंग उस भक्त को सहज ही आत्मसंतुष्टिपरक अमृततुल्य अनुपम अहसास कराती है। उस समय व्यक्ति इतना तन्मय होता है कि उसे बाहरी विकारों से मुक्ति मिलती है तथा आत्मा की अनंत गहराईयों तक पहुँचने का माध्यम बनती है। समर्पित भाव से की गई भक्ति नया उत्साह पैदा करती है अशुभ से हटकर, सांसारिक मोह माया से निवृत्त भक्त आश्रय स्थली में आत्मानुरंजन की छवि को प्रकट करने में तत्पर होता है।

निर्गुण तथा सगुण ब्रह्म के रूप में दो प्रकार की भक्ति सभी धर्मों में मानी गई है किन्तु जैन धर्म में इनके पृथक अस्तित्व होते हुये भी इनका अन्तरंग एक ही बताया गया है। निराकार आत्मा में और वीतराग साकार भगवान में समानता का विधान एक मात्र जैन पूजा की नवीन उद्भावना है, यह अन्यत्र कहीं सम्भव नहीं है। सिद्धभक्ति में निष्कल ब्रह्म तथा तीर्थंकर भक्ति में सकल ब्रह्म का उल्लेख मिलता है। तथापि दोनों के मूल में कोई भेद नहीं है। भेदक तत्त्व है राग और यहाँ दोनों शक्तियाँ वीतराग-गुण से सम्पन्न हैं सिद्ध और अरहंत देव भक्ति परक पूजा साहित्य में व्यंजित है पूजक इन शक्तियों की भक्ति करने पर परम शुद्धि और सम्यक् ज्ञान को प्राप्त करता है। जैन धर्मानुसार केवलज्ञान वस्तुतः अनन्त सुख की प्राप्ति का मूलाधार है। इस भक्ति भावना का शुभ परिणाम दुःख से निवृत्ति और शिव पद में प्रवृत्ति उत्पन्न करना है।

जैनधर्म में भक्ति को परिभाषित करते हुये भगवती आराधना की विजयोदयी टीका में कहा गया है- **अर्हदादिगुणानुरागो भक्तिः**।[1] अर्हन्त आदि के गुणों के प्रति अनुराग होना ही भक्ति है। यहाँ अर्हन्त आदि से हम जैनागम में वर्णित नवदेवताओं की भक्ति को स्वीकार कर सकते है।

अर्थात् जिन, जिनेन्द्र अर्हत, अरिहंत आदि कोई भी व्यक्ति-विशेष या उसके नाम विशेष

नहीं है अपितु जिस किसी भी जीव ने अपने मोह-राग-द्वेषादि विकारों को या इन्द्रियाशक्ति को जीत लिया है और जिन्होंने वीतरागतादि गुणों को प्राप्त कर लेने के कार ण पूज्यता को प्राप्त कर लिया है, उसे ही जिन, जिनेन्द्र, अर्हत या अर्हन्त आदि कहा गया है।

भक्ति की परिभाषा में आगत गुणानुराग पद का अर्थ भी वास्तव में उनके गुणों को जानना, पहचानना और उन्हें प्राप्त करने का पुरुषार्थ करना ही समझना चाहिये, क्योंकि जैनधर्म में अन्धभक्ति या कोरी भावुकतापूर्ण भक्ति नहीं होती, अपितु उसमें पूर्ण जागृत विवेक भी होता है और वह किसी न किसी रूप में हमारे मोह-राग-द्वेष को क्षय करने में उपयोगी अवश्य बनती है।

जैनधर्म के भक्ति सिद्धांत को समझने के लिये इन चार विषयों का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक माना गया है -आराध्य का स्वरूप (स्तुत्य), भक्त का स्वरूप (स्तोता), भक्ति का स्वरूप (स्तुति), भक्ति का फल (स्तुति-फल)। जैन भक्ति सिद्धांत को समझने के लिये संक्षेप में स्पष्ट करने वाला एक सारग्राही श्लोक आचार्य जिनसेन कृत जिनसहस्रनाम स्तोत्र में उपलब्ध होता है, जो इस प्रकार है-

स्तुतिः पुण्य-गुणोत्कीर्तिः स्तोता भव्यः प्रसन्नधीः।
निष्ठितार्थो भवांस्तुतत्यः फलं नैश्रयसं सुखम्॥[2]

अर्थात् भगवान के पवित्र गुणों का कीर्तन करना स्तुति है। प्रसन्न बुद्धि वाला भव्य जीव स्तोता है पूर्णतया कृतकृत्य वीतराग सर्वज्ञ परमात्मा स्तुत्य है और मोक्ष सुख की प्राप्ति स्तुति फल है।

यद्यपि अर्हन्त-सिद्ध परमात्मा ही वास्तव में स्तुत्य हैं, किन्तु जैन कवियों ने अपने भक्तिकाव्य में इनके अतिरिक्त कतिपय अन्य को भी प्रयोजनवशात् अपनी स्तुति/भक्ति का विषय बनाया है। वीतराग-सर्वज्ञ परमात्मा की वाणी, उनके मार्ग का अनुसरण करने वाले आचार्य, उपाध्याय, साधु भी स्तुत्य है, जिन चैत्य, जिनचैत्यालय, तीर्थस्थान आदि का आधार बनाया है। जिनवाणी की पूजा भी प्रकारन्तर से जिन भगवान की ही पूजा है। यथा-

ये यजन्ते श्रुतं भक्तया ते यजन्तेऽन्जसा जिनम्।
न किंचिदन्तरं प्राहुराप्ता हि श्रुतदेवताः॥[3]

साहित्य के अनेकानेक रूपों में आदिम काल से ही अपने आराध्य के गुणस्तुति रूप जैन भक्तिकाव्य दृष्टव्य है। इस भक्तिकाव्य के अनेक रूप साहित्य में देखने को प्राप्त होते हैं जैसे मंगलाचरण, भक्ति, स्तुति, स्तोत्र, पूजा, विधान, आरती, पद, अष्टम, दशक, पच्चीसी, बत्तीसी, चालीसा, शतक आदि।

मंगल भावना के साथ जैन ग्रंथों के प्रारंभ में मंगलाचरण हेतु रचे गये छन्द जैन भक्तिकाव्य के उत्कृष्ट उदाहरण माने जाने चाहिये। अत्यन्त सारगर्भित होने से ये छन्द बड़े ही महत्त्वपूर्ण हैं। इन काव्यों से ही साहित्यकार की विनयावनति और काव्य कौशल का परिचय देखने को मिल जाता है। कुछ मंगलाचरण स्वरूप छन्द तो ऐसे हैं , जो न केवल भक्तिकाव्यों के बल्कि दर्शन एवं न्याय शास्त्र के ग्रन्थों के भी मूलाधार बने हैं । इनमें जैनागम में सर्वमान्य ग्रंथ षटखण्डागम का मंगलाचरण तो सम्पूर्ण जैन संस्कृति में स्मरण किया जाने वाला छन्द मंत्र के रूप से विशेष

उल्लेखनीय है -

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।

णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ।।[4]

ग्रंथकार ने ग्रंथ के उद्देश्य को भी मंगलाचरण के साथ स्पष्ट कर दिया है ऐसे जैन जगत् में सर्वाधिक प्रसिद्ध और पढ़ा जाने वाला ग्रंथ तत्त्वार्थ सूत्र जो आचार्य उमास्वामी के द्वारा संस्कृत भाषा में प्रथम सूत्रवद्ध शैली में निबद्ध है ग्रन्थ का मंगलाचरण ग्रंथकार की विज्ञता को प्रस्तुत करते हैं -

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूमृताम्।

ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां, वन्दे तद्गुणलब्धये ।।[4]

उपर्युक्त दोनों मंगलाचरणात्मक काव्य सम्पूर्ण जैन भक्तिकाव्य के मूल स्रोत तो प्रतीत होते ही हैं जैन भक्ति की समूची अवधारणा को स्पष्ट करने में भी बड़े समर्थ प्रतीत होते हैं।

मंगलाचरण के अतिरिक्त भक्तियों/पूजाओं के नाम से भी जैन साहित्य में विशाल भक्ति काव्य रचा गया है। भक्ति के मूल स्रोत में सर्वश्रेष्ठ आचार्य कुन्दकुन्द (प्रथम शताब्दी) और आचार्य पूज्यपाद (पाँचवीं शताब्दी) जैसे धुरन्धर आचार्यों की भक्तियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय है। आज भी हजारों साधु और श्रावक इन भक्तियों का नित्य पाठ करते हैं। भावगाम्भीर्य और शिल्प दोनों ही दृष्टियों से ये भक्तियाँ सम्पूर्ण भारतीय भक्ति-काव्य में अपना बेजोड़ स्थान रखती हैं। जैसे- सिद्धभक्ति, श्रुतभक्ति, चारित्र भक्ति, योगिभक्ति, निर्वाणभक्ति, आचार्यभक्ति, पंचमहागुरुभक्ति, वीरभक्ति, तीर्थंकरभक्ति, शान्तिभक्ति, समाधिभक्ति, नन्दीश्वरभक्ति, और चैत्यभक्ति।

आचार्य कुन्दकुन्द की भक्तियाँ प्राकृत भाषा में हैं, जबकि आचार्य पूज्यपाद की भक्तियाँ संस्कृत में। वर्तमान में ज्यादातर इन भक्तियों का प्रयोग पंचकल्याणक प्रतिष्ठा आदि विधियों को सम्पन्न करने में विद्वानों द्वारा पाठादि के रूप में प्रयोग की जाती है। आचार्य कुन्दकुन्द और आचार्य पूज्य पाद के अतिरिक्त कतिपय अन्य आचार्यो ने भी कुछ भक्तियाँ लिखीं है। जैसे श्रुतसागर सूरि (16 वीं शती) की सिद्ध भक्ति आदि।[6]

मंगलाचरण और भक्तियों के अलावा स्तोत्र के नाम से भी विशाल जैन भक्तिकाव्य साहित्य उपलब्ध है। जैन स्तोत्र-साहित्य का प्रारंभ वैसे तो प्राकृतभाषा में हो चुका था। और जयतिहुअण, उवसग्गहरं, भयहरं आदि अनेक स्तोत्रों की रचना हो चुकी थी, परन्तु संस्कृत भाषा में आकर तो जैन स्तोत्र साहित्य का अद्भुत विकास हुआ। डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री के अनुसार संस्कृत भाषा में लगभग 1000 से अधिक जैन स्तोत्र लिखे गये।[7]

जैन साहित्य में वृहद-स्तुति साहित्य उपलब्ध है। भाव एंव कला दोनों ही दृष्टियों से निष्णात संस्कृत-जैन-साहित्य के आद्य रचनाकर आचार्य समन्तभद्र (दूसरी शताब्दी) के स्तोत्र जैन भक्तिकाव्य के समूचे दर्शन को बड़े ही स्पष्ट शब्दों में और तार्किक रीति से प्रस्तुत करने में अत्यन्त समर्थ हैं। स्तुति, स्तुत्य, स्तोता, स्तुतिफल, स्तुति विधि आदि सभी विषयों पर आचार्य

समन्तभद्र ने बड़े ही सटीक विचार अपने स्तोत्रों में अभिव्यक्ति किये हैं।

आचार्य समन्तभद्र के इन स्तोत्रों के सम्बन्ध में डॉ. प्रेमसागर ने लिखा है- आचार्य समन्तभद्र के स्वयम्भू-स्तोत्र तथा स्तुति-विद्या समूचे भारतीय भक्ति-साहित्य के जगमगाते रत्न है। हृदय की भक्तिपरक ऐसी कोई धड़कन नहीं, जो इनमें सफलता के साथ अभिव्यक्ति न हुई हो। भाव और कला का ऐसा अनूठा समन्वय भारत के किसी भी अन्य स्तोत्र में दृष्टिगोचर नहीं होता है।[8]

इस स्यंभूस्तोत्र का प्रभाव परवर्ती जैन भक्तिकाव्य पर पड़ा। अनुकरण स्वरूप पच्चीसों कृतियाँ तो स्वयंभूस्तोत्र के नाम से ही लिखी गयी हैं। इसके अतिरिक्त इस स्तोत्र के विषय एवं शैली का अनुरकण करते हुये तो विविध भाषाओं और विविद्य कालखण्डों में आज तक भाषाओं शताधिक कृतियों की रचना हुई है।

आचार्य समन्तभद्र के स्वयभूंस्तोत्र के अतिरिक्त संस्कृत-जैन-स्तोत्र-साहित्य में कतिपय स्तोत्र अत्यधिक प्रचलित हैं जो इस प्रकार हैं- भक्तामर स्तोत्र (आचार्य मानतुंग, सातवीं शती) कल्याणमंदिर स्तोत्र (आचार्य सिद्धसेन अप रनाम कुमुदचन्द्र, सातवीं शती), विषापहारस्तोत्र (महाकवि धनंजय, आठवहीं शती), जिनसहस्रनामस्तोत्र (आचार्य जिनसेन, आठवीं शती), एकीभावस्तोत्र (आचार्य वादिराजसूरि, ग्यारहवीं शती), पार्श्वनाथ स्तोत्र (कविवर द्यानतराय, अठारहवीं शती), महावीराष्टकस्तोत्र (कविवर पं. भागचन्द्र उन्नीसवीं शती) आदि।

इन स्तोत्रों का हजारो जैन साधक सामान्य जन भी कण्ठस्थ हो जाने से प्रायः प्रतिदिन पाठ करते हैं इसलिये जैन भक्ति-काव्य-संग्रह की प्रायः प्रत्येक पुस्तक में ये संकलित हैं। इन स्तोत्रों का पद्यानुवाद या हिन्दी आदि विविध भाषाओं में रूपान्तरण भी परवर्ती आचार्यो, साधुसंतों एवं विद्वानों द्वारा किया जा चुका है। इन स्तोत्रों की लोकप्रियता का एक प्रमाण यह है कि सामान्य लोग इनका असली नाम तक नहीं जानते, फिर भी इन्हें अपने ही रखे हुये नाम के द्वारा बहुत अधिक पढ़ते-सुनते हैं। जैसे- भक्तामर-स्तोत्र का वास्तविक नाम तो ऋषभदेव-स्तोत्र हैं, किन्तु उसका प्रथम पद भक्तामर हैं भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणाम् अतः उसका नाम जनसाधारण में भक्तामर-स्तोत्र ही प्रचलित हो गया है। इसी प्रकार देवागम-स्तोत्र, कल्याणमंदिर स्तोत्र और एकीभाव स्तोत्र का भी मूल नाम तो क्रमशः आप्तमीमांसा, पार्श्वनाथ स्तोत्र और चतुर्विंशतितीर्थंकर स्तोत्र है।

उक्त स्तोत्रों में भी प्रसिद्ध की दृष्टि से आचार्य मानतुंग जी का भक्तामर स्तोत्र विशेष रूप से विख्यात है। भावविभोर करने की अद्भुत क्षमता के कारण जैन धर्म के दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों ही सम्प्रदायों में बड़ी भक्ति के साथ पढ़ा-पढ़ाया जाता है।

जैन भक्तिकाव्य में पूजाकाव्य का स्थान भी बड़ा महत्वपूर्ण है। भक्तिकाव्य में पूजाओं का भी बड़ा भण्डार है। लाखों श्रावक-श्राविकायें प्रतिदिन अनिवार्य रूप से जैन मंदिरों मे जाकर शुद्ध वस्त्र पहनकर, अष्टद्रव्य से थाल सजाकर उत्साहपूर्वक गा-गाकर इन पूजाओं को पढ़ते हैं। पर्वादि के विशेष दिवसों में तथा निर्धारित समयानुसार विधि-विधान, अनुष्ठान आदि के अवसर पर विशेष पूजायें सामूहिकं रूप से सम्पादित की जाती हैं। ये उत्साहवधन के साथ असीम पुण्य का

संचार करने वाली होती हैं।

प्रत्येक तीर्थंकर पूजा के मुख्यतः 5 भाग होते हैं - स्थापना, अष्टक, पंचकल्याणक, जयमाला और आशीर्वचन। स्थापना में स्तुत्य या पूज्य का आह्वान करके उसे अपने हृदय में स्थापित किया जाता है। अष्टक में उसी पूज्य की जल, चंदन, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, दीपं, धूपं, फल इन आठ द्रव्यों से पृथक्-पृथक् पूजा करने के बाद इन सबको मिश्रण रूप अर्घ्य चढ़ाकर पूजा की जाती हैं। पंचकल्याणक वाला भाग केवल 24 तीर्थं करो की पूजा के लिये ही प्रयोग किया जाता है। जिसमें गर्भकल्याणक, जन्मकल्याणक, तपकल्याणक, ज्ञानकल्याणक और मोक्षकल्याणक इन पंचकल्याणकों से युक्त तीर्थंकर के पृथक्- पृथक पांच अर्घ्य चढ़ायें जाते हैं। जयमाला पूजा का बड़ा ही महत्त्वपूर्ण भाग होता है। इसमें पूज्य का गुणानुवाद तो होता ही है, पर अनेक बार उनके जीवनचरित्र आदि का भी सुन्दर वर्णन उपलब्ध होता है। कभी-कभी जैन दर्शन के तत्त्वज्ञान का गूढ़ व्याख्यान भी इन जयमालाओं में उपलब्ध होता है यथा-

पंच परावरतन हरन, पंच सुमति सित दैन।
पंच लब्धि दातार के, गुण गाऊँ दिन रैन।।[9]

इन्हें पढ़कर यह कहने की आवश्यकता नहीं कि दोहों का साहित्यिक सौन्दर्य भी मनोमुग्धकारी है पूजा के अन्तिम भाग आशीर्वचन में भक्तों एवं जगत् के सभी जीवों कल्याण की शुभकामना की जाती है। वर्तमान में प्रचलित हिन्दी पूजाओं में पं. बनारसीदास, भूधरदास, द्यानतराय, भगवतीदास, दौलतराम, भागचन्द आदि कवियों के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

मंगलाचरण, भक्ति, स्तोत्र, पूजा एवं विधान के अतिरिक्त जैन भक्तिकाव्य में स्तुति या भजन के रूप में भी हजारों पद आज उपलब्ध हैं हिन्दी (बज्र) भाषा में तो इन पदों का लेखन इतनी विपुल मात्रा में हुआ है कि उसका एक विशाल कोश-ग्रंथ ही अलग से प्रकाशित किया जाता सकता है। भावगाम्भीर्य और पदलालित्य दोनों ही दृष्टियों से विद्वानों ने इन पदों की मुक्त-कण्ठ से सराहना की है। उदाहरणार्थ दौलत विलास का एक पद द्रष्टव्य है -

साधी निज साधकी, समाधि मोहव्याधि की,
उपाधि को विराधि के आराधना सुहाई।
धन दिन छिन आज सुगुन, चिन्ते जिनराल अबै,
सुधरे सब काज दौल अचल रिद्धि पाई।।[10]

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भी भक्तिकाव्य का प्रवाह लौकिक भाषाओं में गतिमान है। जैन साहित्य में वीतराग परम्परा के पोषक वर्तमान आचार्य, साधुगण, आर्यिका मातायें या मनीषी विद्वानों की लेखनी से मूल साहित्य का पद्यानुवाद, स्तुति, पूजा-विधान आदि के रूप में बहद् मात्रा में लिखा जा रहा है जो निश्चित ही जीवों के हितकर मार्गदर्शन का कारक वर्तमान में हो रहा है और भविष्य में भी होगा। इनमें आचार्य ज्ञानसागर जी के जयोदय महाकाव्य आदि भी महत्त्वपूर्ण कृतिया के रूप में हैं। वर्तमान युग के सर्वश्रेष्ठ आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज द्वारा सर्वाधिक प्रचलित ग्रंथों के पद्यानुवाद के साथ मूकमाटी महाकाव्य भक्तिकाव्य की अनोखी कृति

है, जो लोक में बहु ख्याति प्राप्त है। आर्यिका ज्ञानमति माताजी द्वारा लिखित अनेक विधान आदि भक्तिकाव्य की अजस्र प्रस्तुति में संवाहक हैं तो आर्यिका पूर्णमति माताजी द्वारा मंत्रमुग्ध वाणी और सरल शब्द भावभंगिमा से परिणत विधान पूजाओं की काव्यधारा नवागत साहित्य को विकसित करती है। आचार्य विभवसागर जी महाराज की काव्यप्रतिभा से प्रश्रुत अनेक स्तुतियाँ और विधान आदि सम्पादित किये जा रहे हैं जो सराहनीय और लोगों को आकर्षित करने वाले हैं। इनके अलावा हमारी लेखनी से अछूते अनेक साधुगण व विद्वतगणों का काव्यसाहित्य काव्यरसिकों के लिये अमृतोमयी जीवन दर्शन की प्रेरणा का कारण बन रहा है।

इस प्रकार जैन दर्शन में भक्तिकाव्य सुषप्त भावना को उद्वेलित कर अंतर्भावना को प्रज्वलित करने में समर्थ है। अशुभोपयोग से हटकर शुभोपयोग की प्रवृत्ति अनंत कर्मों के हनन में साधक है। आराध्य की भक्ति जीवन्तता की शक्ति प्रदान करने वाली है, आस्रव, बंध से हटाकर संवर और निर्जरा में कारण बनने वाली है।

संदर्भ सूची:

1. भगवती आराधना, विजयोदया टीका गाथा 46
2. जिनसहस्रनाम स्तोत्र, ज्ञानपीठ पूजांजलि पृ. 408
3. सागार धर्मामृत - पं. आशाधर, 2/44
4. षट्खण्डागम आचार्य पुष्पदंत-भूतबलि, मंगलाचरण, गाथा 1
5. तत्त्वार्थ सूत्र- आचार्य उमास्वामी, मंगलाचरण
6. जैनेन्द्र सिद्धांत कोश- जिनेन्द्र वर्णी, भाग 3, पृष्ठ 197
7. संस्कृत- काव्य के विकास में जैन कवियों का योगदान-डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, पृ. 71
8. ज्ञानपीठ पूजांजलि- डॉ. प्रेमसागर जैन, जैन शोध और समीक्षा पृ. 40
9. सुमतिनाथ तीर्थंकर पूजा- कवि वृन्दावनदास कृत, जयमाला छन्द 1 व 3
10. दौलत विलास, पद 28, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली

क्र.	दीक्षा उपरांत नामकरण	पूर्व नाम	पिता का नाम	माता का नाम	जन्म सन्	शिक्षा	दीक्षा दिनांक	दीक्षा स्थान	दीक्षा प्रदाता
01.	एलकश्री उपशमसागरजी		बाबूराव जैन	श्रीमती सुवर्णा जैन	1983	बी.ए.	07.04.2021	नेमावर	आचार्यश्री विद्यासागरजी
01.	क्षुल्लकश्री स्वाध्याय सागर जी	ब्र.व्रती फूलचंद लुहाडिया	स्व.श्री शंकरलाल जी लुहाड़िया	श्रीमती दोऊ बाईजी	1937	8वीं	09.06.2021	नेमावर	आचार्यश्री विद्यासागरजी
02.	क्षुल्लकश्री प्रशांतसागर जी	ब्र.शांतिलाल जैन	स्व.श्री नानालाल जैन	श्रीमती मथुरी बाई जैन	1940	9वीं	09.06.2021	नेमावर	आचार्यश्री विद्यासागरजी
03.	क्षुल्लकश्री मौनसागरजी	ब्र.ताराचंद जैन	स्व.श्री नाथूराम जैन	श्रीमती सुंदर बाई	1938	मिडिल	09.06.2021	नेमावर	आचार्यश्री विद्यासागरजी
04.	क्षुल्लकश्री चिंतनसागर जी	ब्र.सत्येन्द्र जैन	स्व.श्रीराम जैन	श्रीमती गुलाब देवी जैन	1951	बी.कॉम.	09.06.2021	नेमावर	आचार्यश्री विद्यासागर जी
05.	क्षुल्लकश्री अगम्यसागर जी	ब्र.अशोक कुमार जैन	स्व.श्री मूलचंद जैन	श्रीमती सरजूबाई जैन	1942	11वीं	09.06.2021	नेमावर	आचार्यश्री विद्यासागरजी
06.	क्षुल्लकश्री वैराग्यसागरजी	ब्र.भागचंद दोसी	स्व. श्री शौभागमल जी दोसी	स्व.श्रीमती उगमा देवी	1957	13वीं	09.06.2021	नेमावर	आचार्यश्री विद्यासागरजी
07.	क्षुल्लकश्री अटलसागरजी	ब्र.राजेश जैन नायक	श्री निर्मलचंद जैन नायक	श्रीमती कमला जैन	1961	उत्तरमध्यमा	09.06.2021	नेमावर	आचार्यश्री विद्यासागरजी
08.	क्षुल्लकश्री निकटसागरजी	ब्र.संतोष पाण्डया	स्व.श्री रामेश्वर लाल जी	श्रीमती चन्दा देवी	1951	आई.कॉम	0906.2021	नेमावर	आचार्यश्री विद्यासागरजी
09.	क्षुल्लकश्री परीतसागरजी	ब्र.बसंतलाल जी जैन	स्व.श्री सुखलाल जी जैन	श्रीमती मोतीबाई जैन	1949	मेट्रिक	09.06.2021	नेमावर	आचार्यश्री विद्यासागरजी

कमर दर्द बुढ़ापे की निशानी नहीं बनने देवे

❊ जिनेन्द्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 ❊

90 फीसदी लोगों को जीवन में कभी न कभी कमर दर्द होता है। एक समय था कमर दर्द 50-55 की उम्र बाद आता था किन्तु अब कमर दर्द की तकलीफ की कोई उम्र रेखा नहीं है। कमर की बनावट में हड्डियाँ, मांसपेशियाँ, डिस्क जोड व लिंगामेन्ट आदि शामिल है। रीड या स्पाइनल कार्ड एक लचकदार संरचना है जो अनेक हड्डियों जिन्हें वरटिब्रा कहते हैं। स्पाइनल कार्ड 33 वरटिब्रा से मिलकर बनता है जिनमें 19 वरटिब्रा जो गर्दन व छाती बनाती हैं शेष 14 एक दूसरे से मिलकर कमर का भाग बनाती है। 5 वरटिब्रा जिन्हें जम्बर वरटिब्रा कहते हैं कमर बनाती है, 5 वरटिब्रा सेक्रल, 4 वरटिब्रा काक्सीजियल जो रीड़ की हड्डी के सबसे नीचे नोकदार हड्डी कॉक्सीक्स व सेक्रम जो मिलकर वस्ति गव्हर (पेल्विक) भाग बनाती है।

कमर के ऊपरी हिस्से के दर्द को पृष्ठ शूल या वेकएच तथा कमर के नीचे के दर्द को कटिवात या कटिशूल या लम्बेगो कहते हैं। **1. कमर के ऊपरी हिस्से का दर्द का कारण-** जमीन से कोई भारी वस्तु उठाना, काम करने के लिये एकाएक झुकना आदि से कमर की मांसपेशियां प्रभावित होती है। जिससे खिचाव व अकडन महसूस होती है कमर में दर्द एक ही जगह बना रहता है। यह दर्द आमतौर पर गम्भीर नहीं होता है, कुछ दिनों सप्ताह में ठीक हो जाता है जिसमें बर्फ की सिकाई, गर्म पानी की सिकाई व दर्द निवारक दवा से आराम हो जाता है। **2. कमर के नीचे का दर्द का कारण-** यह एकाएक शुरु होता है जिसमें लगातार कम्प्यूटर के सामने या कोई भी काम एक ही स्थिति में करना, लगातार खड़े होकर कार्य करना, लगातार दौड भाग करना, लम्बे समय तक दो पहिया वाहन चलाना, लगातार बैठे रहना, गलत तरीके से कसरत करना, लम्बे समय तक कब्ज होना, चोट लगना, संक्रमण होना, वस्ति गव्हर (पेल्विक) हिस्से में दर्द होता है जिसका प्रमुख कारण गर्भावस्था में हार्मोन बदलाव, डिलेवरी के बाद शारीरिक बदलाव, ओवरी में सिस्ट, बच्चे दाने की रसोली होना, मेनोपास, लिकोरिया, व साइटिका स्पॉन्डिलाइटिस प्रमुख कारण हैं। इसका कमर दर्द चारों ओर फैलता है। इसके अतिरिक्त कमरदर्द शरीर में मेहावालिक रसायनों की कमी, रीड की बनावट में परिवर्तन, हड्डिया की सघनता में कमी, कैल्शियम की कमी भी दर्द का कारण बनती है।

कमर दर्द से शरीर का तापमान बढ़ जाता हैं पीठ में सूजन व तेज दर्द पीठ व नितबों के आसपास सुन्नपन महसूस होना व कभी कभी घुटना, पैरों में दर्द होने लगता है। कमर दर्द दो सप्ताह से अधिक हो तो इसकी गंभीरता का पता लगाने के लिये हड्डी रोग विशेषज्ञ से संपर्क करके जांच व इलाज करवाना चाहिये।

शारीरिक गतिविधियों में सुधार करना, अधिक देर तक एक स्थिति में नही बैठे यदि बैठना जरूरी होतो थोड़ी थोड़ी देर में स्थिती में बदलाव करना व खड़े होना, झटके से न बैठे न उठे, उस तरह से बैठे की रीड की हड्डी को सहारा मिले। जब भी झुके तो रीड़ की जगह घुटने मोड़े। भोजन में पौष्टिक आहार लेना हरी सब्जियाँ फल, ड्राइफ्रूट, दूध, दही व कैल्शियम युक्त खाद्य पदार्थों को

भोजन में सम्मिलित करना। जंक फूड, तैलीय भोज्य पदार्थ व चीनी से बनी चीजों का परहेज करना, खूब पानी पीना, प्रतिदिन 45 मिनिट तक घूमना योग व कसरत करना चाहिये।

सभी चिकित्सा पद्धति में इलाज संभव है किन्तु विशेष गम्भीर चोट, दुर्घटना, रोगों में असहनीय दर्द, कमर की बनावट में बदलाव होने पर ऐलोपैथी पद्धति में जांच व इलाज कराना चाहिये। रोगों का कारण ज्ञात करके आयुर्वेदिक होम्योपद्धति से पूर्णतः आराम प्राप्त हो सकता है।

कमर शरीर में सबसे महत्वपूर्ण भाग है जो सुन्दरता के साथ ही तंत्रिका तंत्र, संचार तंत्र को स्थिरिता प्रदान करता है। जिसके प्रभावित होने से शारीरिक गतिविधियाँ प्रभावित होती है। कहावत है कष्टों से मेरी कमर ही टूट गई। समय रहने कमर को रोगों का कमरा बनने से रोकते हुये बुढ़ापे की निशानी के पास न आने देवे।

कमर दर्द की होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति में पांच बातों का ध्यान रखकर इलाज किया जाता है। 1.क्या चलने-फिरने से दर्द घटता है, 2. क्या हिलने से दर्द बढ़ता है, 3. कमर दर्द कमर के किस हिस्से में है, 4. कमर दर्द का कारण सर्दी से गरमी से , जरायु रोग से, 5. कमर दर्द में क्या विचित्र संवेदन होते हें। प्रमुख औषधियाँ इसटॉक्स, ब्रायनिया, पल्सेटिला, सल्फर, एस्कुलस , सिमिसिप्यूगा, आर्निका, एकोनाइट, डलकाभारा, कैल्कोरियाफास, कैल्केरिया फ्लोर, नेट्रमम्यूर, सीपिया, आदि औषधियों का उपयोग किया जाता है।

आयुर्वेदिक उपचार : 1. राई 10 ग्राम, खार पाठे का गूदा 50 ग्राम मिलाकर गरम गरम कमर पर लेप लगाने से आराम होता है। 2. सहिजन की फलियों का रस 2 चम्मच, ग्वार पाठे का गूदा 10 ग्राम मिलाकर कुछ दिन लेने से आराम मिल जाता है।

कविता

वाणी का जादू

❊❊ संस्कार फीचर्स ❊❊

सुन्दर शब्द सृजन से ही तो छंद गीत बन जाते हैं
व्यंग वाण की करतूतों से युद्ध बड़े ठन जाते हैं

शब्दों में जादू होता है पशु पक्षी अपने बनते हैं
मानव की मीठी वाणी से जन-जन के संकट टलते हैं
मीठी बोली में अपनापन दुश्मन बन्धु बन जाते हैं

शब्दों में ऊर्जा होती है निज सोच बनाते हैं भाषा
बोली से मिटे निराशा सब जल जाते दीप नई आशा
मन में हिम्मत तन में हिम्मत शब्द सदा दे जाते हैं

हम वीर बने भाषा सुनकर दरिया से पार उतरते हैं
अपने जन की हिम्मत पाकर सब मुश्किल हल करते हैं
विनय युक्त मीठी बोली से सफल सदा बन जाते हैं

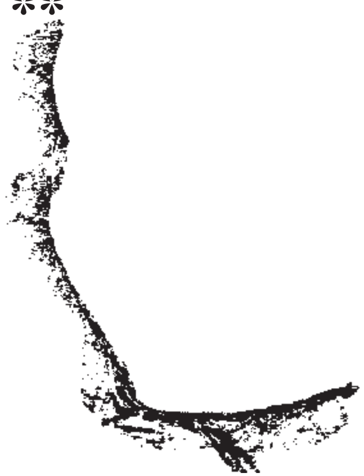

हास्य तरंग

01 एक भिखारी सड़क किनारे बैठा आवाज लगा रहा था इस अपाहिज पर दया करो, बाबा पांच रूपये का सवाल है, तीन दिन से भूखा हूँ वहाँ गुजर रहे व्यक्ति ने उसे पहिचान कर कहा आज भूखा रहने का नाटक कर रहा शर्म नहीं आती है परसों तुम बड़ी शानदार रेस्टोरेन्ट में भोजन कर रहे थे। भिखारी ने कहा वह मेरी सोशल लाइफ थी यह मेरी प्रोफेशनल लाइफ हैं।

02 एक व्यक्ति रेल से हर स्टेशन पर उतरता सामान उतारता और फिर टिकट लेकर पुनः रेल में चढ़ जाता, ऐसा देख रहे एक व्यक्ति को आखिर रहा नहीं गया और पूंछ बैठा ? यह क्या कर रहे ? इस पर वह व्यक्ति बोला मुझे डॉक्टर ने कोरोना होने से कहा है कि तुम एक साथ लम्बा सफर मत करना इसलिये छोटा-छोटा सफर कर रहा हूँ।

03 एक महिला रात्रि को तीन बजे फेमली डॉक्टर को फोन लगाती है। डॉक्टर- डॉ बोलिये महिला- डॉक्टर साहब मुझे नींद न आने की बीमारी लग गई है। डॉक्टर- जी, इसे फैला क्यों रही हैं, कम से कम मुझे तो सोने दो।

04 पत्नी- टीवी देख रही थी, पति- क्या देख रही हो ? पत्नी- कोरोना काल का सदउपयोग करते हुये कुकिंग शो। पति- दिन भर कुकिंग शो देखती हो पर आज तक कोई नई चीज नहीं बनाई। पत्नी- आप भी तो कौन बनेगा करोड़पति देखते हो पर मैंने तो कुछ नहीं कहा।

05 डॉक्टर -अपने दोस्त सेठी जी से- बचपन में फिल्में देखकर डाकू बनना चाहता था। सेठी जी- डॉक्टर साहब यार बहुत लकी हो, आपके इलाज का बिल देखकर यही लगता है कि दुनिया में किसके सपने सच होते हैं। मात्र स्टाईल अलग है।

संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, इंदौर

संस्कार खेल

शरीर विकास के कुछ खेल

✻ समझदार गेंद

खिलाड़ियों की संख्या- 10-15

खेल वर्ग- बैठे का खेल

खेल विधि- धरती से लगभग एक मीटर दीवार पर 50 सेमी. व्यास का एक गोला बनायें। पांच मीटर दूरी से गेंद इस प्रकार फेंके कि वह एक टप्पा धरती पर खाकर दीवार पर बने मंडल में टकराये। प्रत्येक खिलाड़ी को तीन अवसर दें। मंडल का आकार बड़ा कर खिलाड़ी की आँखों पर पट्टी बांधकर भी इसे खेल सकते हैं।

✻ पोस्टमेन

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- बैठे का खेल

खेल विधि- सब स्वयंसेवक एक-एक शहर का नाम शिखर जी, नैनागितरि जी, पावापुर जी आदि बतायेंगे। शिक्षक किसी खिलाड़ी (अ) को कोई वस्तु पत्थर रूमाल देगा तथा उसे निर्धारित डाकघर (उदा. चम्पापुर) पर पहुँचाने को कहेगा। (अ) अपनी स्मरण शक्ति के आधार पर चम्पापुर बोलने वाले के पास जाकर खड़ा होगा। यदि **अ** ठीक है तो वह डाक ले लेगा। अन्यथा **अ** की पीठ पर एक मुक्का लगाकर उसे आगे भेज देगा। **अ** जब ठीक व्यक्ति को डाक दे देगा तो वह शिक्षक के निर्देश पर उसे अगले स्थान तक पहुँचायेगा।

✻ फुग्गा वाले बाबा

खिलाड़ियों की संख्या- 10-15

खेल वर्ग- बैठे का खेल

खेल विधि- मंडल में सब खिलाड़ी बैठे रहेंगे शिक्षक एक को फुग्गा वाला बाबा बनायेगा। जो फुग्गा वाला बाबा होगा। वह अपना रूप फुलायेगा दूसरा खिलाड़ी गाल पर चपत मारकर फुग्गा फोड़ने की कोशिश करेगा। यदि वह सफल हो जाता है और बाबा के दांत दिख जाते हैं तो दूसरा खिलाड़ी सफल हो जायेगा।

बाल कहानी

आत्मग्लानी के बाद क्षमायाचना

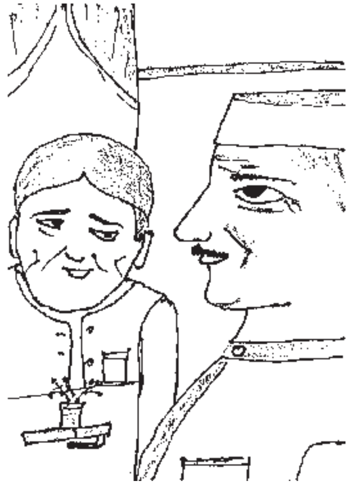

भारत की आजादी की लड़ाई के प्रमुख सेनातियों में जिनकी गिनती होती रही है ऐसे बिहारी बाबू उस प्रांत के थे। जिस प्रांत में गौतमबुद्ध भगवान महावीर स्वामी ने जन्म लिया। 510 राजेन्द्र प्रसाद का नाम लेते ही हमारा मस्तिष्क गर्व से ऊँचा हो जाग है वे श्रेष्ठ विद्वान के साथ साथ बहुत बड़े देश भक्त नेता थे वे भारत की संविधान निर्माण समिति के अध्यक्ष भी रहे। आपने अपने राष्ट्रपति पद पर आसीन होने के बाद 12 वर्ष तक देश की महान सेवा की। आप अनुशासन प्रिय सहृदय व्यक्तित्व के धनी थे।

जब आप राष्ट्रपति थे तब उनके पास एक तुलसी नाम का सेवक उनकी सेवा में सदैव कार्यरत रहता था वे तुलसी के साथ ऐसा व्यवहार करते थे जिससे उसे यह अनुभव नहीं कि वह गिरा हुआ छोटा आदमी है अपितु वह यह अनुभव करे मैं भी गौरवशाली इंसान हूँ।

तुलसी राष्ट्रपति भवन में उनका पुराना सेवक था। वह रोज कक्ष की सफाई करता था। एक दिन सुबह सुबह जब तुलसी सफाई कर रहा था तभी असावधानीवश हाथी दांत का पेन टेबिल से नीचे गिर गया। पेन गिरते ही वह टूट गया। पेन के टूट जाने के बाद साफ कालीन पर स्याही फैल गई। डॉ राजेन्द्र प्रसाद को वह पेन बहुत प्रिय था वह उन्हें भेंट में मिला था वे उसी पेन से प्रायः लिखा करते थे। वे लिखने बाद पेन को खूब सम्हाल के रखते थे। जब पेन गिरकर टूटा तो डॉ. रोन्द्र प्रसाद जी को बहुत गुस्सा आया और उन्होंने उसे मात्र डांटा ही नहीं अपितु लापरवाही का दंडित करते हुये निजी सेवा से तुलसी को हटा दिया। और दूसरी जगह भेज दिया।

उस दिन डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी मुलाकातों में खूब कई विदेशी राजनायिकों से उन्होंने चर्चा की परंतु उनका मन दिन भर तुलसी को डांटने के कारण उखड़ा-उखड़ा सा रहा। सभी राजकी कार्य से निवृत्त होने के बाद तुलसी को अपने कक्ष में बुलवाया। पहले तुलसी घबराया और कांपने लगा वह डरते डरते कक्ष में पहुंचा और चुपचाप खड़ा हो गया।

राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा मैं तुलसी तुमसे आशा करता हूँ कि तुम मुझे मेरी गलती पर क्षमा जरूर करोगे और उन्होंने अपने हाथ जोड़ लिये और कहा मैंने तुम्हें जो बुरी तरह से डांटा उसके लिये हृदय से क्षमायाचना करता हूँ तुलसी रोते हुये उनको पैरों में गिर गया बोला बाबू जी मैं आपको क्या क्षमा करूँगा राजेन्द्र प्रसाद जी ने उठाया और अपने हृदय से लगा लिया और कहा भैया क्षमा मांगने वाले से क्षमा करने वाला हमेशा बड़ा होता है। और फिर उसे निजी सेवा में नियुक्त कर लिया।

संस्कार गीत

भारत स्वच्छ बनायें

उठो युवा साथी सब मिलकर
भारत स्वच्छ बनायें
बीमारी सब बाहर करने
कचरा रोज हटायें

1.
राम नाम की साक्षी लेकर झाड़ू कर में थामे
गली मुहल्ला स्वच्छ करें सब गीत प्रभू के गाँये
बीमारी में धन न लुटाये गौरव उच्च बनायें

2.
गांधी मोदी का आह्वान सबके हित में भैया
धर्म अहिंसा मन में धारो बचा लो अपनी गैया

3.
आपस में हम प्रेम बढ़ायें
निष्छल चित्त बनायें
अंतर बाहर से निर्मल बन
अपना फर्ज निभायें
विश्व गुरु भारत बन जाये
मिल हाथ बढाये

बाल कविता

अकलंक देव

आओ गुरु अकलंक को जाने
तर्क शिरोमणि गुरु पहचाने
मंत्री पुरुषोत्तम के सुत थे
छठवी सदी के महा मुनि थे
भट्ट थी इनकी परम उपाधि
इनने न की कोई शादी
राजवार्तिक ग्रंथ बनाया
अष्टशती रचन्याय बढ़ाया
लघीयस्त्रीय न्याय विनिश्चय
प्रमाण संग्रह सिद्धि विनिश्चय
ग्रंथ स्वरूप संबोध रचना
सतत छह ग्रंथ की कर दी रचना
बलिदानी निकलंक के भाई
जैन धर्म की लाज बचाई
आप पितामह जैन न्याय के
वरद पुत्र जिनवाणी माँ के
बादी गण सब लोहा माने
अकलंक देव को गुरूवर माने

समाचार

दीक्षायें

नेमावर- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के करकमलों से क्षुल्लक श्री समताभूषण महाराज को एलक दीक्षा 8 अप्रैल 2021 को दी गई। जिनका नाम एलक श्री उपशम सागर जी रखा गया।

द्वारीपन्ना- मुनिश्री आस्तिक्य सागर महाराज के करकमलों से ब्र.बाला भैया रावेट जलगांव महाराष्ट्र को मुनि दीक्षा 28 अप्रैल 2021 को दी गई। जिनका नाम मुनि श्री सुकुलसागर जी रखा गया।

तेवरी- आचार्य श्री निर्भयसागर महाराज जी के करकमलों से10 अप्रैल 2021 को निर्मलचंद्र जी जैन खितौला वालों को मुनि दीक्षा दी गई। जिनका नाम मुनि श्री नेमिदत्त सागर जी रखा गया।

सम्मेदशिखर जी- आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज के करकमलों से 27 अप्रैल 2021 को एलक श्री यत्नसागर महाराज जी को मुनि दीक्षा दी गई जिनका नाम मुनियत्नसागर जी रखा गया।

इटावा (उ.प्र.)- आचार्य श्री प्रमुखसागर जी महाराज के करकमलों से ब्र. मनीष भैया इटावा को क्षुल्लक दीक्षा 22 जून 2021 को दी गई जिनका नाम क्षुल्लक प्रगुणसागर जी रखा गया।

निमियाघाट शिखर जी- आचार्य श्री प्रसन्नसागर जी महाराज के करकमलों से 22 मई 2021 को ब्र. भरत मैयावत परतापुर एलक पर्वसागरजी, श्रीमती सरोज मैयावत परतापुर, राजमती मैयावत परतापुर, रागवेश मैयावत परतापुर, भवरी देवी मैयावत पश्चिम बंगाल को जैनेश्वरी दीक्षायें दी गई जिनका नाम क्रमशः मुनि श्री अप्रमत्तसागर जी, मुनि पर्वसागर जी, आर्यिका ज्ञानप्रभा माताजी, आर्यिका चारित्रप्रभा माताजी, क्षुल्लक परिमल सागर जी, क्षुल्लिका दर्शनप्रभा माताजी रखा गया

तारंगा- गणिनी आर्यिका शुभमति माताजी के करकमलों से ब्र. मंजुला दीदी हिम्मतनगर को आर्यिका दीक्षा 25 अप्रैल दी गई जिनका नाम आर्यिका सुहितमति रखा गया।

कुनैरा (उ.प्र.)- आचार्य श्री प्रमुखसागर जी महाराज के करकमलों से 2 जून 2021 को मुनि दीक्षा दी गई जिनका नाम मुनिश्री प्रभाकरसागर जी रखा गया।

तारंगा-गणिनी आर्यिका शुभमति माताजी के करकमलों से शरद जैन महाराष्ट्र को 1 मई 2021 को क्षुल्लक दीक्षा दी गई जिनका नाम संभवसागर महाराज जी रखा गया।

आगामी दीक्षा

मुनिश्री श्रुतधरनंदी महाराज के करकमलों से ब्र. समय भैया को जैनेश्वरी दीक्षा 23 जुलाई 2021 को दी जावेगी।

समाधिमरण

पपौराजी- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के शिष्य आर्यिका श्री आनंदमती माताजी का समाधिमरण 29 मार्च 2021 को आर्यिका श्री आदर्शमती माता जी के ससंघ सान्निध्य में हुआ।

बरूर- आचार्य श्री गुणधरनंदी महाराज के ससंघ सान्निध्य में आर्यिका सत्यमति माताजी का समाधिमरण 23 जून 2021 को हुआ।

हस्तिनापुर- आर्यिका श्री विद्याश्री माताजी का समाधिमरण 8 मई 2021 को आर्यिका विधाश्री माताजी के सान्निध्य में हुआ।

वटेश्वर- आचार्यश्री चैत्यसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में आर्यिका श्री पावापुरी माताजी का समाधिमरण 03 मई 2021 को रात्रि 8 बजे हुआ।

तेवरी खितौला- आचार्य श्री निर्भयसागर महाराज के ससंघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनि श्री नेमिदत्त सागर जी समाधिमरण 10 अप्रैल 2021 को हुआ।

धर्मनगर-आचार्य श्री बाहुबलीसागर महाराज जी के शिष्य मुनि श्री शांतिसेन महाराज का समाधिमरण 29 मार्च 2021 को आचार्य श्री

धर्मसेनमहाराज के ससंघ सान्निध्य में हुआ।

बजरंगगढ़ (गुना)- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के शिष्य मुनिश्री निकलंक सागर महाराज का समाधिमरण 26 अप्रैल रात्रि 11.30 बजे मुनि श्री प्रसादसागर महाराज के ससंघ सान्निध्य में हुआ।

तारंगा- गणिनी आर्यिका शुभमति माताजी के ससंघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य क्षुल्लक श्री संभवसागर महाराज जी का समाधिमरण 2 मई 2021 को हुआ।

दिल्ली- आचार्य श्री सरलसागर महाराज जी का समाधिमरण न्यू विकास कॉलोनी दिल्ली में 08 मई 2021 को प्रातः 9.45 पर हुआ।

बेला- आचार्य श्री सिद्धांतसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में उनकी ही शिष्या क्षुल्लिका सुपार्श्वमति माताजी का समाधिमरण 03 मई 2021 को दोप. 12.30 बजे हुआ।

जबलपुर-आचार्यश्री विद्यासागर महाराज जी के आशीर्वाद से आर्यिका श्री दृढमति माताजी के ससंघ सान्निध्य में संजीव भैया कंटगी की माँ का समाधिमरण 19 जून 2021 को प्रातः 7.20 बजे हुआ।

सागर- ब्र. त्रिलोक भैया अशोकनगर (जबलपुर) का समाधिमरण भाग्योदय तीर्थ सागर में 12 मई 2021 हुआ।

सागर- ब्र. किरण दीदी की माँ समाधिमति (कमलाबाई) 10 प्रतिमाधारी समाधिमरण दिनांक 7 जून 2021 को हुआ। आपने अपने मन से 1 निर्जल उपवास, 1 दिन जल ग्रहण किया ऐसा 16 दिन तक साधनारत रही।

चांदामेटा- ब्र. राजेश भैया चांदामेटा का समाधिमरण दिनांक 19 अप्रैल 2021 को हुआ।

आगरा- ब्र. अतुल भैया आगरा का समाधिमरण दिनांक 21 अप्रैल 2021 को हुआ।

सागर- महेन्द्र सोधिया महाराजपुर वाले सागर का समाधिमरण विदिशा में दिनांक 21 मई 2021 को हुआ।

सिलवानी- देवेन्द्र सिंघई सिलवानी का समाधिमरण 27 अप्रैल 2021 को हुआ।

खुरई- डॉ. नेमिचन्द्र जी जैन जो खुरई गुरुकुल में प्राचार्य रहें उनका समाधिमरण 23 जून 2021 को हुआ।

सम्मेदशिखर जी- जागृतमति माताजी (फूलबाई ललितपुर) 10 प्रतिमाधारी का समाधिमरण श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर जी में मुनि श्री प्रमाणसागर तथा आचार्य श्री विशुद्धसागर जी आदि कई महाराजों के ससंघ सान्निध्य में 20 जून 2021 को हुआ।

समाधिस्थ सभी साधकों के प्रति संस्कार सागर परिवार एवं श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक धार्मिक ट्रस्ट इंदौर श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

पंचकल्याणक संपन्न

गढ़ी रायसेन (म.प्र.)- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के शिष्य मुनि श्री समतासागर एलक श्री निश्चयसागर महाराज के सान्निध्य में 20 मार्च से 26 मार्च 2021 प्रतिष्ठाचार्य ब्र. विनय भैया बण्डा के प्रतिष्ठाचार्यत्व में पंचकल्याणक संपन्न हुआ।

नेमावर-आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में पंचकल्याणक महोत्सव दिनांक 15 जून से 21 जून 2021 को लगभग 1290 प्रतिमाओं का पंचकल्याणक संपन्न हुआ।

आगामी पंचकल्याणक

कुंभराज- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के शिष्य मुनि श्री प्रसादसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में दिनांक 02 जुलाई से 07 जुलाई 2021 तक पंचकल्याणक ब्र. प्रदीप भैया सुयष अशोक नगर के प्रतिष्ठाचार्यत्व में संपन्न होगा।

लिधौरा (टीकमगढ़)- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के शिष्य मुनि श्री निर्णय सागर जी, एलक श्री क्षीरसागर जी महाराज के सान्निध्य में 10 जुलाई से 15 जुलाई 2021 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठाचार्यत्व ब्र. अशोक भैया, ब्र. धीरज भैया के प्रतिष्ठाचार्यत्व में संपन्न होगा।

जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच-2021

3. विराट स्वरुप विद्यासागर

01. ब्रह्मचारी संगोष्ठी श्रवणबेलगोल कर्नाटक में कब हुई थी ?
02. ब्रह्मचारी संगोष्ठी श्रवणबेलगोल कर्नाटक में कितने साधकों के सान्निध्य में हुई थी ?
03. ब्रह्मचारी संगोष्ठी श्रवणबेलगोल कर्नाटक में लगभग कितने ब्रह्मचारी उपस्थित हुये थे ?
04. ब्रह्मचारी संगोष्ठी श्रवणबेलगोल कर्नाटक में भगवान बाहुबली का स्वर्ण की झारी से अभिषेक एवं शांतिधारा सभी ब्रह्मचारी भाईयों ने कितने तारीख को किया था ?
05. ब्रह्मचारी संगोष्ठी श्रवणबेलगोल कर्नाटक के मुख्य संयोजक कौन थे ?
06. केवल अंग्रेजी सीखने में जितना श्रम करना पड़ता है उतने श्रम में हिन्दुस्तान की सभी भाषायें सीखी जा सकती है, ये वाक्य किसने कहा था ?
07. ब्रह्मचारी संगोष्ठी श्रवणबेलगोल कर्नाटक में पंडित श्री रतनलाल जी इंदौर को कौन सी उपाधि से सम्मानित किया गया था ?
08. ब्रह्मचारी संगोष्ठी श्रवणबेलगोल कर्नाटक में स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक जी को कौन सी उपाधि से सम्मानित किया गया था ?
09. ब्रह्मचारी संगोष्ठी श्रवणबेलगोल कर्नाटक में हुकुमचंद जी सांवला इंदौर को कौन सी उपाधि से सम्मानित किया गया था ?
10. ब्रह्मचारी संगोष्ठी श्रवणबेलगोल कर्नाटक में कितने सत्रों में संगोष्ठी संचालित की गई ?
11. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज द्वारा मूकमाटी महाकाव्य का गुजराती अनुवाद किसने किया ?
12. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज द्वारा मूकमाटी महाकाव्य का कन्नड़ अनुवाद किसने किया ?
13. ब्रह्मचारी संगोष्ठी श्रवणबेलगोल कर्नाटक में आचार्य श्री भक्त नहीं शिष्य बनाते हैं, यह किसने अपने प्रवचन में कहा था ?
14. मूकमाटी महाकाव्य पर 350 विद्वानों ने समीक्षा की वह ग्रंथ किस नाम से प्रकाशित हुआ ?
15. मूकमाटी मीमांसा ग्रंथ का प्रकाशन कहाँ से हुआ ?
16. ब्रह्मचारी संगोष्ठी श्रवणबेलगोल कर्नाटक में किसी राजा, चक्रवर्ती के इतने स्तंभ नहीं बने जितने गुरुवर के संपूर्ण भारतवर्ष में बने, यह वाक्य किसने कहां था ?
17. महामस्तकाभिषेक और आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी का इस क्षेत्र से बड़ा सम्बंध है सन् 1967 के महामस्तकाभिषेक में आचार्य श्री देशभूषण जी के साथ बालक विद्याधर आये थे, यह वाक्य किसने कहा था ?
18. ब्रह्मचारी संगोष्ठी श्रवणबेलगोल कर्नाटक में मौन रहने वाले ऐसे कौन से ब्रह्मचारी थे जिन्होंने अपने वक्तव्य देना प्रारंभ करने पर सब श्रोता बिल्कुल शांत हो गये थे ?
19. ब्रह्मचारी संगोष्ठी श्रवणबेलगोल कर्नाटक में ब्रह्मचारी राजेश वर्धमान के वक्तव्य में समय हो रहा है ऐसा कहने पर संचालक ने कहा था कि अब आपका समय शुरु हो रहा है उस सत्र का संचालन कौन कर रहा था ?
20. ब्रह्मचारी संगोष्ठी श्रवणबेलगोल कर्नाटक में सभी सम्मेलनों से श्रेष्ठ सम्मेलन ब्र. संगोष्ठी के रूप में सम्पन्न हुआ, यह वाक्य किसने कहा था ?
21. ब्रह्मचारी संगोष्ठी श्रवणबेलगोल कर्नाटक में ब्रह्मचारी सम्मेलन में उपस्थित ब्रह्मचारीयों को देखकर सभी आश्चर्य चकित हैं ऐसा लग रहा है जैसे लोकान्तिक देवों की सभा हो, यह वाक्य किसने कहा था ?

22. ब्रह्मचारी संगोष्ठी श्रवणबेलगोल कर्नाटक में विद्याधर सदलगा ने यहां ब्रह्मचारी व्रत लिया तथा सात प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये थे, यह वाक्य किसने कहा ?
23. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित झारखंड हजारीबाग के मुनिराज का नाम क्या है ?
24. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने सर्वप्रथम आर्यिका दीक्षा किसे दी थी ?
25. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने सर्वप्रथम आर्यिका दीक्षा कहाँ और किस तारीख को दी थी ?
26. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित आर्यिका माताजी कितनी है ? 172
27. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित आर्यिका माताजी में म.प्र. के कितने जिलों से कितनी आर्यिका है ?
28. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित सागर जिले की कितनी आर्यिका माताजी है ?
29. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित जबलपुर जिले की कितनी आर्यिका माताजी है ?
30. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित दमोह जिले की कितनी आर्यिका माताजी है ?
31. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित अशोकनगर जिले की कितनी आर्यिका माताजी है ?
32. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित गुना जिले की कितनी आर्यिका माताजी है ?
33. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित विदिशा जिले की कितनी आर्यिका माताजी है ?
34. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित नरसिंहपुर जिले की कितनी आर्यिका माताजी है ?
35. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित मंडला जिले की कितनी आर्यिका माताजी है ?
36. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित सतना जिले की कितनी आर्यिका माताजी है ?
37. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित टीकमगढ़ जिले की कितनी आर्यिका माताजी है ?
38. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित रायसेन जिले की आर्यिका माताजी का नाम क्या है ?
39. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित झाबुआ जिले की आर्यिका माताजी का नाम क्या है ?
40. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित कटनी जिले की आर्यिका माताजी का नाम क्या है ?
41. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित छतरपुर जिले की आर्यिका माताजी का नाम क्या है ?
42. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित शिवपुरी जिले की आर्यिका माताजी का नाम क्या है ?
43. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित अनुपपुर जिले की आर्यिका माताजी का नाम क्या है ?
44. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित छिंदवाड़ा जिले की आर्यिका माताजी का नाम क्या है ?
45. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित महाराष्ट्र की कितनी आर्यिका माताजी हैं ?
46. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित दिल्ली की कितनी आर्यिका माताजी हैं ?
47. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित उत्तरप्रदेश की कितनी आर्यिका माताजी हैं ?
48. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित राजस्थान की कितनी आर्यिका माताजी हैं ?
49. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित छत्तीसगढ़ की कितनी आर्यिका माताजी हैं ?
50. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित तमिलनाडु की कितनी आर्यिका माताजी हैं ?
51. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी से दीक्षित कर्नाटक की कितनी आर्यिका माताजी हैं ?
52. भरतचक्रवर्ती ने कैलाश पर्वत पर कितने जिनालयों का निर्माण कराया था ?
53. मिट्टी के मंदिर बनाने का पुण्य दस गुना हैं यह किसने कहा था ?
54. मिट्टी की अपेक्षा चूने के मंदिर बनाने का पुण्य कितने गुना है ?
55. चूने के मंदिर बनाने की उपेक्षा ईट के मंदिर बनाने का पुण्य कितने गुना है ?
56. ईट के मंदिर बनाने की उपेक्षा पत्थर के मंदिर बनाने का पुण्य कितने गुना है ?
57. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज केशलोंच कितने माह में करते है ?

58. आचार्य श्री विद्यासागर जी ने नमक का त्याग कब किया था ?
59. आचार्य श्री विद्यासागर जी ने शक्कर का त्याग कब किया था ?
60. आचार्य श्री विद्यासागर जी ने वनस्पतियों का त्याग कब किया था ? 1
61. आहारचर्या के समय कितने प्रकार की वृत्तियाँ प्रमुख रूप से बताई गई है ?
62. प्राचीन मंदिर जीर्णोद्धार करने से कितने नये मंदिर बनाने का पुण्य प्राप्त होता है ?
63. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जी का जन्म कब हुआ था ?
64. शरद पूर्णिमा को आचार्य श्री विद्यासागर जी का जन्म हुआ उसी दिन उन्ही के भाई का जन्म हुआ उनका नाम क्या है ?
65. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी का आहार में जीवन पर्यन्त एक चौके का नियम है उसे क्या कहते हैं ?
66. बच्चे कहते हैं हिन्दी हमारी माता है तो अंग्रेजी हमारी क्या है ?
67. संस्कृत हमारी माँ है तो हिन्दी अंग्रेजी हमारी क्या है ?
68. बालक विद्याधर का जन्म हुआ था तब वजन कितना था ?
69. बचपन में बालक विद्याधर ने एक के ऊपर एक कितने कंचे जमायें थे ?
70. बालक विद्याधर ने कौन सी कक्षा पढ़ने पर भक्तामर स्तोत्र कंठस्थ कर लिया था ?
71. बालक विद्याधर कुशल चित्रकार कितने वर्ष की उम्र में बन गये थे ?
72. बालक विद्याधर ने घुड़सवारी करना कितने वर्ष की उम्र में करना सीख लिया था ?
73. बालक विद्याधर ने शतरंत के श्रेष्ठ खिलाड़ी को भी हरा दिया था उनका नाम क्या था ?
74. बालक विद्याधर का मुंजीबंधन में जनेऊ कौन सी धातु का था ?
75. बालक विद्याधर के अभिन्न सखा का नाम क्या था ?
76. बालक विद्याधर के भाई अनंतनाथ को तीन वर्ष की उम्र में कौन सा रोग हो गया था ?
77. अन्ना जी ने पूछा आगे क्यों नहीं पढ़ना हैं तो बालक विद्याधर क्या बोले थे ?
78. बालक विद्याधर गुफा के पास गिल्ली डंडा खेल रहे थे उस गुफा में कौन से महाराज विराजमान थे ?
79. बालक विद्याधर ने कितने दिनों में तत्वार्थ सूत्र याद कर लिया था ?
80. बालक विद्याधर ने सर्वप्रथम सदलगा में किसका केशलोंच किया था ?
81. बालक विद्याधर ने 1965 में कौन से महाराज का केशलोंच किया था ?
82. बालक विद्याधर से गुरु ज्ञानसागर जी ने कहां ऐसे विद्याधर आते हैं विद्या ग्रहण कर भाग जाते है, तब बालक विद्याधर ने किसका त्याग किया था ?
83. चतुर्थ काल के मुनि आचार्य श्री विद्यासागर जी नामक लेख के रचयिता कौन है ?
84. नये नक्षत्र का उदय नामक लेख के रचयिता कौन है ?
85. आचार्य विद्यासागर जी चर्या और एकांत में केशलोंच नामक लेख के रचयिता कौन है ?
86. साधना के सुमेरु आचार्य श्री विद्यासागर लेख के रचयिता कौन है ?
87. वर्तमान भारत के श्रेष्ठ साहित्यकार आचार्य विद्यासागर जी नामक लेख के रचयिता कौन है ?
88. आचार्य विद्यासागर जी एवं मंदिर निर्माण नामक लेख के रचयिता कौन है ?
89. आचार्य श्री के प्रवचनों में महात्मा गांधी नामक लेख के रचयिता कौन है ?
90. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का उत्तम आचार्यत्व लेख के रचयिता कौन है ?
91. सर्वाधिक दीक्षा प्रदाता आचार्य श्री विद्यासागर जी नामक लेख किसने लिखा ?
92. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज अभी तक कुल कितने साधकों को दीक्षा दे चुके है ?

93. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज कुल कितनी मुनि दीक्षायें दी ?
94. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज कुल कितनी आर्यिकायें दीक्षायें दी ?
95. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज कुल कितनी एलक दीक्षायें दी ?
96. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज कुल कितनी क्षुल्लक दीक्षायें दी ?
97. आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज कुल कितनी क्षुल्लिकायें दीक्षायें दी ?
98. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने सर्वप्रथम मुनि दीक्षा कब और कहा दी थी ?
99. ऐसे मुनिराज का नाम बताईये जिन्होंने दीक्षा के दिन ही पड़गाहन करके घर पर आहार दिये आचार्य श्री को छोड़ने आये उसी दिन दीक्षा हो गई ?
100. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने सबसे पहले एलक दीक्षा कब कहां और किसे दी थी ?

नोट : सर्वाधिक दीक्षा प्रदाता आचार्य श्री विद्यासागर जी लेख के बाद ललितपुर में 10 मुनि दीक्षायें एवं नेमावर में 1 एलक दीक्षा तथा 9 क्षुल्लक दीक्षायें दी जा चुकी हैं। अत: उत्तर देते समय ध्यान रखें।

4. आदिपुराण भाग-1

01. कौन से सारथी का प्रेरणा से प्राणी फिर मनुष्य योनि में जन्म लेता है ?
02. हे प्रभो ! आप कौन से बंधन को तोड़कर मोक्ष जायेंगे ?
03. हे भगवन् कौन सी धुल को उडाकर मुक्ति के साथ जायेंगे ?
04. वे दोनों कौन थे जो भक्तिवश होकर भगवान के चरण कमलों की सेवा करने आये ?

किसने किससे कहाँ

05. हे तन्वि ! यह तुम्हारी पुत्रि पूर्ण यौवन अवस्था को प्राप्त हो गयी है ?
06. हे कन्ये ! तू भाग्य से बढ़ रही है, आज तेरा मनोरथ पूर्ण हुआ ?
07. हे भद्रे इस चित्र में मेरे पूर्व भव की ये चेष्टायें किसने लिखी ?
08. आज आप पुत्र और स्त्री सहित मेरे घर पधारे है इसलिये मेरा मन अन्तिम अवधि को प्राप्त हो रहा है ?
09. हे प्रभो ! आपके दर्शन से मेरे हृदय में मित्रता का भाव उमड़ रहा?
10. हे भव्य तेरा स्वामी भव्य है ?
11. हे आर्य ! मैं स्वयंबुद्ध नाम के आपके महावल नरेश की पर्याय मैं मंत्री था ?
12. कोई जीव श्रावक व्रत ग्रहण कर सन्यास धारण कर रहा है इसलिये तू जाकर उसकी सेवा कर ?
13. तू बड़ा भारी चक्रवर्ती राजा हो ऐसा आशीर्वाद किसने दिया ?
14. हे भद्र ! अब तू अनेक प्रकार के दुःख देने वाले इन विषयों का संगम छोड़ ?
15. मेरा पति ललिताङ्ग देव कहाँ उत्पन्न हुआ यही मुझे संदेह है ?
16. तेरे प्राणनाथ से तेरा समागम बहुत शीघ्र होगा ?
17. समवशरण की रचना किसके उदय से होती है ?
18. समवशरण में 8 भूमियों के नाम बताईये ?
19. समवशरण में भामंडल कहाँ रहता है ?
20. समवशरण में अशोक वृक्ष किसके द्वारा रचित होता है ?
21. समवशरण में सिंहासन कहाँ विराजमान रहते है ?
22. सिंहासन किसे कहते हें ?
23. अष्ट मंगल द्रव्य कहाँ स्थापित रहते है ?

24. मुझे आगे के जनम में इस विद्याधर के समान बड़े विद्याधर योग्य भोगोपभोग की सामग्री मिले, यह वाक्य किसने कहाँ ?
25. कुंटुम्बरूपी कमोदिनियों को प्रसन्न करता हुआ वृद्धि को कौन प्राप्त हो रहा था ?
26. मनोहर नाम के उद्यान में किन तीर्थंकर को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था ?
27. तू मेरी माता के समान है तथा चिरकाल से परिचित यह वाक्य किसने कहाँ ?
28. श्री सीमंधर तीर्थंकर के चरण कमलों के समीप सोलहकारण भावनाओं का चिंतवन किसने किया था ?
29. विदेहक्षेत्र में मंगलवर्ती देश के राजा अतितजंय से कौन से तीर्थंकर पुत्र उत्पन्न हुये ?
30. बहुत आरम्भ बहुत परिग्रह के द्वारा किसने नरक आयु का बंध किया था ?
31. दीक्षारूपी स्त्री के साथ समागम करने का किसने कौतुलह किसका बढ़ रहा था ?
32. हे जगन्नाथ ! आप किसी काम की सिद्धि को जा रहे है सो जाइये, आप का मार्ग कल्याणमय हो यह किसने कहाँ था ?
33. मानस्तंभ तीर्थंकर की ऊंचाई से कितने गुना ऊंचा होता है
34. समवशरण उपवन की बावडी में मुख देखने से कितने भव झलकती है ?
35. समवशरण में कितनी भूमियां होती है ?
36. समवशरण में कितनी नाटय शालायें होती है ?
37. प्रत्येक नाटय शालायें कितनी कितनी रंगभूमिया होती है ?
38. मानस्तंभ के चबूतरे पर कितने गोल पीठ होती है ?
39. प्रथम पीठ पर जाने के लिये कितनी सीढी होती है ?
40. मानस्तंभ के 2/3 पीठ पर कितनी सीढी होती है ?
41. समवशरण की कौन सी भूमि तक भव्य/अभव्य सभी प्रकार के जीव जाते हे ?
42. श्री मंडप भूमि में कितने कोठे होते है ?
43. भगवान की भक्ति करते देव कितने चँवर ढोरते ?
44. समवशरण की रचना पृथ्वी तल से कितने ऊपर की जाती है ?
45. चारों दीशाओं में कितनी सीढियाँ लगाई जाती है ?
46. आदि प्रभु के कितने पुत्र पुत्रियां थी ?
47. महामांडलिक राजा के आधीन कितने हजार राजा होते है ?
48. एक राजधानी में कितने गांव होते है ?
49. एक खर्वट में कितने गांव रहते है ?
50. दान की अनुमोदना से किन जीवों को उत्तम भोगभूमि का बंध हुआ ?
51. भाई के मिलन की उत्कंठा से बैठी हुई अपनी छोटी बहन को किसने देखा ?
52. भोगों की इच्छा करते हुये किसने प्राण छोड़े थे ?
53. तीर्थंकरों के समोशरण में स्थित जिन प्रतिमायें कहाँ से आती है ?
54. तीर्थंकर भगवान के गुणानुवाद के गीतों के साथ कौन सी देवांगनायें नृत्य करती है ?
55. समवशरण की 8वीं भूमि का क्या नाम है ?
56. 12 सभा कौन सी भूमि में होती है ?
57. भगवान वज्रसेन के साथ साथ कितने राजाओं ने दीक्षा ली ?
58. अहमिन्द्र कितने हजार वर्ष व्यतीत होने पर दिव्य मानसिक आहार ग्रहण करते है ?

59. अहमिन्द्र कितने पक्ष-महिना-दिन व्यतीत होने पर श्वांस लेता था ?
60. महाबल ने कितने स्वप्न देख थे ?
61. ललितांग देव के कितनी देवियाँ थी ?
62. धैर्यकारण कर ललितांगदेव ने कितने दिन जिनमंदिरों की पूजा की ?
63. वज्रदन्त चक्र कितने प्रकार की सेना साथ लेकर जितने के लिये प्रस्थान हुये ?
64. केवलज्ञान होते ही अर्हत भगवान कितने ऊपर उठ जाते है ?

ये वाक्य कौन से पर्व की कौन से श्लोक में आया है

65. ये व्रत स्वर्गेरूपी राजभवन पर चढ़ने के लिये सीढ़ी के समान है ?
66. ये पुण्यवान जीव तुम्हारे साथ ही देव और मनुष्यों के उत्तम सुख और विभूतियों का अनुभव करते रहेगें ?
67. जीवों को अपना हित करने में पूर्व भव के लगे संस्कार ही प्रेरणा करते है ?
68. बुद्धिमान पुरुषों को अरहंत देव के कहे हुये शास्त्रों का निरन्तर अभ्यास करना चाहिये ?
69. हे नाथ ! स्नान करने की सामग्री तैयार है और फिर पुण्य कर्म का बंध करने वाली श्री जिनेन्द्र देव की पूजा कीजिये ?
70. पुण्यकर्म के उदय से स्वर्गे में निरंतर प्रीति होती है, उसी प्रकार पुण्यकर्म के नाश होते ही उसी स्वर्गे में अप्रिति उत्पन्न हो जाती है ?
71. प्रायः संसारी जीव पूर्वभव के संस्कार स्मरण कर मूर्च्छित होती है ?
72. कर्मो का उदय अनुकुल होता है, तो वह प्राणियों को जन्मातंर से लाकर इस दुसरे भव में बहुत शीघ्र संयोग करा देते है ?
73. हे प्रभो ! आज मैं कर्मरूपी शत्रु को नाश करने की इच्छा से ही आपकी आराधना करता हुँ ?
74. वज्रजंघ के कितने पुत्रों ने जिनदीक्षा लो ?
75. राजा वज्रदन्त को वैराग्य कारण क्या ?
76. राजा वज्रदन्त के साथ कितनी रानीयों ने दीक्षा ली ?
77. वज्रजंघ और श्रीमति इन दोनों ने पात्र दान से किस क्षेत्र की आयु का बन्ध किया ?
78. युगल चारण मुनिराज के नाम क्या है ?
79. वज्रजंघ का जीव जन्मान्तर सम्बंधी प्रेम से आंखे फाड-फाडकर किसे देख रहा था ?
80. आयु के अन्त में वज्रजंध आर्य कौन से स्वर्गे में किस नाम का देव हुआ ?
81. श्रीमति का जीव कहाँ उत्पन्न ?
82. श्रीधर देव का जीव स्वर्गे से चयकर कहाँ उत्पन्न हुआ ?
83. स्वयंप्रभ नामक देव स्वर्गे से चयकर कहाँ उत्पन्न हुआ? केशव नाम का पुत्र
84. श्रीमति का जीव स्वर्गे से चयकर कहाँ उत्पन्न हुआ ? राजा सुविधि रानी मनोरमा
85. एक देश वा एक वंश में जीव किस कारण इकट्ठे होते है ? पहले भव के संस्कारों से ही
86. श्री वज्रसेन तीर्थंकर के समीप किसने दीक्षा ली ?
87. प्रायोयगम का अर्थ क्या है ?
88. सर्वार्थसिद्धि में कौन उत्पन्न होते है ?
89. अहमिद्र कौन से चार भेष धारण करता ?
90. अन्त तक कौन से मंत्री ने मंत्रीपने का कार्य किया ?
91. ललिताङ्ग देव नामक उत्तम देव कौन साभव्य जीव बना ?

92. कौन से देवों के कहने से ललिताङ्ग देव ने धैर्य का अवलम्बन लिया ?
93. राजावज्रबाहू किसके पिता थे ?
94. ललिताङ्ग देव की कितने हजार देवियाँ थी ?
95. ललिताङ्ग देव की महादेवियाँ में प्रमुख देवी का नाम क्या था ?
96. स्वयंप्रभा स्वर्गे से चयकर किस नगरी के राजा की पुत्रि हुई ?
97. राजावज्रदन्त के सामने कौन से एक साथ दो शुभ कार्य उपस्थित हुये थे ?
98. कौन भ्रातप्रेम को विस्तृत करते हुये आंधीपुर तक किस राजा को लेकर आये थे ?
99. अपने बहनोई, बहन और भानजे को देखकर कौन परम प्रीति को प्राप्त हुये ?
100. महाबल विद्याधर ने कितने दिन की सल्लेखन धारण की थी ?

5. लघु जिन चक्र

01. वह कौन सा स्तोत्र है जिस पर लघु जिन चक्र विधान लिखा ?
02. वे कौन से आचार्य हैं जिन्होंने पात्र केसरी स्तोत्र लिखा हो ?
03. पात्रकेसरी स्तोत्र में कुल कितने छन्द हैं ?
04. पात्रकेसरी स्तोत्र कौन से छन्द में लिखा गया है ?
05. पात्रकेसरी स्तोत्र का पहला शब्द कौन सा है ?
06. पात्रकेसरी स्तोत्र का अंतिम शब्द कौन सा हे ?
07. जिनेन्द्र देव ने कौन सी चार चीजों को जीता ?
08. तीर्थंकरों के अभिसिंचन के जल से क्या बनता है ?
09. तीर्थंकर कितने इन्द्रों से पूज्य होते है ?
10. शिवपथ के नेता कौन होते है ?
11. वीतराग सर्वज्ञ हितंकर कौन होते हें ?
12. विधान में जिनेन्द्र देव को किस मंदिर में पधराया है ?
13. तीर्थंकर के जन्मकाल से कितने ज्ञान होते है ?
14. सम्पूर्ण परिग्रह का त्यागी कौन होता है ?
15. जन्म जरा, और मृत्यु को कौन जीतता है ?
16. एकान्त मद क्या होता है ?
17. सर्वथा नित्य एकान्तवाद में कौन सा दोष आता है ?
18. ध्यानाग्नि से अरिहंत ने किसे जलाया ?
19. मूर्ख लोग आप्त को क्या मानते हैं ?
20. माता के गर्भ में भी भगवान कैसे होते है ?
21. पर से सुख की याचना कौन करते है ?
22. पिशाच से घिरे हुये कौन रहते हैं ?
23. इस मशान में कौन नाचते हैं ?
24. अट्टाहास जो करते हैं वे कौन होते हैं ?
25. जो प्रेम आलंगन करते हैं वे कोन होते है ?
26. जो दया धर्म का उपहास करते हैं वे क्या नहीं हो सकते हैं ?
27. जो कमण्डलु रखते हैं वे कौन से देव नहीं होते है ?

28. सर्वज्ञ देव किस वस्तु को जानते हैं ?
29. जिसे आभूषण में आकर्षण होता है उनके शरीर में क्या नहीं होती है ?
30. भय और घृणा के कारण लोग क्या रखते है ?
31. हृदय की कलुषता से चित्र कैसा होता है ?
32. प्रसन्न होने वाली आत्मा क्या होती है ?
33. कुपित होने वाली आत्मा के नियम से क्या होता है ?
34. सबको मोहित करने के प्रयास से क्या होता है ?
35. अशुभभाव प्राणी के लिये क्या होता है ?
36. अप्रमादी के द्वारा केशलोंच करने से क्या नहीं होता ?
37. जिनवाणी का अवलम्बन लेने से क्या होता है ?
38. स्यादवाद के द्वारा क्या कहा जाता है ?
39. परिग्रह रखने वालों के क्या अवश्य होता है ?
40. कलुष आत्माओं को कौन सा ध्यान नहीं हो सकता ?
41. कठोर और हिंसक वचन कौन से वचन होते है ?
42. एक पात्र में भोजन मिलाने से क्या होता है ?
43. दिगम्बर पाणि पात्र में भोजन करने वाले को क्या नहीं होता हे ?
44. खड़े होकर आहार लेने वाले साधु के क्या नहीं आता है ?
45. अपने गुणों और खतत्व के नाश होने को मोक्ष कौन मानता है ?
46. दीपक के बुझने के समान निर्वाण कौन मानता है ?
47. अड़तालीस नम्बर की ऋद्धि मंत्र में किसको नमस्कार किया गया है ?
48. प्रथमऋद्धि मंत्र में किसे नमस्कार किया गया है ?
49. मनोबली ऋषि को कौन से ऋद्धि मंत्र में नमस्कार किया गया है ?
50. वर्धमान को कौन से ऋद्धि मंत्र में नमस्कार किया गया है ?

5. श्रीपुर पार्श्वनाथ

51. श्रीपुर का अर्थ क्या है ?
52. श्रीपुर पार्श्वनाथ स्तोत्र के रचयिता कौन से आचार्य है ?
53. शिरपुर तीर्थ कौन से जिले में है ?
54. शिरपुर तीर्थ किस पार्श्वनाथ भगवान के नाम से प्रसिद्ध है ?
55. श्रीपुर पार्श्वनाथ स्तोत्र किस स्तोत्र की शैली में लिया गया है ?
56. श्रीपुर पार्श्वनाथ स्तोत्र में कुल कितने छन्द है ?
57. श्रीपुर पार्श्वनाथ स्तोत्र में श्रृग्धरा छन्द कितने है ?
58. श्रीपुर पार्श्वनाथ स्तोत्र में सार्दूल त्रिक्रिड़ित छन्द कितने है ?
59. श्रीपुर पार्श्वनाथ स्तोत्र में शिखरणी छन्द कितने है ?
60. श्रीपुर पार्श्वनाथ स्तोत्र में मन्दाक्रान्ता छन्द कितने है ?
61. श्रीपुर अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ के तीर्थ को किस पन्थ के लोगों ने विवादास्पाद बनाया ?
62. आचार्य विद्यानन्द जी किस शताब्दी के आचार्य है ?
63. पार्श्वनाथ स्तोत्र के सिवाय आचार्य विद्यानंद जी ने कितने ग्रंथ लिखे ?

64. सत्यशासन परीक्षा के रचयिता कौन है ?
65. किस ब्रह्मचारी की प्रेरणा से श्रीपुर पार्श्वनाथ स्तोत्र विधान लिखा गया ?
66. आचार्य विद्यानंदि जी ने श्रीपुर पार्श्वनाथ स्तोत्र में किसका स्वरूप स्पष्ट किया है ?
67. श्रीपुर पार्श्वनाथ स्तोत्र में किनके उपदेशों की विशेषता बताई है ?
68. श्रीपुर पार्श्वनथ स्तोत्र में पार्श्वनाथ भगवान की कौन सी तीन विशेषतायें सिद्ध की है ?
69. पार्श्वनाथ भगवान की दो कौन सी चीजें शरण योग्य हैं ?
70. श्रीपुर पार्श्वनाथ स्तोत्र में ईश्वर को क्या नहीं माना ?
71. श्रीपर पार्श्वनाथ स्तोत्र का प्रारंभ कौन से वर्ण से हुआ ?
72. भगवान पार्श्वनाथ के चरणों की शरण क्या प्राप्त कराती है ?
73. भगवान पार्श्वनाथ के वचनों का प्रभाव किसके समान होता है ?
74. वेदों में और कपिल आदि में किस प्रकार विरोध है ?
75. किसके अभाव में कपिलादि के आप्त पना सिद्ध नहीं होता है ?
76. वो तीन पदार्थ कौन से हैं जो किसी न किसी ज्ञान के विषय अवश्य रहते हैं ?
77. सूक्ष्म पदार्थ कौन सा है ?
78. दूरस्थ पदार्थ का उदाहरण कौन सा पर्वत हो सकता है ?
79. अंतरित पदार्थ किसे कहते हैं ?
80. वह कौन सा प्रमाण है जो अनेकान्तवाद की सिद्धि प्रसारित करता है ?
81. सर्वज्ञ की सिद्धि किस प्रमाण से होती है ?
82. संपूर्ण पदार्थ किस रूप में है ?
83. प्रमाण का विषय क्या है ?
84. द्रव्य में तीन चीजें कौन कौन सी पाई जाती है ?
85. तीनों काल की कितनी पर्यायें होती है ?
86. गुण और पर्याय किसमें व्याप्त होते हैं ?
87. पदार्थ के तीन रूप कौन-कौन से है ?
88. जिस समय उत्पाद होता है उसी समय क्या होता है ?
89. दूध में गोरस की कौन सी अवस्था नहीं होती है ?
90. स्यादवाद के कितने भंग होते है ?
91. स्यादवाद पद्धति के द्वितीय भंग का नाम क्या है ?
92. सम्यक तर्कों के बल पर कथन करने वाला कौन होता है ?
93. प्रश्न के अनुसार स्यादवाद में कितने भंग होते है ?
94. सम्यक न्याय मत कौन प्रस्तुत करता है ?
95. समस्त कर्मों और आवरणों के नष्ट होने से कौन सा ज्ञान प्रगट होता है ?
96. द्वादशांग मय कौन सा ज्ञान होता है ?
97. पृथ्वी आदि चतुष्टय से जीव की उत्पत्ति कौन मानता है ?
98. वह कौन सा मत है जो अतीन्द्रिय ज्ञान नहीं मानता है ?
99. वेद में किसका स्मरण नहीं किया गया हैं ?
100. श्रीपुर पार्श्वनाथ स्तोत्र के तीसवें काव्य का अंतिम शब्द कौन सा है ?

इन प्रश्नों के उत्तर आप प्लेन कागज पर उत्तर लिखकर दिनांक हर माह 29 तारीख तक डाक द्वारा अथवा व्हाट्सअप नम्बर 6232967108 पर भेज सकते है। यह प्रश्न प्रत्येक माह 100-100, 3. मई, 4. जून, 5. जुलाई एक साथ दिये जा रहे हैं जिसका समापन दिसम्बर माह में किया जायेगा।

वर्ग पहेली 261

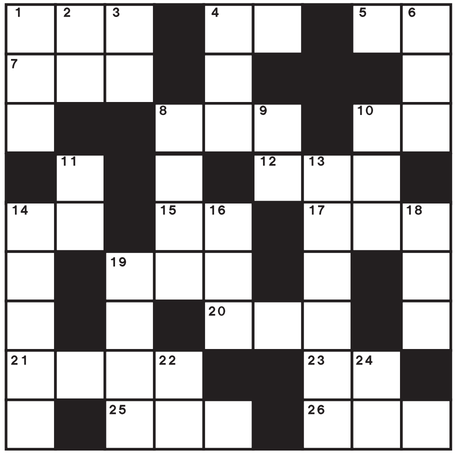

बाये से दाये

1. मैना सुंदरी के पति -3
4. शव/मृत देह -2
5. पति की माँ -या पत्नी की माँ -2
7. गिरा हुआ -3
8. हवा/वायु -3
10. जोड़ अथवा समाधि मन वचन काय की क्रिया -2
12. खनन क्रिया या खोदने के बाद जमीन से निकलने वाला पदार्थ -3
14. रास्ता/राह/मार्ग -2
15. एक शिकार करने वाला पक्षी -2
17. सीता का एक नाम/ जनक की पुत्री -3
19. तर्क / बहस -3
20. चांदी/रूकमी -3
21. मदन/मन्मथ/मनोज -4
23. जल/नीर -2
25. भगिनी/सिस्टर -3
26. स्वभ्र/पाताल/ अधोलोक की भूमि -3

ऊपर से नीचे

1. मोक्ष के पति अथवा केवलज्ञान रूपी लक्ष्मी के पति अरिहंत देव अथवा विष्णु भगवान -3
2. चिट्ठी/पत्री -2
3. लत/व्यसन -2
4. हल्का छोटा या लघु का भाव -3
6. योग सहित/तेरहवां गुणस्थान -3
8. नाव खेने का साधन -4
9. नाखून -2
10. दो कोस का नाम -3
11. यान वाहन/ प्राचीनकाल में युद्ध में प्रयुक्त वाहन -2
13. समयसार कलश का आचार्य विद्यासागर जी द्वारा किये गये अनुवाद का नाम -6
14. आचार्य कुन्दकुन्द देव द्वारा रचित अस्तिकाय का वर्णन करने वाला ग्रंथ -5
16. विष/हलाहल -3
18. मूल्य -3
22. अन्य पुरुष का सर्वनाम-संस्कृत में सहा का अर्थ -2
24. पानी/जल -2

वर्ग पहेली 260 का हल

1 का	2 तं	त्र	3 रू	4 प	मा	5 ला		6 स
7 मा	त्र		8 मा	र		9 भ	10 र	म
नी		11 क	ल	म			12 ज	य
13 य	14 त	न			15 ज	16 स		सा
	17 र	क	18 म		19 रा	त		र
20 ब	क		21 जा	22 ल		23 त	24 बा	
25 र	स	26 ना		27 त	म		28 न	29 भ
ग		30 दा	न		31 ग	32 ज	रा	ज
33 द	म	न		34 स	र	ल		न

....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

....

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

मैं बैठा बैठा सोच रहा

नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

पंचकल्याणक विधिविधान एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रमों हेतु सम्पर्क करें

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच-इसे संभालकर रखें दिसम्बर माह में एक साथ चिपकाकर भेजना रहेंगे

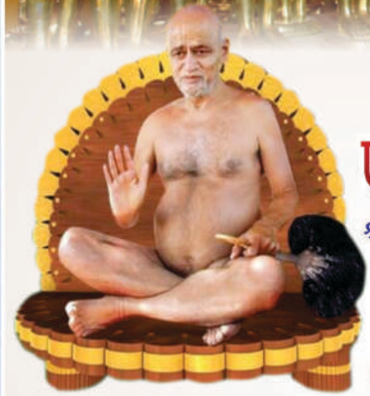

पंचकल्याणक एवं दीक्षा महोत्सव

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र नेमावर, देवास

दिनांक : 15 जून से 21 जून 2021

एलक दीक्षा 07 अप्रैल 2021

क्षुल्लक दीक्षा दिनांक: 09 जून 2021

एलक श्री उपशमसागरजी महाराज	क्षुल्लक श्री स्वाध्यायसागरजी महाराज	क्षुल्लक श्री प्रशांतसागरजी महाराज	क्षुल्लक श्री मौनसागरजी महाराज	क्षुल्लक श्री चिंतनसागरजी महाराज

एलक श्री अगम्यसागरजी महाराज	क्षुल्लक श्री वैराग्यसागरजी महाराज	क्षुल्लक श्री अटलसागरजी महाराज	क्षुल्लक श्री निकटसागरजी महाराज	क्षुल्लक श्री परीतसागरजी महाराज

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक 30/06/2021, पोस्टिंग दिनांक : 03/07/2021